पढ़ें और सीखें योजना

वास्को द गामा

भारत के लिए समुद्री मार्ग
ढूँढ़नेवाला पहला यूरोपीय

राजेन्द्र सिंह वत्स

विभागीय सहयोग
हीरालाल बाछोतिया

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

जनवरी 1993 : माघ 1914

P.D. 15T-SD

प्रकाशन सहयोग

सी. एन. राव **अध्यक्ष**, प्रकाशन विभाग

प्रभाकर द्विवेदी	**मुख्य संपादक**	यू. प्रभाकर राव	**मुख्य उत्पादन अधिकारी**
शर्मा दत्त	**सहायक संपादक**	डी. साई प्रसाद	**उत्पादन अधिकारी**
		विकास मेश्राम	**सहायक उत्पादन अधिकारी**
		राजेंद्र चौहान	**उत्पादन सहायक**

आवरण : विश्वजित हाल्दार

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	चितलापक्कम, क्रोमपेट	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	मद्रास 600064	अहमदाबाद 380014	24 परगना 743179

मूल्य : रु. 11.50

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन कम्पोजर्स, 92-बी, गली नं. 4, कृष्णा नगर, सफ्दरजंग इन्कलेव, नई दिल्ली 110029 द्वारा लेजर टाइपसैट होकर सरस्वती आफॅसेट प्रिंटर्स, ए-5, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ II, नई दिल्ली 110028 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अच्छे शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रमों और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की दिशा में हमारी परिषद् पिछले पच्चीस वर्षों से कार्य कर रही है। हमारे कार्य का प्रभाव भारत के सभी राज्यों और संघशासित प्रदेशों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है और इस पर परिषद् के कार्यकर्त्ता संतोष का अनुभव कर सकते हैं।

किंतु हमने देखा है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण अवश्य ही हमारी दूषित परीक्षा-प्रणाली है जिसमें पाठ्यपुस्तकों में दिए गए ज्ञान की ही परीक्षा ली जाती है। इस कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। लेकिन अतिरिक्त-पठन में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयुवर्ग के बच्चों के लिए कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध भी नहीं हैं। यद्यपि पिछले वर्षों में इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ काम प्रारंभ हुआ है पर वह बहुत ही नाकाफ़ी है।

इस दृष्टि से परिषद् ने बच्चों की पुस्तकों के रूप में लेखन की दिशा में एक महत्वाकांक्षी योजना प्रारंभ की है। इसके अंतर्गत, 'पढ़ें और सीखें' शीर्षक से एक पुस्तकमाला तैयार की जा रही है जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के

बच्चों के लिए सरल भाषा और रोचक शैली में निम्नलिखित विषयों पर बड़ी संख्या में पुस्तकें तैयार की जाएँगी।

(क) शिशुओं के लिए पुस्तकें
(ख) कथा-साहित्य
(ग) जीवनियाँ
(घ) देश-विदेश परिचय
(ङ) सांस्कृतिक विषय
(च) वैज्ञानिक विषय
(छ) सामाजिक विज्ञान के विषय।

इन पुस्तकों के निर्माण में हम प्रसिद्ध लेखकों, अनुभवी अध्यापकों और योग्य कलाकारों का सहयोग ले रहे हैं। प्रत्येक पुस्तक के प्रारूप पर भाषा, शैली और विषय-विवेचन की दृष्टि से सामूहिक विचार करके उसे अंतिम रूप दिया जाता है।

परिषद् इस माला की पुस्तकों को लागत मूल्य पर ही प्रकाशित कर रही है ताकि ये देश के हर कोने में पहुँच सकें। भविष्य में इन पुस्तकों को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराने की भी योज़ना है।

हम आशा करते हैं कि शिक्षाक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के क्षेत्र में किए गए कार्य की भाँति ही परिषद् की इस योजना का भी व्यापक स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक **वास्को द गामा** के लेखन के लिए डा. राजेन्द्र सिंह वत्स ने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया जिसके लिए हम उनके अत्यंत आभारी हैं। जिन-जिन विद्वानों, अध्यापकों और कलाकारों से इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में हमें सहयोग मिला है उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

हिंदी में 'पढ़ें और सीखें' पुस्तकमाला की यह योजना प्रोफेसर अर्जुन देव के मार्ग-दर्शन में चल रही है। उनके सहयोगियों में श्रीमती संयुक्ता

तूदरा, डा. रामजन्म शर्मा, डा. सुरेश पांडेय, डा. हीरालाल बाछोतिया और डा. अनिरुद्ध राय सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। विज्ञान की पुस्तकों के लेखन में हमारे विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के डा. राम दुलार शुक्ल सहयोग दे रहे हैं। मैं अपने सभी सहयोगियों को हार्दिक धन्यवाद और बधाई देता हूँ।

इस माला की पुस्तकों पर बच्चों, अध्यापकों और बच्चों के माता-पिता की प्रतिक्रिया का हम स्वागत करेंगे ताकि इन पुस्तकों को और भी उपयोगी बनाने में हमें सहयोग मिल सके।

डा. के. गोपालन

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

लेखक की ओर से

आप जानते हैं कि भारतीय रेल के एक स्टेशन का नाम वास्को द गामा है। यह स्टेशन गोआ में स्थित है। इस स्टेशन का नाम वास्को द गामा क्यों पड़ा ? वास्को द गामा भारतीय नाम तो नहीं लगता। तो फिर वह कौन था ? कहाँ का रहनेवाला था ? वह भारत क्यों आया ? उसने ऐसा क्या किया जिससे उसका नाम इतना अधिक प्रसिद्ध हो गया ? मेरी आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक जिज्ञासु पाठकों को इस तरह के कठिन प्रश्नों के उत्तर ढूँढने में सहायक होगी।

प्राचीन काल में भारत की संस्कृति और समृद्धि संसार भर में प्रसिद्ध थी। विदेशी भारत को सोने की चिड़िया मानते थे। यहाँ के इत्रों, कलाकृतियों, आभूषणों, कपड़ों और मसालों की यूरोप के बड़े घरानों में बहुत माँग और खपत थी। उस समय यूरोप के देश पिछड़ी अवस्था में थे। वहाँ बननेवाले कपड़े भारतीय कपड़ों की अपेक्षा घटिया किस्म के होते थे। मसाले तो वहाँ उगते ही नहीं थे। लेकिन वहाँ के कुलीन लोगों को भारतीय मसालों विशेषकर काली मिर्च का स्वाद काफी अच्छा लगता था। भोजन में काली मिर्च खाना उनकी आदत बन गई थी। सदियों से भारत की काली मिर्च और अन्य वस्तुएँ पश्चिम एशिया के रास्ते से यूरोप तक पहुँचती रहती थीं। पश्चिम एशिया तुर्की के विशाल साम्राज्य का अभिभाज्य अंग था। अचानक तुर्की और यूरोप में एक लंबा युद्ध छिड़ गया जिससे पश्चिम एशिया का

रास्ता भारतीय व्यापार के लिए बंद हो गया। यूरोप के लोगों को काली मिर्च का मिलना कठिन हो गया। विवश होकर उन्होंने काली मिर्च के देश भारत पहुँचने के लिए समुद्री मार्ग ढूँढने की कोशिश शुरू की। अनेक साहसी नाविक मार्ग की खोज में निकले। लेकिन सफलता वास्को द गामा को ही मिली। उसने अपनी यात्रा कैसे पूरी की और भारत के साथ उसने किस तरह के संबंध स्थापित किए ? इन्हीं विषयों का विवेचन इस पुस्तक का मुख्य विषय है।

वास्को द गामा पुर्तगाल का निवासी था। शनिवार, 8 जुलाई 1497 ई० को उसने पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से भारत के लिए यात्रा आरंभ की थी। रास्ते में अज्ञात समुद्रों में अचानक चलनेवाले भीषण तूफानों और अनगिनत भूभागों में रहनेवाले लोगों के विरोध के कारण उसे और उसके साथियों को अनेक बार अपने साहस और धैर्य की परीक्षा देनी पड़ी। कई बार तो वे मौत के मुँह में गए और अपार संघर्ष के बाद बाहर आए। यात्रा के असह्य कष्टों, बार-बार की बीमारी और नीरसता के कारण वास्को द गामा के पोतवाहक ऊब जाते थे। उनमें से कुछ तो इतने अधिक अधीर हो गए थे कि उन्होंने बीच रास्ते से ही स्वदेश लौट जाने का आग्रह किया। उन्होंने वास्को द गामा के विरुद्ध विद्रोह भी किया। वास्को द गामा ने बड़ी निष्ठुरता से उस विद्रोह का दमन किया और आगे की यात्रा जारी रखी। मई 1498 ई० में वह भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर स्थित कालीकट नामक बंदरगाह पर जा पहुँचा। उस समय कालीकट की विश्व के सर्वश्रेष्ठ व्यापारिक केंद्रों में गणना होती थी। स्वदेश लौटने से पहले ही वास्को द गामा के सौ साथियों की मृत्यु हो चुकी थी। उसके भाई पाओलो द गामा

ने भी बीच में ही दम तोड़ दिया था। केवल पचास साथियों के साथ वास्को द गामा लिस्बन वापस पहुँचा था। लेकिन उसे इस बात का श्रेय है कि मानव इतिहास में पहली बार उसने यूरोप और भारत के बीच समुद्री मार्ग की खोज की। उसकी यात्रा वास्तव में एक ऐतिहासिक यात्रा थी।

मुझे प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर अनिल विद्यालंकार और वर्तमान अध्यक्ष प्रोफेसर अर्जुन देव तथा उनके सहयोगियों विशेषरूप से डा. हीरालाल बाछोतिया ने इस पुस्तक को लिखने और इसके द्वारा वास्को द गामा की भारत यात्रा का संक्षिप्त विवरण भारत के बच्चों के समक्ष प्रस्तुत करने का मुझे अवसर दिया।

इस पुस्तक के सृजन में नई दिल्ली स्थित भारतीय राष्ट्रीय लेखागार के अधिकारियों और उनके सहायकों ने मेरी बहुमूल्य सहायता की। उन्हीं के सहयोग से वास्को द गामा के दुर्लभ यात्रा-वृतांत मुझे पढ़ने के लिए मिल सके। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अधिकारी और मेरे शिष्य श्री शोभन चटर्जी ने वास्को द गामा की यात्रा से संबंधित चित्रों के निर्माण में मेरी उल्लेखनीय सहायता की है। भारत के कुछ नगरों में आयोजित कार्यगोष्ठियों के कई विद्वान प्रतिभागियों तथा घर में मेरे पुत्रों संजय एवं सौरभ ने इस पांडुलिपि को सुना और पढ़ा। उनके रचनात्मक सुझावों के आधार पर मैंने इस पुस्तक की भाषा में जहाँ-तहाँ सुधार किया है। मोतीलाल नेहरू कालेज में मेरी सहायक श्रीमती कमला पांडे ने इस पांडुलिपि को टाइप करके मेरी सहायता की है। प्रकाशन विभाग के मुख्य संपादक श्री. प्रभाकर द्विवेदी और उनके सहायक संपादक श्री शर्मा दत्त ने इस कृति में रुचि लेकर इसका

प्रकाशन किया। उक्त सभी संस्थाओं एवं व्यक्तियों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैं अपनी पत्नी श्रीमती रेखा वत्स का भी व्यक्तिगत रूप से आभारी हूँ क्योंकि इस रचना को समय से पूरा करने के लिए उन्होंने मुझे सदैव प्रेरित किया है।

राजेन्द्र सिंह वत्स
जे-58, साकेत
नई दिल्ली 110017

विषय-सूची

गांधी जी का जन्तर

तुम्हे एक जन्तर देता हूं । जब भी तुम्हे सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी 'आजमाओ'

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा । क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ो लोगो को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे है और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है ।

मो॰ क॰ गांधी

1
वास्को द गामा और काली मिर्च



वास्को द गामा पुर्तगाल का निवासी था। पुर्तगाल यूरोप महाद्वीप का एक स्वतंत्र राष्ट्र है। वास्को द गामा का जन्म पुर्तगाल के साइनेस नगर में 1460 ई0 के लगभग हुआ था। उसके पिता का नाम एस्तैवाओ था। वे अलेम्तेजो प्रांत के राज्यपाल थे। वास्को द गामा के दो भाई थे। उसके पूर्वजो मे तेरहवी शताब्दी में एक वीर योद्धा हुआ था। उसका नाम अल्वारो अनेस द गामा था। अल्वारो 1280 ई० में ओलीवेंशा में रहता था। उसने मूरो के विरुद्ध युद्ध लड़े थे और उनमें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी। इस प्रकार वास्को द गामा का परिवार एक कुलीन प्रतिष्ठित परिवार था।

वास्को द गामा की युवावस्था के बारे में कोई वर्णन नहीं मिलता। लेकिन एक बात निश्चित है कि वह एक असाधारण नवयुवक था। वह सुविज्ञ, उत्साही, पराक्रमी एवं कुशल कार्यकर्ता था। उसने पुर्तगाल की

नौसेना में सेवा की थी। सामुद्रिक मामलों का उसे पर्याप्त ज्ञान था। राजा उस पर बहुत भरोसा करता था। इसी कारण सन् 1492 में उसने वास्को द गामा को अल्गार्व बंदरगाह में खड़े फ्रांसीसी जहाज़ों को पकड़ने का कार्य सौंपा था। इससे पहले एक फ्रांसीसी समुद्री डाकू ने साओ जार्ज द मीना से वापस आने वाले सोने से लदे एक पुर्तगाली जहाज़ को लूट लिया था। इसका बदला लेने के लिए पुर्तगाल के राजा ने वास्को द गामा को नियुक्त किया था।

(कुछ विद्वानों का मत है कि वास्को द गामा को जहाजों के संचालन का इतना अच्छा ज्ञान था) कि वह अपने समकालीन यूरोप के किसी भी नौसैनिक का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता था। उसका संकल्प अटूट था। उसमें अपूर्व उत्साह था। उसे यह आभास था कि पुर्तगाल और भारत के बीच की यात्रा में अनेक जोखिमें होंगी। परंतु उनसे वह तनिक भी भयभीत नहीं था।

पहली बार जब वास्को द गामा भारत आया तब वह अविवाहित था। भारत से लौटकर उसने कैतरीना द अतेद से विवाह किया।

लगभग 500 साल पहले वास्को द गामा ने यूरोप और भारत के बीच एक नए मार्ग की खोज की थी। उसने यूरोप के लोगों को भारत के बारे में नया ज्ञान दिया था। फलतः यूरोप और भारत के बीच नए संबंध स्थापित हुए। अंतर्राष्ट्रीय जगत में इन संबंधों से एक नया सिलसिला शुरू हुआ।

इसका अर्थ यह नहीं है कि वास्को द गामा से पूर्व यूरोप के लोग भारत के बारे में कुछ जानते ही नहीं थे। सच तो यह है कि सदियों से वे भारत से परिचित थे। आज से ढाई हजार वर्ष पूर्व हिरोडोटस, डायेटोरस, स्ट्रेवो तथा प्लूटार्क जैसे प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकारों ने अपनी पुस्तकों में

भारत का वर्णन किया था। इन्हीं पुस्तकों से उस समय यूरोप के निवासियों को भारत के बारे में जानकारी प्राप्त होती थी। 480 ई. पू. में भारतीय सिपाही फारस के झंडे के नीचे ग्रीस की धरती पर लड़े थे। बाद में ग्रीस और भारत के बीच मैत्री संबंध स्थापित हुए थे।

यूरोप के लोग भारत के वैभव से आकर्षित होकर यहाँ आते रहते थे। 326 ईसा पूर्व में मैसीडोनिया के सम्राट सिकंदर ने उत्तर-पश्चिमी भारत पर आक्रमण किया था। मैसीडोनिया राज्य यूरोप के दक्षिण-पूर्व में स्थित था। सिकंदर ईराक, फारस और अफगानिस्तान के रास्ते से भारत आया था। उसी रास्ते से ग्रीसवासी मेगस्थनीज़ मौर्य सम्राट चंद्रगुप्त के समय पाटलिपुत्र आया था। यहाँ रहकर उसने **इंडिका** नामक पुस्तक की रचना की। उसमें मेगस्थनीज़ ने भारत की दशा का वर्णन किया।

रोमन साम्राज्य और भारत के दक्षिण राज्यों के बीच ईसा की प्रथम शताब्दी में अच्छा व्यापार होता था। ग्रीस और रोम के भूगोलशास्त्री भारत की सरहद से परिचित थे। मध्य युग में भारत और यूरोप के संबंधों में रुकावट आई। परंतु यूरोप के लोगों के मन में भारत के बारे में कौतूहल बना रहा। इटली के नगरों वेनिस और जिनोआ में भारत और उसके व्यापार के बारे में काफी ज्ञान था। दक्षिणी नीदरलैंड के एंटवर्प नगर में भी लोग भारत के बारे में जानते थे। तेरहवीं शताब्दी में अनेक यूरोपीय यात्री भारत आए। उनमें मार्को पोलो, फ्रायर ओडोरिक एवं मोंते कोर्वीनो के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं। हीगल के अनुसार प्राचीनतम समय से सभी राष्ट्र भारत की संपदा को प्राप्त करने के लिए लालायित रहे हैं। प्रकृति ने भारत को बहुमूल्य निधियाँ दी हैं जैसे मोती, हीरे, इत्र, गुलाब जल, शेर, हाथी आदि। बुद्धिमत्ता भी भारत में भरी पड़ी है। पाश्चात्य देशों ने इस

सबको कैसे प्राप्त किया ? इस प्रक्रिया का विश्व के इतिहास में बड़ा महत्व है।

प्राचीन काल में एक ऐसा समय था जब यूरोप के लोग भारतीय वस्तुओं को पाने के लिए कुछ भी व्यय करने को तैयार रहते थे। भारत से निर्यात किए गये सुंदर मोतियों, मनमोहक हीरे-जवाहरात, ढाके की मलमल, रेशमी वस्त्रों, हाथी के दाँत से बनी मनोरम कलाकृतियों तथा महकते-महकाते इत्रों की यूरोप के बड़े-बड़े बाजारों में बहुत माँग थी। केरल में उगने वाले मसालों विशेषकर काली मिर्च की यूरोप के धनी परिवारों में बड़ी खपत थी। इस खपत का एक कारण था। यूरोप के लोग हमारी तरह मसालेदार चटपटा खाना नहीं खाते। वे तो गोश्त, आलू आदि को उबालकर या आग में भूनकर खाते हैं। वास्को द गामा के समकालीन लोग काली मिर्च और नमक छिड़ककर अपने भोजन को स्वादिष्ट बनाते थे। काली मिर्च खरीदना सामान्य लोगों के बस की बात नहीं थी। केवल धनवान लोग ही इसे खरीद सकते थे। हर मौसम में नमक और काली मिर्च से तैयार किए गए गोश्त को वे बड़े चाव से खाते थे। सुबह के नाश्ते से लेकर रात के भोजन तक के लिए उन्हें काली मिर्च की जरूरत पड़ती थी। काली मिर्च खाने की उनकी आदत सी बन गई थी। वे इसे किसी भी स्थिति में छोड़ने को तैयार न थे। इसी कारण भारतीय काली मिर्च की माँग यूरोप में बहुत बढ़ गई थी। आज काली मिर्च का उतना मूल्य नहीं है। परंतु उस समय वह हीरों के भाव बिकती थी। काली मिर्च के व्यापारियों को इतना अधिक लाभ होता था कि वे उसे प्राप्त करने के लिए हर संभव जोखिम उठाने के लिए तैयार रहते थे। उसकी खोज में लोगों ने तूफानी समुद्रों की यात्रा की, युद्ध लड़े और अनेक यातनाएँ झेलीं।

वास्को द गामा के भारत पहुँचने से पहले भारत और अरब के व्यापारी यहाँ की काली मिर्च फारस की खाड़ी या लाल सागर के जरिए यूरोप के व्यापारियों तक पहुँचाते थे। भारतीय जहाज़ काली मिर्च, अन्य मसाले और कपड़े आदि सामान लेकर अरब के बंदरगाहों तक निरंतर जाते रहते थे। कुछ भारतीय गुजराती व्यापारी उस माल को बेचने के विचार से उन्हीं बंदरगाहों में जाकर बस गए थे। उनमें से कुछ व्यापारी पूर्वी अफ्रीका के किल्वा, मोंबासा और मालिंदी आदि बंदरगाहों में जाकर भारतीय व्यापार को बढ़ावा देते थे। वे वहाँ रहते भी थे। इसी तरह अरब के व्यापारी भी भारतीय बंदरगाहों में आते थे और यहाँ से काली मिर्च और अन्य वस्तुएँ खरीदकर वापस चले जाते थे। उनमें से कुछ यहीं बस गए थे। व्यापार में हिंदू, मुसलमान और यहूदी व्यापारी साथ-साथ मिलकर काम करते थे। कभी-कभी वे एक-दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा भी करते थे; परन्तु शांति से। यही कारण था कि उनकी जहाज़रानियों के नाविक अस्त्र-शस्त्र लेकर नहीं चलते थे। कालीकट के व्यापारियों ने मिस्र में काहिरा और सिकंदरिया तथा कार्थेज़ (आधुनिक मोरक्को) में फैज़ जैसे सुदूर नगरों में मालगोदाम बना रखे थे। वहाँ से यूरोप के व्यापारी भारतीय काली मिर्च और अन्य सामान खरीद ले जाते थे। पंद्रहवीं शताब्दी में लाल सागर के आस-पास के व्यापारिक केंद्रों से काहिरा का करीम नामक व्यापारिक संस्थान भारतीय सामान खरीद ले जाता था। वापस जाकर वह उसे यूरोप के व्यापारियों को बेच देता था। वे उसे भूमध्य सागर से लेजाकर यूरोप के बाजारों में बेच देते थे। यूरोप का यह व्यापार अधिकतर इटली के मशहूर बंदरगाहों और व्यापारिक केंद्रों जैसे वेनिस और जिनोआ आदि से होकर मध्य, पश्चिमी और उत्तरी यूरोप के देशों की ओर बढ़ता था। इस व्यापार में इटली के व्यापारियों को काफी

लाभ होता था। कभी-कभी वे फारस होकर सीधे भारत भी आ जाते थे। यहाँ से काली मिर्च और अन्य मनपसंद चीजें खरीदकर अपने साथ ले जाते थे। उसे वे यूरोप की मंडियों में बेच देते थे।

व्यापार का यह क्रम अनेक शताब्दियों तक बिना किसी रुकावट के चलता रहा। यूरोप के लोगों को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि काली मिर्च कहाँ अगती है और उसका वास्तविक मूल्य क्या है। परंतु मध्य युग में यूरोपीय राज्यों तथा तुर्की के बीच युद्ध छिड़ गया। वह युद्ध ढाई सौ वर्षों तक चलता रहा। पश्चिमी एशिया के प्रदेशों पर तुर्की का राज्य था। वे प्रदेश भारत और यूरोप के व्यापार के माध्यम थे। तुर्की सरकार ने इस व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया। इस कारण सदियों से चलता हुआ यह व्यापार कुछ ही समय में छिन्न-भिन्न हो गया।

यूरोप के व्यापारियों को भारतीय वस्तुएँ मिलनी दुर्लभ हो गईं। चोरी-छिपे वे लोग बड़ी कठिनाई से कुछ वस्तुएँ प्राप्त कर लेते थे। माँग अधिक होने के कारण वे इन वस्तुओं को मनमाने दामों पर बेचने लगे। फ्रांस और इंग्लैंड के बाजारों में तो वे उनकी चार-चार सौ गुनी कीमत लेने लगे। कुछ समय तक तो लोग उन्हें खरीदते रहे। परंतु फिर उन्हें कठिनाई होने लगी और तब यूरोप के लोगों के मन में भारत के लिए नया मार्ग खोजने की इच्छा उत्पन्न हुई। उन्हें पता था कि उनकी प्रिय काली मिर्च भारत में मिलती है। जो भी राष्ट्र सबसे पहले वहाँ पहुँचने का समुद्री मार्ग खोजने में सफल होगा लाभ कमाने का अद्वितीय अवसर प्राप्त उसे ही होगा।

यूरोप द्वारा भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने का एक कारण वेनिस और जिनोआ की आपसी स्पर्द्धा भी था। अपनी चतुराई और साहस से वेनिस के व्यापारियों ने मिस्र के साथ अच्छे संबंध बना लिए थे। लाल

सागर होकर जो काली मिर्च और अन्य सामान भारत से मिस्र जाता था उसे वेनिस के व्यापारी खरीद लेते थे और फिर यूरोप के बाजारों में बेच देते थे। इस तरह वेनिस को काली मिर्च के व्यापार का एकाधिकार प्राप्त था। जिनोआ के व्यापारियों ने उस एकाधिकार को तोड़ने की पूरी-पूरी कोशिश की। परंतु वे सफल न हो सके। अंत में उन्होंने भूमध्य सागर के बाहर से भारत के लिए समुद्री मार्ग ढूँढने का संकल्प किया।

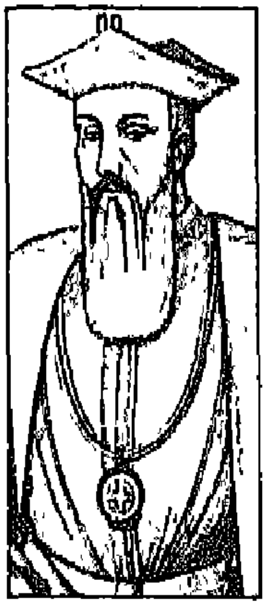
उन दिनों यूरोप के लोगों को केवल उत्तरी अफ्रीका के बारे में थोड़ा सा ज्ञान था। विशाल अफ्रीका का शेष भाग उनके लिए एक रहस्य बना हुआ था। उसकी लंबाई-चौड़ाई के बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। उन्हें यह भी ज्ञान नहीं था कि अफ्रीका और भारत एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं या उन दोनों के बीच में कोई समुद्र है। अफ्रीका के बारे में उनके मन में अनेक प्रकार के भ्रम थे। उन्होंने सुन रखा था कि वहाँ बड़े-बड़े दानव रहते थे जो पूरे के पूरे जहाज़ों को निगल जाते थे। वहाँ सूरज भी अनेक थे। उनकी गरमी इतनी तेज़ थी कि वह आदमी को जलाकर राख बना सकती थी और समुद्रों में भरे पानी को खौला सकती थी। ऐसी स्थिति में अफ्रीका के अपरिचित पश्चिमी तट के साथ-साथ अटलांटिक समुद्र में यात्रा करने का साहस तो कोई बिरला नाविक ही कर सकता था।

धीमे-धीमे मध्य युग का अंत होने लगा। पहले इटली और बाद में यूरोप के अन्य देशों में एक नई जागृति पैदा हुई। उस जागृति को नव जागरण या पुनर्जागरण भी कहा जाता है। उसके कारण पुराने भ्रम टूटने लगे। शिक्षित लोगों ने प्राचीन ग्रीस और रोम के दार्शनिकों, साहित्यकारों और वैज्ञानिकों के ग्रंथ पढ़े। उनसे उन्हें इस सच्चाई का पता लगा कि पृथ्वी गोल है। कार्थेज़ में हन्नो नामक एक साहसी नाविक रहता था।

कार्थेज़ उत्तर-पश्चिमी अफ्रीका का एक राज्य था। वह स्पेन के दक्षिण में पड़ता था, और फोनेशिया का एक उपनिवेश था। फोनेशिया पश्चिमी एशिया का एक समृद्ध राज्य था। हन्नो के पूर्वज फोनेशिया के निवासी थे। हन्नो 500 ईसा पूर्व में ही अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ मध्य अफ्रीका अर्थात भूमध्य रेखा तक अपने जहाज़ में अटलांटिक महासागर में यात्रा कर चुका था। उसके बाद मिस्र के शासक फैरोह नेको के आदेश पर फोनेशिया के नाविकों ने 600 ईसा पूर्व में अफ्रीका के चारों ओर के समुद्रों में यात्रा की थी। उन्होंने अपनी यात्रा लाल सागर से आरंभ की थी। अरब सागर, हिंद महासागर और दक्षिण अटलांटिक महासागर को पार कर उन्होंने जिब्राल्टर जलडमरूमध्य से होकर भूमध्य सागर में प्रवेश किया था।

उक्त जानकारियों का परिणाम यह हुआ कि यूरोप के नाविकों में एक नई चेतना आई। यदि हजारों वर्ष पहले फोनेशिया के नाविकों ने अफ्रीका के चारों ओर फैले समुद्रों को सफलतापूर्वक पार किया था तो वे वैसा क्यों नहीं कर सकते थे। कई शासकों ने उन्हें संरक्षण दिया। जिनोआ के वैज्ञानिकों ने नाविकों की सहायता के लिए नएं-नए यंत्रों का आविष्कार किया। भूगोलशास्त्रियों ने उनकी यात्रा के लिए संभावित नक्शे बनाएं। इस तरह नई खोजों और नए विचारों से प्रेरित होकर अनेक साहसी एवं उत्साही नाविक नए साधनों का सहारा लेकर अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत पहुँचने का समुद्री मार्ग ढूँढने के लिए निकल पड़े। लेकिन पहली सफलता वास्को द गामा को ही मिली।

2
समुद्री मार्ग की खोज



यूरोप के नाविकों ने भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने के अनेक प्रयत्न किए। आरंभ में सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रयास इटली के यूगोलिनो द विवाल्दो ने किया। उसने सन् 1291 में जिनोआ से प्रस्थान किया। उसके जहाज़ ने भूमध्यसागर एवं जिब्राल्टर जलडमरूमध्य को पार किया और फिर अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ काफी दूर दक्षिण की ओर यात्रा की।

अगले पचहत्तर वर्षों तक जिनोआ के व्यापारी अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लगे रहे। वे जहाज़रानी की तकनीकों को विकसित करते रहे तथा अफ्रीका के पश्चितती तट की और निकट से खोज करते रहे।

यूरोप के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा पुर्तगाल इस योजना के लिए सबसे अधिक साधन संपन्न था। जिनोआ ने जहाज़रानी के क्षेत्र में जो प्रगति की थी उसका ज्ञान धीमे-धीमे पुर्तगाल में पहुँच गया। सन् 1317 में पुर्तगाल के

राजा ने जिनोआ के एक कुलीन मैनोयल पैसन्हा को अपने नाविक बेड़े का वंशानुगत एडमिरल नियुक्त किया। मैनोयल ने राजा के जहाज़ों के लिए अनुभवी नाविक दिए। उसकी प्रतिभा अभूतपूर्व थी। अतः राजा ने 1319 में उसे विस्तृत जागीरें इनाम में दीं। ओदेमारा नगर भी उसे इनाम में मिला। पैसन्हा के अनेक कप्तान भी जिनोआ के कुलीन जन थे। इस तरह स्थापित यह संपर्क लगभग सौ वर्षों तक पनपता रहा। जिंनोआ के नाविक भारत पहुँचने का समुद्री मार्ग खोजने में सफल तो हो नहीं सके। किंतु उनके साहस और क्षमता ने पुर्तगालियों को इस काम के लिए प्रेरित किया।

पुर्तगाली बंदरगाह लिस्बन की भौगोलिक स्थिति यूरोप के बंदरगाहों में सर्वश्रेष्ठ थी। चौदहवीं शताब्दी में लिस्बन एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक केंद्र बन गया थ। अफ्रीका के हाथियों के दाँत और खजूर लिस्बन होकर ही यूरोप पहुँचते थे।

भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज किसी एक व्यक्ति का काम नहीं था। वह तो सामूहिक प्रयास था। फिर भी एक व्यक्ति ऐसा था जिसने उस कार्य में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। वह था पुर्तगाल का राजकुमार हैनरी। लगभग चालीस वर्षों से भी अधिक समय तक उसने भारत पहुँचने के लिए समुद्री मार्ग खोजने के लिए बनाई गई अनेक योजनाओं की सफलता के लिए निरंतर प्रेरणा, निर्देशन तथा धन दिया। उसी योगदान के कारण हैनरी का उपनाम 'नाविक' पड़ा।

दौम हैनरी (1394-1460 ई०) ने सन् 1417 से विशेषरूप से हिंद महासागर की ओर अपना ध्यान केंद्रित किया। अनेक भारतीय उससे लिस्बन में मिले। कुछ भारतीयों ने उसके जहाज़ों में भी यात्रा की। वह भारत पहुँचने के लिए आतुर था। उसके पास धन की कोई कमी नहीं थी। प्रिंस

हैनरी पहला पुर्तगाली शासक था जिसने पुर्तगाल के दक्षिणी किनारे पर बसे सागरेस नगर में सौंता विंसेंत अंतरीप पर पोतवाहकों और नाविकों के लिए पहला स्थायी जहाज़रानी स्कूल स्थापित किया। आगे चलकर वह स्कूल नौसैनिक अकादमी के रूप में विकसित हो गया। उस स्कूल के लिए हैनरी ने जहाज़ निर्माता, गणितज्ञ, मानचित्रकार, खगोलशास्त्री, भूगोलशास्त्री और मूर कैदी तक, जिन्हें भारत के बारे में थोड़ा सा भी ज्ञान था, इकट्ठे किए। स्कूल के वैज्ञानिकों ने सुदूर देशों के नक्शों और जहाज़रानी के लिए उपयोगी यंत्रों का निर्माण किया। जहाज़निर्माताओं ने उग्र समुद्रों की विषमताओं का सामना करने के लिए नए और मजबूत जहाज़ों का विकास किया। प्रिंस हैनरी ने कुछ मोटे और तेज़ चलनेवाले जहाज़ बनवाए। लंबी यात्रा के लिए भारी तोपें लेजानेवाले तथा अपेक्षाकृत धीमे चलने वाले जहाज़ों का भी निर्माण कराया। साथ ही उसने ऐसे साहसी लोगों को चुना और उन्हें स्कूल में प्रशिक्षण दिलवाया जो समुद्र पर विजय पाने के लिए कटिबद्ध थे। पुर्तगाली नाविकों को उसने जहाज़रानी से संबंधित नवीनतम विज्ञान की शिक्षा भी दिलवाई।

उक्त तैयारियों के बाद प्रिंस हैनरी ने एक के बाद एक नाविक अभियान अफ्रीका के पश्चिमी तट की खोज के लिए भेजना आरंभ कर दिया। नाविकों को नए-नए नक्शे, यंत्र और अच्छे से अच्छे जहाज़ दिए। उनकी सहायता से उन्होंने कई नए स्थानों जैसे, मदीरा द्वीप और केनरीज द्वीप की खोज की। चौदह प्रयासों के बाद हैनरी का एक नाविक बेड़ा गिल एनैस के नेतृत्व में सन् 1434 में केप बजादोर पहुँचने में सफल हो गया। कुछ समय तक तो उसके नाविक वहाँ से आगे बढ़ ही नहीं पा रहे थे। परंतु हैनरी निराश नहीं हुआ। उसके नाविकों ने कोशिश जारी रखी। एक



नौप हैनरी

दिन वे उसे पारकर आगे बढ़ गए। फिर तो प्रत्येक नया नाविक बेड़ा कुछ न कुछ और आगे निकल जाता था। लौटते समय वह अफ्रीका के प्रदेशों से सोना और चाँदी लेकर वापस लौटता था। इससे नाविकों को और आगे जाने का लालच हुआ। वे अफ्रीका के दक्षिण की ओर बढ़ते ही गए। हैनरी के जहाज़ गिनी तट पर पहुँच गए। उसके तुरंत बाद उसके एक कप्तान ने भूमध्य रेखा पार कर ली। यह पुर्तगालियों की अभूतपूर्व सफलता थी। इन सफलताओं के परिणाम स्वरूप अफ्रीका का पश्चिमी तट केप वर्दी तक प्रिंस हैनरी के नियंत्रण में आ गया। हैनरी की इन उपलब्धियों ने भविष्य की समुद्री खोजों के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।

सन् 1454 में पोप निकोलस पंचम ने प्रिंस हैनरी को भारत तक के प्रदेशों को खोजने का एकाधिकार दिया। इससे प्रिंस हैनरी को और अधिक प्रेरणा मिली। उसने अपने प्रयत्न और तेज़ कर दिए। उसकी सफलताओं ने आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरित किया।

अफोंसो द अफ्रीकन (1438 - 81 ई०) के राज्यकाल में अटलांटिक महासागर से भारत के लिए मार्ग खोजने की योजना बनाई गई। शाही पुरोहित फरनाओ मार्तिंज़ ने इटली में पाओलो तोस्कनेली से इस योजना के भविष्य के बारे में चर्चा की थी। 25 जून 1474 को उसे एक चार्ट भी मिला था। रुई गोन्साल्वस द कामरा को सन् 1473 और फरनाओ तैलेस को सन् 1474 में अज़ोरस बंदरगाह के पश्चिम में स्थित द्वीपों की खोज करने की स्वीकृति भी दी गई थी। किंतु कोई उपयोगी सफलता नहीं मिली।

सन् 1481 में दौम जोआओ द्वितीय पुर्तगाल का राजा बना। उसने और उसके सलाहकारों ने अफ्रीका की खोज की योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए नाविकों को शाही संरक्षण प्रदान किया। अफ्रीका से प्राप्त सोने से

उसे संतोष नहीं था। वह भारत के मसाले भी पाना चाहता था। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसने दो दल भेजे। एक दल को बार्थोलोम्यू दियाज़ के नेतृत्व में अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ दक्षिणी अंतरीप पहुँचने का समुद्री मार्ग खोजने का आदेश दिया। सन् 1487 में दियाज़ अफ्रीका के दक्षिणी अंतरीप में पहुँच गया। उस समय तक वह 'उग्र अंतरीप' कहलाता था क्योंकि उसे पार करना कठिन था। किंतु दियाज़ का जहाज़ उसे पारकर अफ्रीका के पूरब की ओर जाने में सफल हो गया। अतः दियाज़ ने उसका नाम 'आशा अंतरीप' रख दिया। वहाँ से दियाज़ भारत की ओर अधिक दूर तक नहीं जा सका क्योंकि उसके विद्रोही नाविकों ने उसे पुर्तगाल वापस लौटने के लिए बाध्य कर दिया।

दूसरी ओर दौम जोआओ ने पेरो द कोविल्हम को ईथियोपिया के राजा प्रैस्तर जोन के यहाँ राजदूत बनाकर भेजा। उससे कहा कि वह दियाज़ की विपरीत दिशा में भूमध्य सागर और लाल सागर के मार्ग से ईथियोपिया पहुँचे। वह चाहता था कि कोविल्हम वहाँ पहुँचकर अरबी व्यापारियों की सहायता से पूर्वी अफ्रीका और भारत के बीच समुद्री यात्रा संबंधी आवश्यक जानकारी प्राप्त करे। कोविल्हम एक भाषाविद्, सैनिक, गुप्तचर, एवं कूटनीतिज्ञ था। वह पूर्वी अफ्रीका के मोज़ंबीक प्रदेश के बीरा बंदरगाह के दक्षिण में सोफाला तक पहुँचा था। वहाँ उसने इतना तो पता कर लिया था कि अफ्रीका के दक्षिणी अंतरीप का चक्कर लगाकर पूर्व से पश्चिम की ओर समुद्री यात्रा संभव थी। वह मुस्लिम पोशाक पहनकर एक अरबी जहाज़ में बैठकर सन् 1488 में भारत आया था। यहाँ वह कालीकट भी गया था। किंतु न तो उसने अफ्रीका के दक्षिण में होकर समुद्री यात्रा की थी और न ही वह पुर्तगाली जहाज़ से भारत आया था। अतः उसे वास्को द गामा का

अग्रसर नहीं माना जा सकता। लेकिन इतना अवश्य माना जा सकता है कि कोविल्हम और दियाज़ की खोजों से पुर्तगाली नाविकों को अफ्रीका के समुद्री तट का एक अच्छा अंदाज़ हो गया था। उनकी खोजों से वास्को द गामा के लिए समुद्री मार्ग द्वारा अफ्रीका के पश्चिम से दक्षिणी अंतरीप को पारकर पूर्व की ओर मालिंदी और वहाँ से कालीकट तक पहुँचने के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी। उस समय दौम जोआओ के अचानक बीमार पड़ जाने से भारत यात्रा की योजना खटाई में पड़ गई।

दौम जोआओ के निधन के बाद उसके उत्तराधिकारी दौम मैनुअल ने भारत पहुँचने का अंतिम निर्णय लिया। दौम मैनुअल के शाही सलाहकार यात्रा की सफलता के बारे में सशंकित थे। उन्होंने इस निर्णय का विरोध किया। परंतु दौम मैनुअल ने उनकी बात नहीं मानी। अंत में वह सफल हुआ। इसके लिए उसे 'भाग्यशाली' उपनाम से विभूषित किया गया।

प्रिंस हैनरी और अन्य पुर्तगाली शासकों के स्वप्न को जिस नाविक ने साकार किया वह वास्तव में वास्को द गामा ही था। वास्को द गामा से पूर्व आनेवाले सबके सब यूरोपीय थलमार्ग से भारत आए थे। वास्को द गामा प्रथम यूरोपीय था जो समुद्री मार्ग से भारत आया। विश्व इतिहास में वह पहला व्यक्ति था जो यूरोप और भारत के बीच समुद्री मार्ग ढूँढने में सफल हुआ। वास्को द गामा ने अपनी सफलताओं से यूरोप के अनगिनत यात्रियों, व्यापारियों तथा साम्राज्यवादियों के भारत आने के लिए नया रास्ता दिखाया।

क्या वास्को द गामा की मेगलहास और कोलंबस से तुलना की जा सकती है ? वास्तव में मेगलहास का स्थान निश्चय ही सर्वोपरि है। उसने सबसे पहले प्रशांत महासागर को जहाज़ से पार किया। दूसरा स्थान कोलंबस को दिया जाता है। वह चला तो था भारत के लिए समुद्री मार्ग



दौम मैनुअल

खोजने के लिए। परंतु संयोगवश वह अमरीका के पूर्वी तट पर जा पहुँचा। इस खोज के भविष्य में अद्वितीय परिणाम निकले। अमरीकी महाद्वीप् यूरोप के लोगों के लिए वरदान साबित हुआ। वह उनका दूसरा घर बन गया।

वास्को द गामा के बारे में कुछ विद्वानों का मत है कि उसने तो केवल अपने सम्राट के आदेशों का पालन ही किया। यह सच है। परंतु यह भी सच है कि अफ्रीका के दक्षिणी तट तक पहुँचने के लिए वास्को द गामा ने जो समुद्री मार्ग ढूँढा वह अन्य नाविकों के मार्ग से भिन्न था। अन्य नाविकों ने अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ-साथ यात्रा करने का प्रयत्न किया था। किंतु वास्को द गामा ने वह मार्ग नही अपनाया। उसने केप वर्दी द्वीपों को पार कर अटलांटिक महासागर के बीच से आशा अंतरीप (केप ऑफ गुड होप) तक सीधे पहुँचने का लक्ष्य बनाया। अफ्रीका के पश्चिमी तट के साथ जाने वाले मार्ग की लंबाई केवल 3770 मील थी। परंतु उसमें समुद्री हवाओं और धाराओं का वेग बहुत प्रबल था। उस समय के नौसैनिक साधन भी इतने कम और अविकसित थे कि उनकी सहायता से उन्हें पार करना संभव नहीं था। बार्थोलोम्यू दियाज़ उन कठिनाइयों को भुगत चुका था। उसने वास्को द गामा को इस रास्ते से न जाकर मध्य अटलांटिक के रास्ते से यात्रा करने की सलाह दी थी। वास्को द गामा ने उसकी सलाह मानी और वैसा ही किया। उसने पश्चिम अफ्रीका के साथ-साथ न जाकर मध्य अटलांटिक वाला लंबा रास्ता अपनाया। पुर्तगाल से चलकर तीन सप्ताह के अंदर वह केप वर्दी द्वीप पहुँचा। पुर्तगाली नाविक उन द्वीपों की चालीस साल पहले ही खोज कर चुके थे। वहाँ उन्होंने अपना उपनिवेश बना रखा था। वास्को द गामा ने वहाँ विश्राम किया। आवश्यक वस्तुएँ लेकर जहाज़ों में भरीं। उसके बाद वह दक्षिण अटलांटिक महासागर की एक

लंबी यात्रा पर निकल पड़ा। एक बार तो वह अफ्रीका से काफी दूर दक्षिण अमरीका के निकट जा पहुँचा था। समुद्र में यात्रा करते-करते तिरानबे दिन बीत चुके थे। एक दिन उसने अनुमान लगाया कि अब तो वह दक्षिण अफ्रीका के निकट ही होगा। उसका अनुमान सच निकला। वह साँता एलीना की खाड़ी में पहुँच चुका था। वहाँ से आशा अंतरीप केवल पचास मील दक्षिण में था। साँता एलीना की खाड़ी में रुककर उसने खूब विश्राम किया और फिर आशा अंतरीप की ओर प्रस्थान किया।

वास्को द गामा की दक्षिण अटलांटिक की उक्त यात्रा का समुद्री खोजों के इतिहास में बहुत बड़ा स्थान है। उस समय तक वास्को द गामा के अतिरिक्त अन्य किसी नाविक ने इस रास्ते को अपनाने का साहस ही नहीं किया था। अतः उसकी उपलब्धि अद्वितीय और अत्यंत महत्वपूर्ण थी। एक अन्य दृष्टि से वास्को द गामा और उसके सहायकों की उपलब्धि कोलंबस की उपलब्धि से अधिक उल्लेखनीय है। उनके समुद्री यात्रा से संबंधित चार्टों के आँकड़े कोलंबस के आँकड़ों से अधिक सही थे।

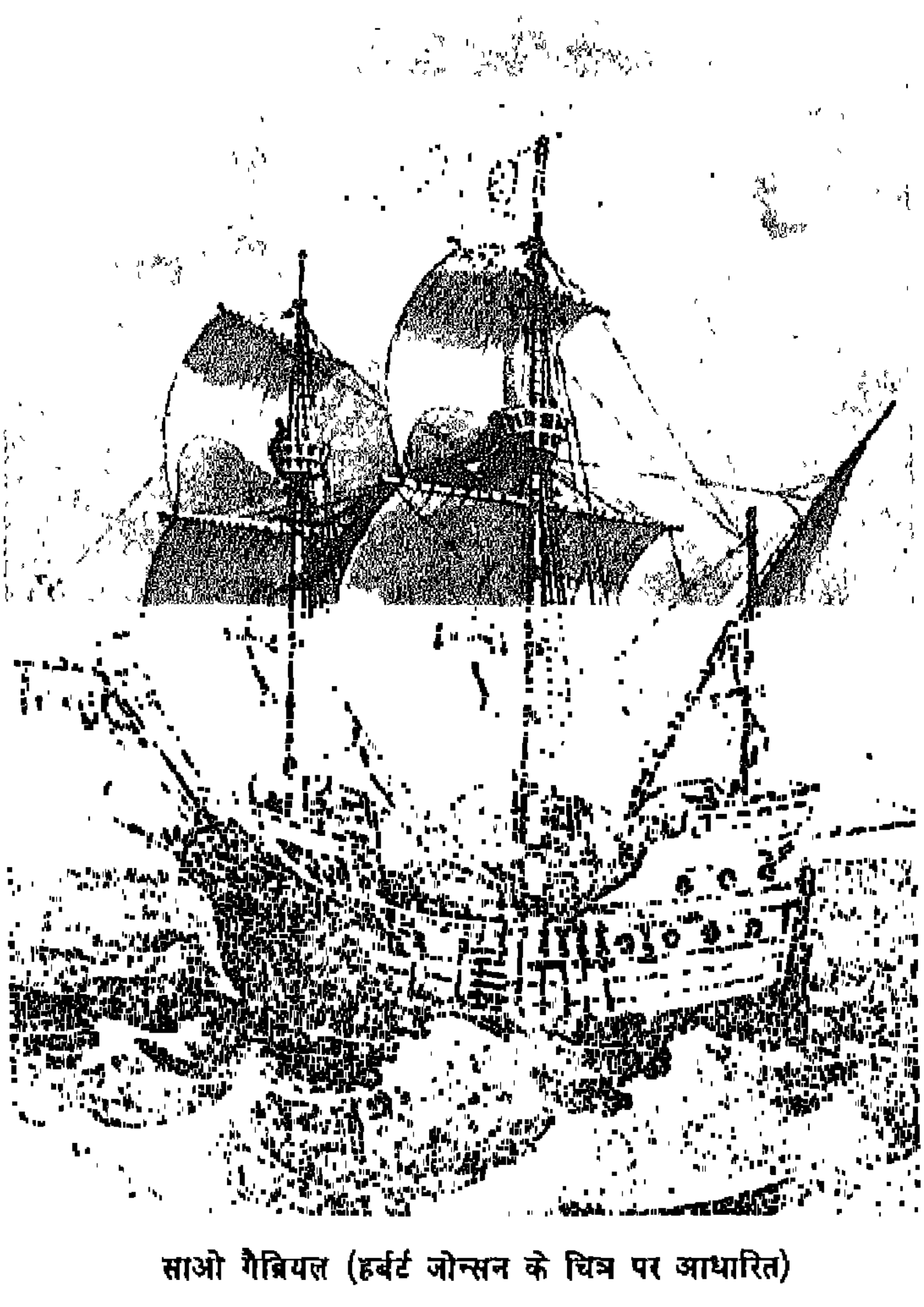
पुर्तगाल के सम्राट ने वास्को द गामा को तीन बार भारत की यात्रा पर भेजा। पहली बार की यात्रा (सन् 1497 - 99) सर्वाधिक महत्व की थी क्योंकि वह पहली ऐसी यात्रा थी जिसके बारे में जानकारी बहुत कम थी और बाधाएँ अनेक थीं। उस यात्रा की सफलता ने भावी नाविकों की यात्राओं को सुगम बना दिया। वास्को द गामा ने उस मार्ग को कैसे ढूँढा तथा किस तरह वह प्रतिकूल परिस्थितियों पर विजय पाता हुआ भारत आया ? इसकी भी एक रोचक कहानी है।

3
यात्रा की तैयारी



पुर्तगाल के राजा दौम मैनुअल (1485 - 1521 ई०) के जीवन की एक बहुत बड़ी अभिलाषा यह थी कि उसके देश के नाविक भारत के लिए समुद्री मार्ग की खोज करें। अपने और अपने पूर्वजों के इस स्वप्न को वह साकार करना चाहता था। इस काम के लिए उसने वास्को द गामा को चुना। उसने वास्को द गामा को कैप्टेन-मेजर का पद दिया तथा चार मज़बूत जहाज़ों का एक बेड़ा तैयार करवाया। इस बेड़े का निर्देशन वास्को द गामा को ही दिया गया।

उक्त बेड़े में चार जहाज़ थे। वे उस समय के सबसे बढ़िया जहाज़ थे। उनमें से दो में प्रत्येक का भार 120 टन था और तीसरे का 50 टन। चौथा जहाज़ भंडारपोत था जो सबसे हल्का और छोटा था। बेड़े का सबसे अच्छा जहाज़ साओ गैब्रियल वास्को द गामा को दिया गया था। उसी को



साओ गैब्रियल (हर्बर्ट जोन्सन के चित्र पर आधारित)

ध्वजपोत का स्थान दिया गया था। उसका पायलट पेरो द अलैंकर था। उसने इस यात्रा से पहले भी बार्थोलोम्यू दियाज़ के साथ आशा अंतरीप तक यात्रा की थी। सन् 1490 में वह पुर्तगाल के कांगो मिशन में भी गया था। निस्संदेह पेरो द अलैंकर एक अनुभवी नाविक था।

बेड़े का दूसरा जहाज़ साओ राफेल था। उसका नेतृत्व वास्को द गामा के भाई पाओलो द गामा को सौंपा गया था। उसका पायलट जोआओ द कोइंब्रा था। वह एक नीग्रो दास था।

तीसरा जहाज़ बेरिओ था। वह तेज़ चलनेवाला जहाज़ था। उस तरह के जहाज़ों का निर्माण पुर्तगाली कारीगरों की विशेषता थी। तेरह से सोलहवीं शताब्दी तक पुर्तगाल उनके लिए मशहूर था। वास्को द गामा की यात्रा से पहले अफ्रीका के तट की खोजों में उसी तरह के जहाज़ों का प्रयोग किया गया था। बेरिओ का कप्तान निकोलो कोयल्हो था। वह बाद में भी भारत आया था। सन् 1500 में कोइंब्रा के साथ और सन् 1503 में फ्रांसिस्को द अल्बुकर्क के साथ वह भारत आया था। पुर्तगाल के राजा ने उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर उसे अनेक पुरस्कारों से विभूषित किया था।

बेड़े का चौथा जहाज़ भंडारपोत था। उसका कप्तान वास्को द गामा का सेवक कोंसालो नुनेस था। भंडारपोत में केवल आवश्यक सामग्री भरी गई थी।

साओ गैब्रियल और साओ राफेल विशेषरूप से इस यात्रा के लिए ही बनाए गए थे। बार्थोलोम्यू दियाज़ ने अपने निर्देशन में उनका निर्माण कराया था। वह स्वयं एक अनुभवी नाविक था। वह अफ्रीका के पश्चिमी तट की पूरी यात्रा कर चुका था। साओ गैब्रियल और साओ राफेल की गति पुर्तगाल में बने अन्य जहाज़ों की अपेक्षा धीमी थी। परंतु उनका भार



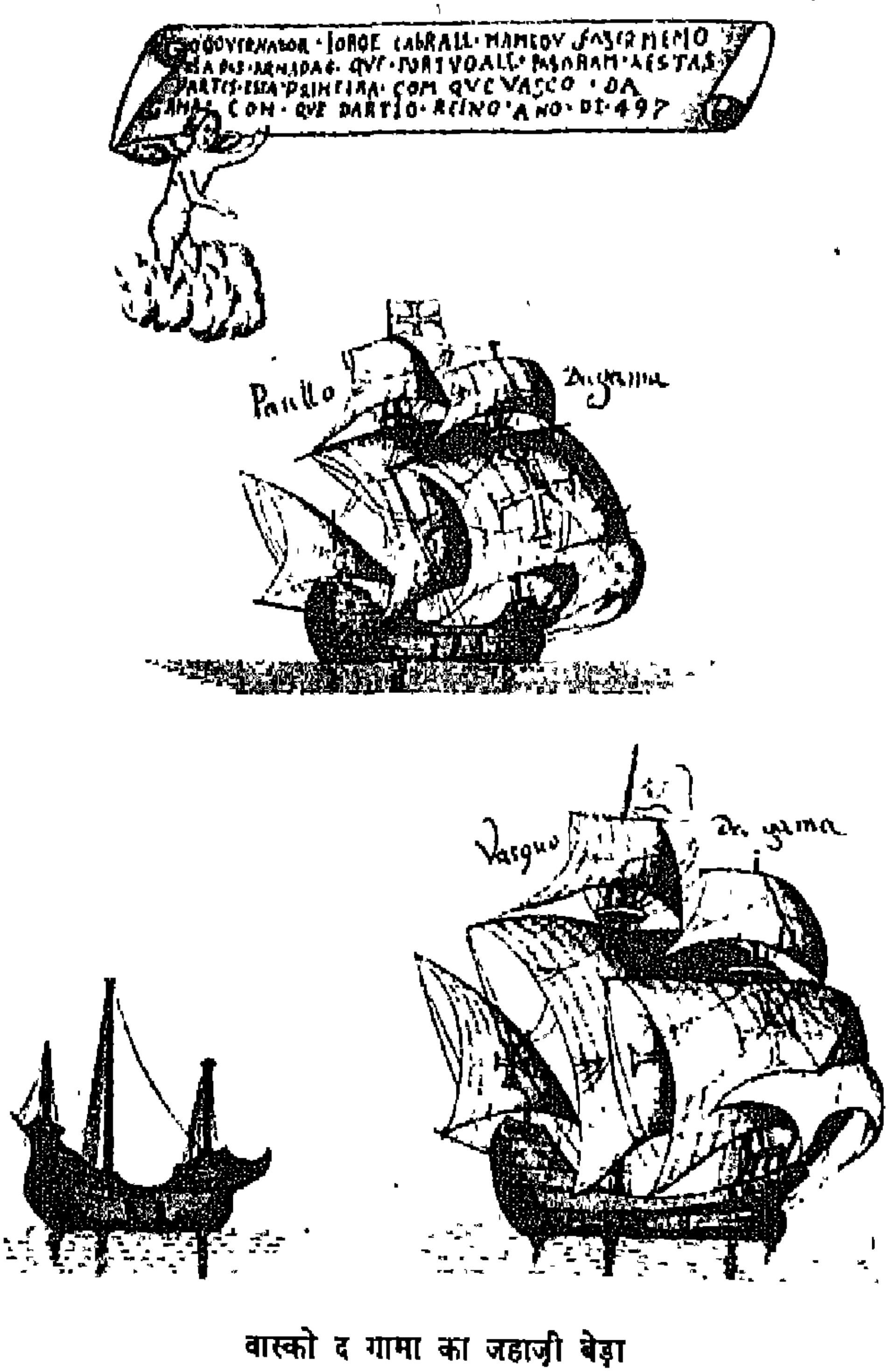
साओ राफेल का प्रतीक

अधिक था। वे नाविकों के लिए अधिक सुरक्षित एवं आरामदायक थे। बार्थोलोम्यू ने उनके निर्माण के समय इस बात का विशेषकर ध्यान रखा था कि वे कम गहरे पानी में भी सरलता से चल सकें। उन जहाज़ों की लकड़ी राजा जौन के शासन के अंतिम दिनों में लीरिया और अल्सेसर के शाही वनों से लाई गई थी।

साओ गैब्रियल और साओ राफेल को अस्त्र-शस्त्रों से लैस करने का काम राजा के सेवक एवं विशेषज्ञ फरनाओ लौरेंसो को सौंपा गया। उनके ऊपरी भाग पर दूरबीनें लगाई गईं। दोनों पर बीस -बीस बंदूकें रखी गईं। गोला दागनेवाली तोपें भी जहाज़ों के विभिन्न स्थानों पर रखी गईं। गोला-बारूद भी पर्याप्त मात्रा में रख दिया गया। इन शस्त्रों के नियंत्रण का दायित्व जहाज़ों के कप्तानों और उनके अधीन अधिकारियों को दिया गया।

साधारण नाविकों के पास केवल तीर-कमान, भाले, कुल्हाड़ियाँ, तलवारें आदि अस्त्र थे। कुछ चुने हुए अधिकारियों को पहनने के लिए लोहे के कवच दिए गए थे। शेष नाविकों को मिरजई और कवच दिए गए थे। वे चमड़े के बने थे।

जहाज़ों के निचले भागों को तीन हिस्सों में बाँट दिया गया था। दो हिस्सों में खाने-पीने की, भेंट के लिए तथा विदेशों से समान खरीदने के लिए वस्तुएँ रखी गई थीं। खाने-पीने का सामान इस हिसाब से रखा गया था कि वह नाविकों के लिए तीन वर्ष तक चल सके। एक नाविक के वास्ते एक दिन के लिए खाद्य सामग्री की मात्रा काफी अच्छी निर्धारित की गई थी— डेढ़ पौंड बिस्कुट, एक पौंड बीफ या आधा पौंड सुअर का मांस, ढाई पिंट पानी, सवा पिंट शराब, सिरका तथा तेल। मछली अथवा चीज़, आटा, दाल, बेर, बादाम, प्याज, अदरक, सरसों, नमक, चीनी और शहद भी पर्याप्त



वास्को द गामा का जहाज़ी बेड़ा

मात्रा में जहाज़ों में भरे गए थे। साथ ही यह भी योजना बनाई गई थी कि यात्रा में अवसर मिलने पर नाविक ताज़ी मछलियाँ और खाने की अन्य वस्तुएँ भी इकट्ठी कर लिया करेंगे।

वस्तु-विनिमय के लिए जो वस्तुएँ जहाज़ों पर लादी गई थीं वे अपर्याप्त थीं। कालीकट के समृद्ध व्यापारियों ने तो उन्हें बिलकुल पसंद नहीं किया। उन वस्तुओं में धारीदार सूती कपड़ा, चीनी, जैतून का तेल, शहद और मूँगे थे। भेंट के लिए चिलमचियाँ, लाल टोप, रेशमी जैकिटें, पतलूनें, तुर्की टोपियाँ, शीशे के मोती, छोटी घंटियाँ, राँगे की अँगूठियाँ और बाजूबंद रखे गए थे।

समुद्री यात्रा की सुविधा के लिए वास्को द गामा के जहाज़ों को उस समय के सबसे अधिक विकसित वैज्ञानिक साधनों से सज्जित किया गया था। वर्षों की मेहनत से जुटाए गए उस यात्रा से संबंधित नक्शे, पुस्तकें और यात्रियों के वृतांत वास्को द गामा को दिए गए थे। पुर्तगाल के शाही प्रोफेसर अब्राहम बेन सैमुएल जाकुरो ने, जो खगोलशास्त्र के विशेषज्ञ थे, वास्को द गामा को खगोलविद्या संबंधी विश्वसनीय यंत्र दिए थे और उनके प्रयोग का प्रशिक्षण भी दिया था। इस विषय पर लिखी अपनी एक पुस्तक उसे दी थी। कई तरह के विकसित कुतुबनुमे भी उसे दिए गए थे।

वास्को द गामा के साथ यात्रा करने के लिए अधिकारियों एवं अन्य लोगों का चुनाव काफी सोच समझकर किया गया था। उनमें से अनेक ऐसे थे जो बार्थोलोम्यू दियाज़ के साथ पहले ही आशा अंतरीप का चक्कर लगा चुके थे। उनके अनुभव वास्को द गामा की यात्रा में सहायक सिद्ध हुए। उन लोगों में तरह-तरह के लोग थे, जैसे पायलट, नाविक, बंदूक तथा तोप दागनेवाले, दुंदुभी वादक, क्लर्क, भंडारी, नाई, दुभाषिए, पादरी, रस्सी बनानेवाले,

बढ़ई, कवच बनानेवाले, रसोइए, सेवक आदि। उनमें एक दो नीग्रो दास भी थे। उनकी पूरी संख्या के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद है। परंतु ऐसा माना जाता है कि कुल मिलाकर वास्को द गामा के साथ 170 व्यक्ति थे– 70 ध्वजपोत में, 50 साओ राफेल में, 30 बेरियो या साओ मिग्वैल में और 20 भंडारपोत में।

दुभाषियों में प्रमुख मार्तिम अफोंसो था। वह इस यात्रा से पहले कांगो में रह चुका था। दूसरा दुभाषिया फरनाओ मार्तिंस था। वह एक अफ्रीकी दास था। उसे अरबी भाषा का ज्ञान था। बाद में वह गोआ में कई महत्वपूर्ण पदों पर रहा।

वास्को द गामा की यात्रा से पूर्व के सभी प्रयत्न निष्फल हो चुके थे। इस बार क्या होगा ? किसी को कुछ पता नहीं था। परंतु वास्को द गामा और उसके साथियों के मन में संकल्प दृढ़ था। उनकी सफलता के लिए उनके देशवासियों ने भगवान से जगह-जगह प्रार्थनाएँ की थीं। वास्को द गामा और उसके साथियों ने भी यात्रा आरंभ करने से पहले की रात पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से चार मील दूर रेस्तैलो के चर्च में प्रार्थना करते हुए बिताई थी और वहीं से शनिवार, 8 जुलाई 1497 को वे अपने-अपने जहाज़ों में सवार होकर भारत के लिए रवाना हुए थे। उन्हें विदा करने के लिए पुर्तगाली बड़ी भारी संख्या में इकट्ठे हुए थे।

4
रेस्तैलो से आशा अंतरीप



रेस्तैलो से वास्को द गामा के जहाज़ अटलांटिक महासागर में दक्षिण की ओर बढ़े। एक हफ्ते तक वे समुद्र में ही यात्रा करते रहे। चारों ओर पानी और समुद्र की लहरों के अतिरिक्त उन्हें और कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। 15 जुलाई 1497 को उन्हें केनरी द्वीप दिखाई पड़े। ये द्वीप अफ्रीका के उत्तर-पश्चिम में हैं। वास्को द गामा ने उन्हें सफलतापूर्वक पार किया। 16 जुलाई की सुबह वह तेरा अल्ता में पहुँचा। यह स्थान अफ्रीका के तट पर स्थित है। यहाँ पर छोटी-छोटी चट्टाने हैं जो 35 मील दूर तक फैली हुई हैं। पुर्तगाली पहले ही से इन चट्टानों से परिचित थे। उतः वास्को द गामा को उन्हें पार करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। तेरा अल्ता में वास्को द गामा और उसके साथी एक दिन के लिए रुके। वहाँ उन्होंने कुछ घंटों तक मछलियाँ पकड़ीं तथा विश्राम किया। शाम होने पर उन्होंने

रिओ दो ऊरो की ओर प्रस्थान किया। रिओ दो ऊरो का अर्थ है "भगवान की नदी"। वास्तव में अफ्रीका में इस नाम की कोई नदी तो है नहीं। केवल तट के अंदर फैली हुई 20 मील लंबी एक घाटी है। अफ्रीका के निवासी इसी घाटी को नदी मानते हैं।

तेरा अल्ता से चलने के बाद जब रात हुई तो रास्ते में एक समुद्री तूफान आया और चारों ओर घना कोहरा छा गया। परिणामस्वरूप वास्को द गामा के जहाज़ तितर-बितर हो गए। जब रात बीती और सूर्योदय हुआ तो पाओलो द गामा को पता लगा कि वह वास्को द गामा और अन्य साथियों से अलग हो चुका था। शायद वास्को द गामा को ऐसी संभावना की पहले ही से आशंका थी। अतः उसने पाओलो को आदेश दे दिया था कि यदि किसी कारणवश जहाज़ एक दूसरे से अलग हो जाएँ तो वे अपने जहाज़ों को सीधा केप वर्दी द्वीप की ओर ले जाएँ। पाओलो ने वैसा ही किया। वह कई दिनों तक चलता रहा और तब 22 जुलाई को प्रातः उसे इल्हा दो साल द्वीप दिखाई दिया। उसके तीन घंटे बाद उसे तीन जहाज़ मिले। उनमें दो तो अपने साथियों के थे और एक बार्थोलोम्यू दियाज़ का था। बार्थोलोम्यू साओ जार्ज द मीना तक पाओलो के साथ गया। मीना का किला गोल्ड कोस्ट में 1482 ई0 में बना था। बार्थोलोम्यू वहाँ का कप्तान नियुक्त किया गया था। वास्को द गामा का जहाज़ उक्त तीन जहाज़ों में नहीं था। काफी प्रयत्न के बाद बुधवार, 26 जनवरी को दस बजे उन्हे वास्को द गामा दिखाई दिया। उसे देखकर और उससे बात करके उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। इसी खुशी में उन्होंने कई बार अपनी बंदूकें चलाईं और दुंदुभी बजाई।

बृहस्पतिवार, 27 जुलाई को वास्को द गामा के जहाज़ केप वर्दी द्वीप समूह के साओ थियागो नामक द्वीप के समीप पहुँचे। उसके निकट सॉता

मारिया खाड़ी में उन्होंने अपने जहाज़ ठहरा दिये। वहाँ उन्होंने कई दिनों तक विश्राम किया। लगभग एक महीने तक अटलांटिक महासागर की तूफानी लहरों से टकराते रहने के कारण उन जहाज़ों में कुछ टूट-फूट हो गई थी। अतः वास्को द गामा के साथियों ने अपने जहाज़ों की मरम्मत की। आगे की यात्रा के लिए उन्होंने मांस, पानी और लकड़ी जैसी आवश्यक वस्तुओं का संग्रह किया और अपने जहाज़ों में भर लिया।

बृहस्पतिवार, 3 अगस्त को वास्को द गामा ने दक्षिणी अटलांटिक महासागर की ओर प्रस्थान किया। उसके सभी जहाज़ साओ थियागो से लगभग 200 लीग अर्थात 3400 मील तक सकुशल चलते चले गये। उसके बाद वास्को द गामा का ध्वजपोत अचानक टूट गया। उसे तेज़ी से चलाना असंभव हो गया। अतः उन्हें अपने जहाज़ों की गति धीमी करनी पड़ी। दो दिन और एक रात तक वे इसी तरह चलते रहे और भगवान से प्रार्थना करते रहे कि किसी तरह उन्हें कहीं भूभाग दिखाई दे। उस समय तक वे साओ थियागो से लगभग 800 लीग यात्रा कर चुके थे। अंत में उन्हें बगुलों जैसे अनेक पक्षी उड़ते हुए दिखाई दिए। वे बड़ी तेज़ी से अफ्रीका के भू-तट की ओर उड़े चले जा रहे थे। तभी उन्हें एक व्हेल मछली दिखाई दी। इन चिह्नों से उन्हें यह आशा बँधी कि वे भूतल से बहुत दूर नहीं हैं। शुक्रवार, 27 अक्टूबर को वास्को द गामा के साथियों को अनेक व्हेल तथा सील मछलियाँ दिखाई पड़ीं। बुधवार, 1 नवंबर को भूमि के निकट पहुँचने के और अनेक चिह्न दिखाई दिए। विशेषरूप से उन्होंने भूमि के निकट खाड़ी में उगने वाला खर-पतवार देखा। इससे उनकी चिंता कम होने लगी और वे अपने जहाज़ों को आगे बढ़ाते गये। अपने अच्छे-अच्छे कपड़े निकालकर पहने। उन्होंने अपनी बंदूकें दागकर अपने कैप्टेन-मेजर वास्को द

गामा को प्रणाम किया और उसे बधाई दी। उन्होंने अपने जहाज़ों के झंडे ठीक किये तथा उत्साहपूर्वक उन्हें फहराया।

उन्होंने अपने जहाज़ों को भूमि के निकट ले जाने की कोशिश की। परंतु उन्हें कोई स्थान ऐसा नहीं मिला जहाँ वे अपने जहाज़ों को ठीक से ठहरा सकें। अतः उन्होंने अपने जहाज़ों को समुद्र में ही रखा। मंगलवार, 7 नवंबर को उन्होंने फिर से सुविधाजनक स्थान की खोज आरंभ की। इस काम के लिए वास्को द गामा ने पैरो द लैंकर को एक नाव देकर भेजा। पैरो बार्थोलोम्यू दियाज़ के साथ पहले ही दो बार अफ्रीका के दक्षिणी किनारे पर हो आया था। वह एक अनुभवी नाविक था। कुछ कोशिश के बाद उसने एक खाड़ी खोज निकाली जो बहुत ही साफ और सुरक्षित थी। वास्को द गामा और उसके साथियों ने इसी खाड़ी में बुधवार, 8 नवंबर को अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। उन्होंने इस खाड़ी का नाम सॉता एलीना रखा। इस खाड़ी में वे लोग आठ दिन तक रुके। वहाँ रहकर उन्होंने अपनी थकान दूर की। अपने जहाज़ों की सफाई की। उनके पालों की मरम्मत की तथा लकड़ी ली।

वास्को द गामा और उसके साथियों ने साँता एलीना खाड़ी के पूर्व में दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका के तट का निरीक्षण किया। उन्होंने देखा कि वहाँ के निवासी काले रंग के थे। उनका कद छोटा था। वे लोग सील, व्हेल और हिरन के मांस तथा जड़ी-बूटियों का भोजन करते थे। वे शहद भी खाते थे। उस तट के अनेक स्थानों पर बालू के टीले बने थे। उनके निकट झाड़ियाँ उगी थीं। उनमें मधु मक्खियाँ शहद बनाती थीं। उसी शहद को लोग इकट्ठा कर लेते थे और बड़े चाव से खाते थे। वे पशुओं की खाल पहनते थे। शिकार करने के लिए वे लकड़ी के भालों का प्रयोग करते थे।

भालों के ऊपरी हिस्सों पर सींग लगे रहते थे। वास्को द गामा और उसके साथियों ने उस क्षेत्र में कुत्ते देखे। उन्होंने अनेक प्रकार के पक्षी जैसे जलकौआ, मुर्गाबी, फ़ाख्ता, कलंगीवाला अबाबील आदि भी देखे। उन्हें विविध प्रकार की वनस्पतियाँ मिलीं। वहाँ की जलवायु शीतोष्ण और स्वास्थ्यवर्धक थी।

वास्को द गामा ने वहाँ के निवासियों से संपर्क स्थापित करने के अनेक प्रयत्न किए। एक दिन उनमें से एक को बंदी बना लिया। उसे अच्छी तरह से खिलाया-पिलाया, अच्छे वस्त्र दिए और फिर वापस भेज दिया। दूसरे दिन 10 नवंबर को चौदह-पंद्रह लोग जहाज़ों की ओर आए। उन्हें देखकर वास्को द गामा तट की ओर गया और उनसे मिला। उसने उन्हें दालचीनी, लौंग, छोटे मोती, सोना आदि अनेक वस्तुएँ दिखाईं। उन लोगों को इनके बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं था। अंत में वास्को द गामा ने कुछ गोल घंटियाँ और टिन की अँगूठियाँ उन्हें दे दीं। रविवार, 12 नवंबर को उसने उन्हें ताँबे के सिक्के देकर उनसे कुछ वस्तुएँ भी खरीदीं जैसे, सीपियाँ, जिन्हें वे अपने कानों के आभूषण के रूप मे पहनते थे, लोमड़ी की पूँछ के बने पंखे, जिनसे वे अपने मुँह पर हवा करते थे और पशुओं की खाल से बना पुरुषों का एक अंग-वस्त्र। वे लोग ताँबे को बहुत महत्व देते थे। ताँबे के छोटे-छोटे मोती वे अपने कानों में पहनते थे।

12 नवंबर को ही फरनाओ वेलोसो नामक वास्को द गामा का एक साथी अपने आग्रह पर वास्को द गामा की स्वीकृति लेकर उस प्रदेश के निवासियों के रहन-सहन और खान-पान के बारे में जानकारी प्राप्त करने की इच्छा से उनके साथ गया। कुछ दूर जाकर उन्होंने एक सील मछली पकड़ी। एक पहाड़ी के निकट खाली जगह पर उसे भूना। उसका कुछ

हिस्सा और कुछ जड़ें, जिन्हें वे खाते थे, उन्होंने फरनाओ को दीं। भोजन के बाद उन्होंने उससे वापस जाने को कहा। लेकिन इस बीच उनमें कुछ मतभेद हुआ और फिर झगड़ा शुरू हो गया। फरनाओ अपनी जान बचाने के लिए समुद्र की ओर भागा। वह ज़ोर-ज़ोर से चीखें मारने लगा। आदिवासी समुद्र तट पर भागते हुए उसका पीछा कर रहे थे। चीखें सुनते ही वास्को द गामा नाव में बैठकर फरनाओ की सहायता के लिए तेज़ी से आगे बढ़ा। वह उसे जल्दी से अपनी नाव में लेना चाहता था। आक्रमणकारियों ने उन पर पत्थर और तीर फेंकने शुरू कर दिए। इस झगड़े में वास्को द गामा और उसके कई साथियों को चोटें भी आईं। परंतु वे फरनाओ को बचाकर अपने जहाज़ पर वापस लाने में सफल हो गए।

बृहस्पतिवार, 16 नवंबर को वास्को द गामा ने सॉँता एलीना खाड़ी से आशा अंतरीप की ओर प्रस्थान किया। उसे और उसके साथियों में से किसी को निश्चित दूरी का पता नहीं था। पर वे चलते चले गये। शनिवार, 18 नवंबर को उन्हें वह अंतरीप दिखाई पडा। यह अफ्रीका के दक्षिण में है। बार्थोलोम्यू दियाज़ वहाँ पहले ही दो बार हो आया था। उसने पहली बार जब इस अंतरीप को सफलतापूर्वक पार किया था तब उसने ही इसका नाम आशा अंतरीप रखा था। बार्थोलोम्यू का एक साथी पैरो द लैंकर इस समय वास्को द गामा के साथ था। वांस्को द गामा ने उस अंतरीप को पार करने के लिए कई प्रयास किये। वह कई दिनों तक अपने जहाज़ों को अंतरीप को पार करने के लिए वहाँ तक ले जाता रहा। किंतु समुद्र की उग्रता उसके प्रयत्नों को विफल करती रही और वह विवश होकर तट पर वापस आता रहा। परंतु उसने साहस नहीं छोड़ा। भगवान से वह सफलता की कामना करता रहा। उसने कोशिश जारी रखी। अंत में बुधवार, 22 नवंबर को

दोपहर को उसे अनुकूल हवाओं का सहारा मिल गया। वह आगे बढ़ा। इस बार भगवान और भाग्य दोनों ने उसका साथ दिया। वह अंतरीप का चक्कर लगाने में सफल हो गया। इस सफलता से वास्को द गामा और उसके साथियों का मनोबल बढ़ गया। उसके बाद वे नए आत्म-विश्वास के साथ अफ्रीका के दक्षिणी तट के साथ-साथ पहले पूर्व की ओर और फिर उत्तर की ओर आगे बढ़ने लगे।

5
शेरों जैसी दहाड़नेवाली सीलों के प्रदेश में



शनिवार, 25 नवंबर की शाम को वास्को द गामा और उसके साथियों ने साम ब्रास खाड़ी में प्रवेश किया। पहले इस खाड़ी का नाम मौसल खाड़ी था। इस नाम को वास्को द गामा ने बदल दिया। यह खाड़ी अफ्रीका के दक्षिण तट के बीचोबीच स्थित है। इसी खाड़ी को पार करते समय भंडार पोत टूट गया। थोड़ी देर के लिए तो सबके होश उड़ गए। लेकिन वास्को द गामा ने अपने लोगों को आदेश दिया कि वे धैर्य और समझदारी से काम लें। अतः उन्होंने जल्दी-जल्दी उस जहाज़ का सामान उतार कर अन्य जहाज़ों पर लाद लिया। इस आकस्मिक दुर्घटना के कारण वास्को द गामा को तेरह दिन तक उसी खाड़ी में रुकना पड़ा।

उसी बीच शुक्रवार, 1 दिसंबर को लगभग नब्बे आदिवासी खाड़ी के किनारे आए। उनका आकार और शकल-सूरत सॉंता एलीना खाड़ी के पास

रहने वाले लोगों से मिलती-जुलती थी। उनमें से कुछ तो तट पर आकर घूमने लगे और शेष निकटवर्ती पहाड़ी पर ही रह गये। उस समय वास्को द गामा के लगभग सभी साथी उसके साथ ध्वजपोत पर ही थे। आदिवासियों को देखते ही वे अपनी नौकाओं में सवार हुए, अपने हथियार सम्हाले और तट की ओर चल पड़े। तट के निकट पहुँचने पर कैप्टेन-मेजर वास्को द गामा ने छोटी-छोटी घंटियाँ आदिवासियों के पास फेंक दीं। उन्होंने उन्हें उठा लिया। तब कुछ लोग आगे आए और उन्होंने वास्को द गामा के हाथ से भी कुछ घंटियाँ ले लीं। इससे वास्को द गामा और उसके साथी बड़े आश्चर्यचकित हुए क्योंकि उनसे पहले जब बार्थोलोम्यू दियाज़ ने कुछ चीज़ें उन आदिवासियों को देने की कोशिश की थी तो उन्होंने वे चीज़ें नहीं लीं और वे भाग गए। इतना ही नहीं, एक बार जब उसने समुद्र - तट के पास से पानी लेना चाहा तो उन्होंने उसे रोका और उस पर पत्थर फेंके। उनके इस व्यवहार से बार्थोलोम्यू दियाज़ को इतना अधिक गुस्सा आया था कि उसने उनमें से एक की तीर मारकर हत्या कर दी थी। परंतु इस बार उन आदिवासियों ने वास्को द गामा के साथ वैसा व्यवहार नहीं किया। उन्होंने वास्को द गामा से चीज़ें ले लीं। संभवतः उन्हें यह सूचना पहले ही मिल चुकी थी कि साँता एलीना की खाड़ी के निवासियों को भी वास्को द ग़ामा ने कुछ चीज़ें दी थीं और उसने उनका कोई नुकसान भी नहीं किया था।

वास्को द गामा खाड़ी के उस भाग में समुद्र-तट पर नहीं गया। वहाँ घनी झाड़ियाँ थीं जिनसे दूर तक देखने में रुकावट होती थी। वास्को द गामा को भय था कि उन झाड़ियों में कुछ ऐसे लोग न छिपे हों जो उस पर अचानक आक्रमण कर दें। अतः वह अपने बेड़े को थोड़ा सा आगे ले गया। वहाँ समुद्र-तट खुला हुआ था। उसी के निकट उसने अपने जहाज़

रोक दिए। कुछ ही समय बाद तट पर कुछ नीग्रो इकट्ठे हो गए। वास्को द गामा ने इशारे से उन्हें अपने पास बुलाया। वे उसके पास पहुँच गए। इस बार वास्को द गामा और उसके अन्य नाविक अपने साथ सशस्त्र पुरुष भी ले गये थे। उनमें से कुछ के पास धनुष थे। वास्को द गामा ने एकत्रित नीग्रो लोगों को कहा कि पहले वे वहाँ से चले जाएँ और फिर एक-एक या दो-दो करके उसके पास आएँ। वे लोग उसकी बात मान गए। बाद में जो लोग उसके पास आए उनको उसने छोटी-छोटी घंटियाँ और लाल टोपियाँ दीं। उनके बदले में उन लोगों ने वास्को द गामा को हाथी के दाँत के बाजूबंद भेंट में दिए। नीग्रो लोग बाजूबंद अपनी बाहों में पहनते थे। अफ्रीका के इस भाग (आधुनिक दक्षिण अफ्रीका) में हाथी काफी संख्या में होते थे। वास्को द गामा के साथियों ने समुद्र-तट पर हाथियों की लीद पड़ी देखी थी। इससे उन्होंने अनुमान लगाया कि हाथी वहाँ पानी पीने आते होंगे।

शनिवार, 2 दिसंबर को करीब दो सौ नीग्रो समुद-तट पर आए। उनमें कुछ युवक थे और कुछ वृद्ध। वे अपने साथ एक दर्जन बैल और गाएँ लाए थे। उनके पास चार-पाँच भेड़ें भी थीं। उन्हें देखकर वास्को द गामा के कुछ साथी उनके पास तट पर जा पहुँचे। जैसे ही ये लोग वहाँ पहुँचे नीग्रो लोगों ने तुरंत चार-पाँच बाजे बजाने आरंभ कर दिए। उनमें से कुछ की ध्वनि ऊँची थी और कुछ की नीची। परंतु दोनों से मिलकर जो संगीत लहरी उत्पन्न हो रही थी वह बहुत ही मधुर थी। इस मनमोहक दृश्य से प्रभावित होकर वास्को द गामा ने अपने लोगों को दुंदुभी बजाने का आदेश दिया। ज्योंही दुंदुभी बजी, त्योंही उसके आदमियों ने नौकाओं में नाचना आरंभ कर दिया। तट से लौटकर वास्को द गामा भी उनके साथ नाचने

लगा। इस प्रकार सबने मिलकर सुंदर उत्सव मनाया। उत्सव के समाप्त होने पर वास्को द गामा के साथियों ने तट पर जाकर तीन बाजूबंद देकर एक काला मोटा बैल खरीदा। रविवार के दिन उन्होंने उसे मारा और उसके मांस का भोजन किया। वह उन्हें बहुत स्वादिष्ट लगा।

उसी दिन बहुत से आदिवासी भी वास्को द गामा के दल को देखने के लिए तट पर इकट्ठे हुए। उनके साथ उनकी स्त्रियाँ और छोटे-छोटे बच्चे भी थे। स्त्रियों को उन्होंने पहाड़ियों की चोटियों पर छोड़ दिया और स्वयं समुद्र के किनारे आ गए। वे अपने साथ बहुत से बैल और गाएँ भी लाए थे। समुद्र-तट पर वे दो भागों में बँट गए और पिछले दिन की तरह वे खूब खेले और नाचे। उनके कुछ बुजुर्ग वास्को द गामा के साथियों से बात करने के लिए आए। उनके हाथों में छोटे-छोटे डंडे थे जिनके एक किनारे पर बैल की पूँछ लगी हुई थी। इससे वे चेहरों पर हवा किया करते थे। अपनी सुरक्षा के लिए वे अपने नवयुवकों को शस्त्र देकर पीछे झाड़ियों में बिठा आए थे। समुद्र के किनारे आए हुए लोगों से इशारों से बात करते समय, वास्को द गामा के साथी सतर्क थे। उन्होंने झाड़ियों में छिपे उनके नवयुवकों को देख लिया था। उसी समय वास्को द गामा ने मार्तिन अफोंसो को कुछ बाजूबंद देकर एक बैल खरीदकर लाने का आदेश दिया। आदिवासियों ने मार्तिन से बाजूबंद तो ले लिए पर बैल नहीं दिया। इतना ही नहीं उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया और इशारे से पूछने लगे कि उसके साथियों ने उनका पानी क्यों लिया। साथ ही वे अपने जानवरों को हाँककर झाड़ियों में ले गए।

यह देखते ही वास्को द गामा चौकन्ना हो गया कि मार्तिन के साथ धोखा होने वाला है। अतः उसने अपने साथियों को एकदम आदेश दिया

कि वे अपने शस्त्र सम्हालें और इकट्ठे हो जाएँ। मार्टिन को उसने पुकारकर कहा कि वह तुरंत वापस भाग आए। नौकाओं में इकट्ठे होकर वास्को द गामा के साथी ज्योंही आगे बढ़े त्योंही आदिवासियों ने उनका पीछा करना आरंभ कर दिया। वास्को द गामा ने अपने साथियों को तट पर उतरने का आदेश दिया। वे लोग भाले और धनुष-बाण लेकर वहाँ उतरने लगे। वे अपने वक्षस्थलों पर कवच भी पहने हुए थे। उनके अस्त्र-शस्त्रों को देखकर आदिवासी भाग गये और निकटवर्ती झाड़ियों में जाकर छिप गए। वास्को द गामा ने अपनी एक लंबी नौका से दो बार तोपें भी दगवाई। जैसे ही पहली बार तोप दगी वैसे ही आदिवासी झाड़ियाँ छोड़कर भाग उठे। वे इतने घबड़ा गये कि अपनी जान बचाने के चक्कर में वे अपनी खालों को, जिनसे वे अपने शरीर को ढकते थे तथा हथियारों को भी पीछे छोड़ गये। उनमें से केवल दो अपनी गिरी हुई वस्तुओं को लेने के लिए वापस आए। उन्हें जल्दी से लेकर वे भी अन्य साथियों के साथ अपने जानवरों को दौड़ाते हुए एक पहाड़ी की चोटी की ओर भाग गए।

इस प्रदेश के बैल काफी बड़े होते थे। उनका बदन चर्बीला होता था। वे बहुत ही शांत रहते थे। उनके सींग भी नहीं होते थे। उनमें से जो सबसे अधिक मोटा होता था उसके ऊपर नीग्रो लोग सरकंडों की खुरजी बनाकर लटका देते थे। उस खुरजी पर लकड़ियों की बनी एक पालकी रख देते थे। पालकी में बैठकर वे सवारी करते थे। जब कभी वे किसी बैल को बेचना चाहते थे तो पहले उसके नथनों में एक लकड़ी लगा देते थे और फिर उसे आगे हाँककर ले जाते थे।

इस खाड़ी में एक द्वीप था जो समुद्र-तट से लगभग आधा मील दूर है। उसके पास बहुत सी सील मछलियाँ रहती थीं। वे भिन्न-भिन्न आकार की होती थीं— कुछ छोटी, कुछ बड़ी तो कुछ बीच की।

आजकल वहाँ पर उस तरह की मछलियाँ नहीं पाई जातीं। वास्को द गामा और उसके साथियों ने जो सील मछलियाँ देखीं उनमें से कुछ भालू के जैसे बड़े आकार की थीं। उनके दाँत काफी बड़े थे। देखने में वे बड़ी भयानक लगती थीं। वे मनुष्य पर आक्रमण कर देती थीं। उनकी शरीर-रचना इतनी कठोर थी कि भाले के प्रहार का, चाहे कितने ही बल से क्यों न किया गया हो, उन पर कोई असर नहीं पड़ता था। बड़ी सील मछलियाँ शेर की तरह दहाड़ती थीं और छोटी सीलें बकरियों की तरह मिमियाती थीं। एक दिन वास्को द गामा के साथी जब मनोरंजन के लिए उस द्वीप के निकट गये तब उन्होंने लगभग तीन हजार सील मछलियाँ देखीं। कुछ पर उन्होंने अपनी नावों से गोलियाँ भी चलाई।

वास्को द गामा और उसके साथियों ने सामब्रास खाड़ी में चिड़ियाँ भी देखीं। वे बत्तखों जैसी बड़ी थीं। परंतु उनके डैनों पर पंख न होने के कारण वे उड़ नहीं सकती थीं। वास्को द गामा के साथियों ने उनका नाम फौतिलिकेओस रखा। परंतु विद्वानों के विचार में वे अंतरीप में निवास करने वाली पैंग्विन रही होंगी। वे गधों की तरह रेंकती थीं। वास्को द गामा के साथियों ने उनमें से बहुतों का शिकार किया।

एक दिन इसी सामब्रास खाड़ी में वास्को द गामा के साथी पानी लेने गए थे। उस समय उन्होंने अपने वहाँ निवास की याद में एक ऊँचा स्तंभ बनाया था। उसके ऊपर एक क्रास भी बनाया था। परंतु जब वे जहाज़ लेकर चलने वाले थे तो उन्होंने देखा कि दस-बारह नीग्रो लोगों ने उस स्तंभ को तोड़ डाला। इससे उन्हें दुख हुआ। परंतु वे रुके नहीं, आगे बढ़ गए।

6
अच्छे संकेतोंवाली नदी



सामब्रास खाड़ी से चलने से पहले वास्को द गामा ने आवश्यक सामग्री एकत्रित करवाई। उसे अपने जहाज़ों में भरवाया और फिर वहाँ से आगे की यात्रा आरंभ की। उसके जहाज़ केवल दो लीग ही आगे बढ़े थे कि उनके विपरीत समुद्री हवाएँ तेजी से चलने लगीं। आगे चलना असंभव हो गया। अतः वास्को द गामा ने वहीं अपने जहाज़ों के लंगर डलवा दिए। हवा कम हो जाने पर शुक्रवार, 8 दिसंबर को उन्होंने अपनी यात्रा पुनः आरंभ की। इस बार फिर कुछ दूर चलने के बाद ही एक बड़ा भारी तूफान आ गया। वास्को द गामा ने जहाज़ों को बड़ी सावधानी से चलाने का आदेश दिया। जहाज़ों ने अपने आगे के पाल नीचे कर दिए और गति एकदम धीमी कर दी। परंतु इन सावधानियों के बाद भी निकोलो कोयल्हो का जहाज़ अन्य जहाज़ों से दूर चला गया। उसे साथ न पाकर वास्को द गामा को थोड़ी

चिंता हुई। उसने अपने जहाज़ों को वहीं रुकवा दिया। बाद में तूफान शांत हो जाने पर वह उनसे फिर से जा मिला। इससे उनका साहस बढ़ गया। वे अपने गंतव्य की ओर आगे चल पड़े।

इस प्रकार छोटी-छोटी कठिनाइयों को पार करते हुए वे लोग एक सप्ताह तक समुद्र पर यात्रा करते रहे। शुक्रवार, 15 दिसंबर को उन्हें फिर से भूमि दिखाई पड़ी। उनकी खुशियों का ठिकाना न रहा। यह स्थान इल्हयोस चाओस अथवा फ्लैत द्वीप समूह था। ये द्वीप इल्हयोस द क्रूज़ अथवा क्रौस द्वीप से पाँच लीग की दूरी पर हैं। सामब्रांस की खाड़ी से क्रौस द्वीप की दूरी साठ लीग है। यही दूरी सामब्रास की खाड़ी और आशा अंतरीप के बीच में है। फ्लैत द्वीप से पाँच लीग दूरी पर वह स्थान है जहाँ बार्थोलोम्यू दियाज़ ने अपनी यात्रा के समय अंतिम स्तंभ का निर्माण किया था। इस स्तंभ से रिओ द इन्फांते पंद्रह लीग दूर है। शनिवार, 16 दिसंबर को वास्को द गामा के दल ने बार्थोलोम्यू के अंतिम स्तंभ को पार किया और वे रिओ द इन्फांते जा पहुँचे। बार्थोलोम्यू केवल यहीं तक पहुँचा था। इससे पहले अन्य कोई भी यूरोपवासी यहाँ से आगे यात्रा करने में सफल नहीं हो सका था। अतः रिओ द इन्फांते से आगे की यात्रा का श्रेय वास्तव में वास्को द गामा को ही जाता है।

इन्फांते के आस-पास का प्रदेश बहुत ही आकर्षक था। वह सघन वृक्षों से घिरा हुआ था। वहाँ अनेक पशु विचरण करते थे। ज्यों-ज्यों वास्को द गामा उत्तर की ओर बढ़ता गया त्यों-त्यों उसके साथियों ने देखा कि अफ्रीका का वह प्रदेश और अधिक सुंदर होता जाता था।

16 दिसंबर की रात को वास्को द गामा के साथियों ने इन्फांते में ही विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातः उन्होंने अफ्रीका के तट के साथ-साथ यात्रा

आरंभ की। उस दिन शाम तक वे यात्रा करते रहे। परंतु शाम को हवा का एक तेज झोंका आया। वह उन्हें पूर्व की ओर बहा ले गया। वे अपने रास्ते से भटक गए। मंगलवार, 19 दिसंबर को दिन डूबने तक वे सही रास्ते की खोज में लगे रहे। सूर्यास्त के बाद उनके सौभाग्य से हवा पश्चिम की ओर अर्थात् अफ्रीका के तट की ओर चलने लगी। इससे उन्हें तट की ओर आने में सहायता मिली। उस रात उन्होंने एक स्थान पर समुद्र में ही अपने जहाज़ रोक दिए। 20 दिसंबर को प्रातः वे सीधे तट की ओर चल पड़े और 10 बजे वे फिर से इल्हयो द क्रूज़ अर्थात क्रौस द्वीप के निकट जा पहुँचे। इसी स्थान पर आगुलहास नामक एक समुद्री धारा उत्तर से दक्षिण की ओर बड़ी तेज़ी से बहती थी। वह धारा वास्को द गामा के जहाज़ों की दिशा के विपरीत बह रही थी। इससे उसे और उसके दल को घबराहट हो रही थी। उन्हें डर था कि वे उसे पार भी कर सकेंगे या नहीं। 16 से 20 दिसंबर तक वे भगवान से सहायता की प्रार्थना करते रहे। साथ ही अपने जहाज़ों को समुद्री तूफान से बचाने की कोशिश करते रहे। वह समय उनकी कठिन परीक्षा का समय था। यदि वास्को द गामा को उस समय सफलता न मिलती तो उसका भारत पहुँचने का स्वप्न भंग हो जाता। परंतु उसके सौभाग्य से अचानक अनुकूल तेज हवा चलने लगी। उसकी सहायता से वे प्रतिकूल धारा को पार करने में सफल हो गए और आगे बढ़ने लगे। इसके लिए उन्होंने भगवान को धन्यवाद दिया और प्रार्थना की कि वे उनकी आगे की यात्रा भी इसी प्रकार सफल बनावें।

25 दिसंबर को क्रिस्मस का दिन था। उस दिन तक वास्को द गामा और उसके साथियो ने रियो द इन्फांते से सत्तर लीग दूर तक अफ्रीका के तट की खोज कर ली थी। उस दिन रात्रि भोज के बाद उन्होने देखा कि

उनके एक जहाज़ के मस्तूल में शिखर से कुछ गज नीचे एक छेद हो गया। उन्होंने जल्दी से उसकी काम चलाऊ मरम्मत की और अपनी यात्रा जारी रखी।

बृहस्पतिवार, 28 दिसंबर को उन्होंने तट के निकट अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। वह स्थान नैटाल बंदरगाह के उत्तर में था। वहाँ उन्होंने मछलियों का शिकार किया। वहीं पर उनके जहाज़ के एक लंगर की रस्सी टूट गई जिससे उनका एक लंगर समुद्र में रह गया। उसी दिन सूर्यास्त होते-होते उन्होंने फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी। इस बार वे तट से काफी दूर चले गए और समुद्र में आगे बढ़ने लगे। कुछ ही दिनों में उनके पीने का पानी खतम होने लगा पर वे घबराए नहीं। उन्होंने पानी बहुत कम मात्रा में पीना शुरू कर दिया। अपना भोजन वे समुद्र के खारे पानी से ही पकाने लगे। लेकिन इस तरह यात्रा करना कठिन हो गया। अतः वास्को द गामा ने अपने पोतवाहकों को आदेश दिया कि वे जहाज़ों को तट के निकट किसी बंदरगाह में ले जाएँ।

लगभग चौदह दिन के बाद वे फिर तट के निकट पहुँचे। बृहस्पतिवार, 11 जनवरी 1498 को वास्को द गामा को एक छोटी सी नदी दिखाई दी। उसे पीने के पानी की अत्यधिक आवश्यकता थी। अतः उस नदी के निकट ही उसने अपने जहाज़ खड़े कर दिए। 12 जनवरी को वह अपने साथियों के साथ नौकाओं में बैठकर तट की ओर गया। वहाँ उन्होंने नीग्रो स्त्री-पुरुषों का एक समूह देखा। वे लोग लंबे क़द के थे। उनका मुखिया भी उनके साथ था। वास्को द गामा ने मार्तिन अफोंसो और एक अन्य साथी को तट पर जाकर उनसे मिलने का आदेश दिया। वहाँ एकत्रित लोगों ने अतिथियों का सत्कार किया। यह देखकर वास्को द गामा बहुत खुश हुआ। उसने

अपनी ओर से उनके मुखिया के लिए भेंट के रूप में एक जैकिट, एक लाल पतलून, एक मूर टोपी और एक बाजूबंद भेजा। इन्हें पाकर उनका मुखिया खुशी के मारे फूला न समाया। उसने मार्तिन से कहा कि उसे उसके प्रदेश से जो भी चाहिए वह ले सकता था। उस रात मार्तिन अपने साथी को लेकर मुखिया के साथ उसके गाँव गया। वास्को द गामा अपने साथियों को लेकर जहाज़ पर लौट गया।

गाँव जाते समय रास्ते में वहाँ के मुखिया ने मार्तिन द्वारा भेंट किए हुए वस्त्र धारण कर लिए और बड़े संतोष एवं गर्व के साथ उसने अपने लोगों को वे वस्त्र दिखाए। लोग बड़े खुश हुए और उन्होंने ताली बजाकर उनका स्वागत किया। गाँव पहुँचकर भी मुखिया ने नए वस्त्र नहीं उतारे। उन्हीं वस्त्रों में वह अपने साथियों और अतिथियों के साथ गाँव की गलियों को पार करता हुआ अपने घर जा पहुँचा। उसके आदेश के अनुसार उसके लोगों ने अतिथियों को एक अहाते में ठहरा दिया। उन्हें ज्वार का दलिया और एक चिड़िया भोजन के लिए दी। उनके आगमन से गाँव में बड़ी चहल-पहल रही। वे लोग उन्हें देखने के लिए बहुत उत्सुक थे। रात भर मुखिया के अहाते में लोगों का ताँता लगा रहा।

दूसरे दिन प्रभात होने पर मुखिया ने अपने अतिथियों से भेंट की और उन्हें अपने जहाज़ों पर वापस चले जाने को कहा। अतिथियों को मार्ग दिखाने के लिए उसने अपने दो आदमी भेजे तथा कैप्टेन-मेजर वास्को द गामा के लिए भेंट स्वरूप चिड़ियाँ भी अतिथियों को दे दीं। विदा करते समय उसने उन्हें यह भी बताया कि वह उनकी भेंट को अपने प्रदेश के राजा को भी दिखाएगा। मार्तिन अपने साथी के साथ जब वापस लौटा तो रास्ते में और भी स्थानीय लोग उनके साथ हो लिये। समुद्र-तट तक

पहुँचते-पहुँचते उनकी संख्या लगभग दो सौ हो गई।

घनी आबादीवाला वह प्रदेश अनेक खंडों में विभाजित था। उन पर कई शासक राज्य करते थे। अतः वास्को द गामा ने उस प्रदेश का नाम तैरा दोस फ्यूमोस या केवल फ्यूमोस अर्थात 'छोटे-छोटे शासकों का देश' रखा। उसने देखा कि वहाँ की स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक थी। मार्तिन के साथ जो लोग आए थे उनमें प्रत्येक पुरुष के पीछे दो स्त्रियाँ थीं। उनके मकान फूस के बने हुए थे। लोगों के पास लंबे-लंबे धनुष-बाण थे। उनके भालों पर लोहे के नोंकदार फाल लगे हुए थे। उनके यहाँ ताँबा बहुतायत से होता था। वे लोग अपने हाथ-पैरों और घुँघराले बालों में ताँबे के आभूषण पहनते थे। वहाँ पर टिन भी होता था। उनकी तलवारों के मुट्ठे टिन के बने होते थे और उनकी म्यानें हाथी दाँत की बनी होती थीं। उन्हें सूती वस्त्र बहुत पसंद थे। वे कमीज़ें खरीदने के बहुत इच्छुक थे। कमीज़ों के बदले में वे अपना बहुत सारा ताँबा देने को सदैव तैयार रहते थे। वे समुद्र के पानी को सुखाकर नमक बनाते थे। पानी ले जाने के लिए उनके पास बड़े-बड़े तुंबे होते थे।

वास्को द गामा और उसके साथी उस स्थान के समीप पाँच दिन तक रुके। वहाँ से उन्होंने अपनी आवश्यकता भर का पानी लिया। वे और भी पानी लेना चाहते थे। परंतु अचानक अनुकूल हवा चल पड़ी। वास्को द गामा ने उसका लाभ उठाने का निश्चय किया। उसने अपने साथियों को शीघ्र ही यात्रा आरंभ करने का आदेश दिया। वहाँ के निवासियों ने खुले दिल से वास्को द गामा के साथियों को पानी दिया। उन्हें उनकी नावों तक पहुँचने में सहायता भी की। इससे वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने उनके प्रदेश को तैरा द बोआ जैंते अर्थात 'भले लोगों का देश' नाम दिया।

उनकी नदी को ताँबे की बहुतायत के कारण रियो दो कोब्रे अर्थात 'ताँबे की नदी' नाम दिया।

आगे चलकर सोमवार, 22 जनवरी को वास्को द गामा का दल अफ्रीका के उस तट के निकट पहुँचा जहाँ किलीमंन नदी समुद्र में मिलती थी। वास्को द गामा ने इस नदी का नाम रियो दौस बौं सिगनेस अर्थात 'अच्छे संकेतोंवाली नदी' रखा। उसके वर्णन के अनुसार वहाँ की भूमि निचली और दलदली थी। यह ऊँचे-ऊँचे वृक्षों से घिरी हुई थी। उन वृक्षों पर विविध प्रकार के फल लगे हुए थे। वहाँ के लोग उन फलों को बड़े चाव से खाते थे। उन लोगों का रंग काला था। परंतु उनके बदन की बनावट अच्छी थी। वे लोग नंगे रहते थे। सिर्फ अपनी कमर को रुई के एक टुकड़े से ढक लेते थे। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ रुई के बड़े टुकड़ों का प्रयोग करती थीं। उनकी युवतियाँ देखने में बहुत सुंदर थीं। उनके होठों में तीन जगहों पर छेद होते थे जिनमें वे टिन के मुड़े हुए टुकड़े पहनती थीं। वे लोग वास्को द गामा के दल को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। जब वास्को द गामा के साथी उनके गाँव में पानी लेने आए तो वे अपनी नौकाओं में बैठकर उनके पास गए और अपनी कुछ चीजें उन्हें दीं।

कुछ समय के बाद उनके दो कुलीन व्यक्ति वास्को द गामा के दल के पास आए। उनका आकार लंबा-चौड़ा था। वे अपने सिरों पर टोपी पहने हुए थे। एक व्यक्ति की टोपी के किनारों पर रेशम की कढ़ाई का काम था और दूसरे की टोपी साटन की बनी हुई थी। वे बड़े ही स्वाभिमानी थे। वास्को द गामा के साथियों ने उन्हें कुछ चीजें दीं। परंतु उन्होंने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उन दो व्यक्तियों के साथ एक नवयुवक भी था जो किसी दूर देश से आया था। उससे वास्को द गामा को पता लगा कि उसने

तो पहले ही इस तरह के बड़े जहाज़ देखे थे। यह जानकर वास्को द गामा के दल को बड़ी खुशी हुई। उन्हें लगा कि अब उनका गंतव्य बहुत दूर नहीं था। जहाज़ों के निकट नदी के तट पर कुलीन लोगों ने कुछ झोपड़ियाँ बना रखी थीं। उनमें वे सात दिन तक रहे। वहाँ से वे प्रतिदिन अपनी कुछ वस्तुएँ वास्को द गामा के जहाज़ों तक भेजा करते थे। उनके बदले में वे उनसे कुछ कपड़े ले जाते थे जिन पर गेरुए रंग के चित्र बने थे। जब इस काम से उनका जी भर गया तब एक दिन वे अपनी छोटी नौकाओं में सवार होकर किलीमन नदी के ऊपर की ओर वापस लौट गए।

वास्को द गामा का दल 24 जनवरी से 24 फरवरी 1498 तक अर्थात् बत्तीस दिनों तक उसी नदी में पड़ाव डाले रहा। वहाँ उन्होंने अपने जहाज़ों को एक स्थान पर रोककर उनकी सफाई की। ध्वज पोत राफेल के मस्तूल की मरम्मत की और फिर अपने जहाज़ों में पीने का पानी भरा।

वहाँ वास्को द गामा के दल के कई लोग बीमार भी पड़े। उनके हाथ और पैरों में सूजन आ गई। उनके मसूड़े फूल गए जिसके कारण वे खाना भी नहीं खा सके। इस तरह बीमार लोग तो पीड़ित थे ही उनके अन्य साथी भी उनके लिए चिंतित थे। पाओलो द गामा ने रोगियों की दिन-रात सेवा की। वह उनके पास जाकर बैठता और उन्हें सांत्वना दिलाता। पुर्तगाल से चलते समय वह कुछ औषधियाँ केवल अपने उपयोग के लिए लाया था। उन औषधियों को भी उसने अपने रोगी साथियों में बाँट दिया। जब वे सब ठीक हो गए तब उन्होंने आगे की यात्रा आरंभ की।

यात्रा आरंभ करने से पहले वास्को द गामा के दल ने रियो दोस बोंस सिगनेस नदी के तट पर साओ रफेल स्तंभ की स्थापना की। वे इस स्तंभ को ध्वज पोत राफेल में पुर्तगाल से ही लेकर चले थे।

7

मोज़ंबीक और साओ जार्ज द्वीप में प्रवेश



शनिवार, 24 फरवरी को वास्को द गामा का दल अपने जहाज़ों को तट से दूर खुले समुद्र में ले गया। उस रात उन्होंने अपने जहाज़ समुद्र में ही रखे। वहाँ से भूतट का दृश्य बहुत ही सुहावना लगता था। दूसरे दिन रविवार, 25 फरवरी को वे वहीं रुके रहे और उस दृश्य का आंनद लेते रहे। शाम के समय उन्हें तीन छोटे-छोटे द्वीप दिखाई दिए। उनमें से दो कैज़ुआरीना और ऐपीडैंड्रोन तो बड़े-बड़े वृक्षों से ढके हुए थे। तीसरा द्वीप सिल्वा एक दम वीरान था। सिल्वा के पास दो फोगो तथा क्राउन नामक दो और द्वीप थे। उन्हें वास्को द गामा का दल नहीं देख पाया। इस तरह इन द्वीपों के आस-पास समुद्र में जहाँ-तहाँ घूमते रहे और मार्च तक यात्रा करते रहे। दिन में वे यात्रा करते थे और रात में समुद्र में ही अपने जहाज़ों को रोक देते थे।

रियो दौस बौं सिगनेस नदी से आगे मोज़ंबीक तक की यात्रा में वास्को द गामा दावने नाम के एक मूर को अपने साथ ले गया था। दावने ने वास्को द गामा के मार्ग-दर्शन में सहायता की होगी। यही कारण है कि वह दावने को 'तय्यब' कह कर पुकारने लगा था। 'तय्यब' का अरबी में अर्थ होता है 'अच्छा'।

बृहस्पतिवार, 1 मार्च की शाम को वास्को द गामा के दल को मोज़ंबीक द्वीप दिखाई पड़ा। उस रात उन्होंने अपने जहाज़ समुद्र में ही रखे। शुक्रवार, 2 मार्च को प्रातः उन्होंने द्वीप के निकट पहुँचकर अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। तभी उस द्वीप के कुछ निवासी अपनी सात-आठ छोटी नावों में बैठकर उनके पास आ गए। उन्होंने अपनी दुंदुभियाँ बजानी आरंभ कर दीं। उनमें से कुछ लोग वास्को द गामा के जहाज़ों पर आ गए। उन्होंने वास्को द गामा के साथियों के साथ भोजन किया और जब वे संतुष्ट हो गए तब वे अपनी नावों पर वापस चले गए।

वास्को द गामा ने निकोलो कोयल्हो से कहा कि वह खाड़ी के अंदर प्रवेश करे और उसके निकटवर्ती प्रदेश के निवासियों के बारे में जानकारी प्राप्त करे। उसने वैसा ही किया। उसने देखा कि वहाँ के निवासी काले रंग के थे। उनकी आकृति अच्छी थी। वे अरबी भाषा बोलते थे। उनके वस्त्र बढ़िया सूती कपड़े के बने थे। उन पर विविध रंगों की धारियाँ थीं। उन पर काफी कारीगरी भी की गई थी। वे सब टोपियाँ पहने थे। उन टोपियों के किनारों पर रेशम और सोने के तारों से कढ़ाई की गई थी। वे लोग व्यापार करते थे। अरब के व्यापारियों से उनके अच्छे संबंध थे। अरब के व्यापारियों के चार जहाज़ उस समय मोज़ंबीक के बंदरगाह में खड़े थे। उन जहाज़ों में सोना, चाँदी, चाँदी की अँगूठियाँ, मोती, हीरे, जवाहरात, लौंग,

काली मिर्च, सोंठ आदि बहुमूल्य वस्तुएँ भरी हुई थीं। मोज़ंबीक के निवासी उन सब का प्रयोग करते थे। वास्को द गामा के साथी उन्हें पाने के लिए ललचा उठे। परंतु उन्हें पता लगा कि वे सब चीज़ें अरब के व्यापारी भारत से लाए थे जहाँ वे बहुतायत से मिलती थीं। यह जानकारी उन्हें एक नाविक से मिली थी जो उस समय वास्को द गामा के साथ था। उन्होंने सोचा कि भारत तो वे जा ही रहे हैं। उन चीज़ों को वहीं से खरीद लेंगे। अतः उन्होंने वहाँ से इन चीजों को खरीदने का विचार छोड़ दिया।

वहीं वास्को द गामा को यह भी बताया गया था कि प्रैस्तर जोन का निवास स्थान भी मोज़ंबीक के निकट ही था। पुर्तगाल से चलने से पहले वास्को द गामा को विशेषरूप से कहा गया था कि वह अपनी यात्रा के बीच प्रैस्तर जोन के बारे में अवश्य पता लगाए। उसे यह भी समझाया गया था कि प्रैस्तर जोन ईथियोपिया का एक शक्तिशाली ईसाई सम्राट था। मोज़ंबीक में वास्को द गामा को यह भी पता चला कि जब वह अफ्रीका के पूर्वी तट के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ेगा तब उसे अनेक ऐसे नगर मिलेंगे, जिन पर प्रैस्तर जोन राज करता है। उन नगरों में बहुत बड़े-बड़े व्यापारी रहते थे। उनके पास बड़े-बड़े जहाज़ थे। मोज़ंबीक के मुसलमानों के पास दो ईसाई कैदी भी थे जो भारत के निवासी थे।

ये सब बातें जानकर वास्को द गामा के दल को बेहद प्रसन्नता हुई। उन्हें ऐसा लगा जैसे कि वे भारत पहुँच गए हों। खुशी के मारे वे चिल्लाने लगे। उन्होंने भगवान से प्रार्थना की कि वे उन्हें स्वस्थ रखें जिससे कि वे भारत पहुँच कर उसे स्वयं अपनी आँखों से देख सकें।

मोज़ंबीक द्वीप का शासक एक मुसलमान सुल्तान था। वह प्रायः अपने कुछ साथियों के साथ वास्को द गामा के जहाज़ों पर जाया करता था।

मोज़ंबीक और साओ जार्ज द्वीप में प्रवेश

वास्को द गामा ने अपने अनेक अच्छे-अच्छे खाद्य पदार्थ उसकी सेवा में प्रस्तुत किए। टोप, मूँगे एवं अन्य बहुत सी कीमती वस्तुएँ उसे भेंट में दीं। सुल्तान ने वास्को द गामा से लाल रंग का कपड़ा माँगा जो संयोग से उसके पास था। अतः वास्को द गामा ने वह उसे तुरंत दे दिया।

एक दिन वास्को द गामा ने सुल्तान को भोजन के लिए आमंत्रित किया। उस दिन उसके पास बहुत से अंजीर और मिष्ठान्न उपलब्ध थे। जब सुल्तान ने भोजन कर लिया तब वास्को द गामा ने उससे निवेदन किया कि आगे के मार्ग-दर्शन के लिए वह उसके साथ दो पायलट भेज दे। सुल्तान ने यह निवेदन तुरंत स्वीकार कर लिया और वास्को द गामा को दो पायलट दे दिए। वास्को द गामा ने उन दोनों में से प्रत्येक को मोज़ंबीक में प्रचलित मिटकल नामक तीस-तीस सोने के सिक्के तथा दो-दो भारतीय रेशम के बने अंगवस्त्र दिए। साथ ही उनसे यह तय किया कि एक समय में उन दोनों में से एक ही पायलट तट पर जा सकेगा। उसकी अनुपस्थिति में दूसरे पायलट को जहाज़ पर ही रहना होगा। दोनों पायलटों ने खुशी से वास्को द गामा की यह शर्त मान ली।

शनिवार, 10 मार्च को वास्को द गामा के जहाज़ साओ जार्ज द्वीप के निकट समुद्र में रुके। यह द्वीप मोज़ंबीक से एक लीग दूर था। वास्को द गामा का एक पायलट इसी द्वीप का निवासी था। कुछ समय के लिए वह वहाँ गया। पर लौटा नहीं। अतः वास्को द गामा और निकोलो कोयल्हो दो नावों में सवार होकर उस पायलट की खोज में निकले। तभी उस द्वीप के निवासी पाँच-छः नावों में भरकर आए और उन्होंने उन्हें घेर लिया। उनके पास लंबे-लंबे तीर कमान और पुरानी क़िस्म की तलवारें थीं। यह देखकर वास्को द गामा ने अपनी बंदूकें दगवाईं। इससे वे लोग घबरा गए और

तेज़ी से भाग गए। वास्को द गामा भी अपने साथियों सहित जहाज़ों पर वापस लौट गया।

साओ जार्ज द्वीप के निकट वास्को द गामा ने कुछ जहाज़ भी देखे जो वहाँ के निवासियों के ही थे। वे काफी बड़े आकार के थे। उनमें कीलों का प्रयोग नहीं किया गया था। उनके तख़्तों को जूट की रस्सियों से बाँधा गया था। उनके नाविकों के पास कुतुबनुमा थे जिनकी सहायता से वे अपने जहाज़ों को सही दिशा में चलाते थे और उनके संचालन के लिए उपयोगी चार्ट बनाया करते थे।

साओ जार्ज द्वीप में ताड़ जैसे वृक्ष होते थे। उन पर बड़े-बड़े नारियल लगते थे। खरबूजे और खीरे भी वहाँ बहुतायत से पैदा होते थे। वास्को द गामा और उसके साथियों ने वे फल बड़े मन से खाए।

एक दिन वहाँ के बंदरगाह का अध्यक्ष निकोलो कोयल्हो से मिला। निकोलो कोयल्हो ने उसे एक लाल हैट भेंट किया। उसने अपनी ओर से निकोलो कोयल्हो को एक काले रंग की माला दी। उस माला से वह प्रार्थना किया करता था। जब वह जाने लगा तब निकोलो कोयल्हो के नाविक उसे अपनी नाव में बिठाकर तट तक छोड़ने गए। इससे वह बहुत प्रसन्न हुआ। वह उन्हें अपने घर ले गया। वहाँ उन्हें भोजन करवाया और उन्हें विदा करते समय खजूरों से भरा एक जार निकोलो कोयल्हो के लिए दिया। उन खजूरों को सुरक्षित रखने के लिए उनमें लौंग और जीरा मिला दिया था। बाद में वास्को द गामा के लिए भी उसने कई चीज़ें भेजीं। उसने यह सब इस लिए किया कि वह उन लोगों को तुर्की का मुसलमान समझता था। उनसे वह तुर्की के धनुष तथा वहाँ के कानून की पुस्तकों को प्राप्त करना चाहता था। लेकिन जब उसे उनसे वे चीज़ें नहीं मिलीं तो उसने उन्हें धोखे

से मारने की कोशिश की। पर वे वहाँ से बचकर निकल गए।

रविवार, 11 मार्च को वास्को द गामा के दल ने साओ जार्ज द्वीप से आगे की यात्रा आरंभ की। उन्होंने अपने जहाज़ों में रास्ते के भोजन के लिए बहुत सारे मुर्गे, कबूतर और बकरे इकट्ठे कर लिए थे। ये उन्होंने द्वीपवासियों से काँच के दाने देकर लिए थे। इस बार की यात्रा में वास्को द गामा के साथी अपनी दिशा खो बैठे और एक चक्कर में फँस गए। साओ जार्ज द्वीप से वे चले तो मोज़ंबीक की ओर थे। परंतु 15 मार्च की शाम को वे साओ जार्ज द्वीप के निकट ठीक उसी स्थान पर वापस जा पहुँचे जहाँ 11 मार्च तक वे अपने जहाज़ों के लंगर डाले हुए थे। अबकी बार वे वहाँ आठ दिन तक रुके क्योंकि हवा उनके अनुकूल नहीं थी।

इसी बीच मोज़ंबीक के बादशाह ने वास्को द गामा से मित्रता करने के लिए संदेश भेजा। उसका संदेशवाहक एक गोरे रंग का अरबी मुसलमान शैरिफ था। वह शराब बहुत पीता था।

वहाँ रुके-रुके वास्को द गामा के साथी अपने जहाज़ों में पहले से रखा हुआ पानी पीते रहे। आखिर में वह पानी खतम होने लगा। साओ जार्ज द्वीप का पानी खारा था। अतः मीठा पानी लेने के लिए उन्होंने बृहस्पतिवार, 22 मार्च को मोज़ंबीक बंदरगाह में प्रवेश किया। आधी रात होने पर वास्को द गामा और निकालो कोयल्हो कुछ आदमियों को साथ लेकर निकटवर्ती भूमि पर पानी की खोज करने के लिए गए। रात भर पानी की खोज में भटकते रहे। परंतु उन्हें पानी नहीं मिला। सुबह होने पर वे अपने जहाज़ों पर वापस चले गए।

23 मार्च को शाम होने पर उन्होंने फिर से पानी खोजने का प्रयत्न किया। इस बार जब वे अपनी नौकाएँ पानी के स्थान के पास ले जाने लगे

तो वहाँ के निवासियों ने उनका विरोध किया। उन लोगों के पास तीर, तलवारें तथा अन्य अस्त्र थे। उन्हें भगाने के लिए वास्को द गामा ने अपनी बंदूकों से तीन फायर करवाए। इससे दो नीग्रो घायल होकर वहीं मर गए। शेष घबरा गए और झाड़ियों में भाग गए। अतः वास्को द गामा के साथी पानी लेने में सफल हो गए। उन्होंने जी भर कर पानी पिया और कुछ अपने साथ ले लिया। उसके बाद वे अपने जहाज़ों को लेकर वापस चले गए।

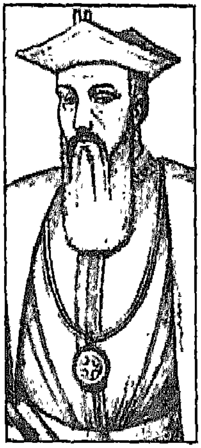
साओ जार्ज द्वीप से प्रस्थान करने से पहले वास्को द गामा इस बात के लिए बहुत उत्सुक था कि वह उन दो भारतीय ईसाइयों को छुड़ाकर अपने साथ ले ले जो मोज़ंबीक में क़ैद थे। उसे आशा थी कि वे उसकी आगे की यात्रा में सहायक होंगे। वह उस नीग्रो को भी अपने साथ ले जाना चाहता था जो कुछ समय पहले उसका साथ छोड़कर भाग गया था। उनमें से कोई भी अपने आप तो उसके पास आने को तैयार था नहीं। अतः उसने कुछ स्थानीय नीग्रो लोगों को बंदी बनाने की योजना बनाई।

रात के भोजन के बाद वास्को द गामा के कुछ साथी अपनी नावों में बैठकर कुछ दूर समुद्र में गए और उन्होंने दो स्थानीय नौकाओं को पकड़ लिया। एक नाव से उन्होंने चार नीग्रो लोगों को अपने कब्ज़े में ले लिया। दूसरी नाव से उन्हें बढ़िया सूती कपड़े से बनी अनेक चीज़ें, ताड़ के पत्तों की बनी टोकरियाँ, मक्खन से भरा काँच का एक जार, सुगंधित पानी से भरी शीशियाँ, ज्वार के दानों से भरी टोकरियाँ और कुछ कानूनी पुस्तकें प्राप्त हुईं। पुस्तकें तो वास्को द गामा को सौंप दी गईं जिससे कि वह पुर्तगाल लौटने पर उन्हें अपने राजा को दे सके। शेष वस्तुएँ उन्होंने अपने नाविकों में बाँट दीं।

रविवार, 25 मार्च को वास्को द गामा के लोगों ने पीने का पानी अपने जहाज़ों में भरा। सोमवार, 26 मार्च को वे लोग अपनी सशस्त्र नावों में बैठकर एक गाँव तक गए। उन्हें देखकर वहाँ के निवासी अपने-अपने घरों में घुस गए। घरों में से ही उन्होंने उनसे कुछ बातें कीं। लेकिन वे अपने घरों से बाहर नहीं निकले। गाँव से वापस लौटते समय वास्को द गामा के साथियों ने उन पर कुछ बम फेंके और अपने जहाज़ों पर चले गए। निहत्थे लोगों पर इस प्रकार बम फेंकना एक अमानवीय कृत्य था।

मंगलवार, 27 मार्च को वास्को द गामा का दल मोज़ंबीक से रवाना हुआ। कुछ यात्रा के बाद वह साओ जार्ज द्वीप के निकट पहुँचा। वहीं उन्होंने अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए क्योंकि हवाएँ उनके प्रतिकूल थीं। वहाँ उन्हें तीन दिन तक रुकना पड़ा। उन दिनों वे भगवान से प्रार्थना करते रहे कि हवाओं का रुख बदल जाए— उनका बहाव उनके अनुकूल हो

8
मार्ग-दर्शक की खोज



बृहस्पतिवार, 29 मार्च को वास्को द गामा के दल ने साओ जार्ज द्वीप से प्रस्थान किया। अट्ठाइस लीग यात्रा करने के बाद शनिवार, 31 मार्च को वे कोरिंबा द्वीप समूह के निकट पहँचे। दूसरे दिन वे इल्हा दो अकूतादो अर्थात 'कोड़े लगे व्यक्ति का द्वीप' के पास पहुँचे। उस द्वीप का यह नाम वास्को द गामा ने ही रखा था क्योंकि उसने अपने एक स्थानीय पायलट को झूठ बोलने के लिए वहाँ कोड़े लगवाए थे। वह द्वीप अफ्रीका के मुख्य तट के निकट था। इसके आस-पास और भी कई द्वीप थे। उन सब में लोग रहते थे। वास्को द गामा ने देखा कि उन द्वीपों और अफ्रीका के तट के बीच स्थानीय नाविकों के पास अपने जहाज़ थे। वे उन्हें चलाया करते थे।

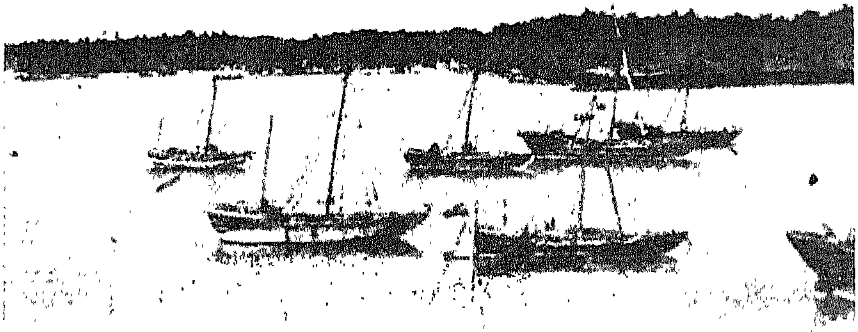
वास्को द गामा का दल उन द्वीपों के पास गया और फिर आगे निकल गया। उनका लक्ष्य किल्वा द्वीप था। किल्वा का राजा तटवर्ती राजाओं में

सबसे अधिक शक्तिशाली था। रास्ते में वास्को द गामा के दल को कई द्वीप मिले। किंतु वे किल्वा द्वीप तक नहीं पहुँच सके। इसका कारण था हवा का बहाव जो उनके विपरीत था। स्थानीय पायलटों की सलाह पर उन्होंने वहाँ जाने का विचार छोड़ ही दिया। उसके बाद उन्होंने मोंबासा (आधुनिक कीन्या का एक नगर) पहुँचने का संकल्प किया। उन्हीं पायलटों से उन्हें पता लगा कि मोंबासा पहुँचने के लिए उन्हें चार दिन तक यात्रा करनी होगी।

मोंबासा के रास्ते में भी वास्को द गामा को कई बार प्रतिकूल हवाओं से संघर्ष करना पड़ा। अनेक बार उसे दिशा बदलनी पड़ी। रास्ते में उसे मफिया द्वीप मिला। पर वह उसके दक्षिण से ही आगे निकल गया। छः अप्रैल को सूर्योदय से दो घंटे पहले ही उसका ध्वजपोत राफेल मुख्य भूमि से दो लीग दूर छिछली भूमि में फँस गया। तुरंत ही अन्य जहाज़ों को वास्को द गामा ने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर चेतावनी दे दी। उन्होंने तुरंत अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। उन्होंने अपनी नावें तैयार कर लीं जिससे वे वास्को द गामा की सहायता कर सकें। बाद में एक ज्वार आया। उसने अपने वेग से राफेल को उस छिछली भूमि से निकाल कर बाहर फेंक दिया। तब तो वास्को द गामा और उसके साथियों की खुशियों का ठिकाना न रहा। उन्होंने उस स्थान का नाम 'सैरास द साओ राफेल' रख दिया। वैसे वह स्थान तमुगता क़सबे के पास था। इसी स्थान के निकट उन्होंने पहाड़ों की एक सुंदर श्रृंखला देखी। उसका भी उन्होंने 'सैरास द साओ राफेल' नाम रख दिया।

जब राफेल छिछली भूमि में फँसा था तब वहाँ के स्थानीय निवासी दो डोंगियों में बैठकर वास्को द गामा के साथियों के पास पहुँचे। उनमें से एक

डोंगी में अच्छे स्वादिष्ट संतरे भरे हुए थे। पुर्तगाल में तो इतने अच्छे संतरे पैदा ही नहीं होते थे। अतः जब उन लोगों ने ये संतरे वास्को द गामा के साथियों को दिए तो उन्होंने उन्हें बड़े चाव से खाया।



मोंबासा के बंदरगाह में स्थानीय नौकाएँ

दूसरे दिन डोंगियों के दो मुसलमान नाविकों ने वास्को द गामा के दल का मार्ग-दर्शन किया और मोंबासा तक पहुँचने में उसकी सहायता की यह जानकर भी कि वह ईसाई था। शनिवार, 7 अप्रैल को वास्को द गामा का दल मोंबासा के निकट पहुँच गया। दल के लोग तुरंत बंदरगाह में नहीं घुसे। वहाँ जाने से पहले वे वहाँ के वातावरण को समझना चाहते थे। अतः उन्होंने बंदरगाह से दूर ही समुद्र में लंगर डाल दिए।

कुछ स्थानीय लोगों ने उन्हें देख लिया। दो स्थानीय नाविक एक नौका में बैठकर उनके पास आए। पर वे उन्हें देखकर ही वापस चले गए। फिर जब आधी रात हुई तब लगभग सौ आदमी एक नाव में सवार होकर वास्को द गामा के जहाज़ के पास आए। उनके पास ढाल और तलवारें थीं। उन्होंने वास्को द गामा के जहाज़ पर चढ़ने की कोशिश की। परंतु वास्को द गामा के साथियों ने उन सबको जहाज़ पर नहीं चढ़ने दिया। उनमें से सिर्फ चार या पाँच प्रमुख लोगों को जहाज़ पर आने दिया। वे लोग कुछ घंटे वास्को द गामा के पास रहे और फिर वापस चले गए।

रविवार, 8 अप्रैल को मोंबासा के बादशाह ने वास्को द गामा को एक भेड़, बहुत सारे संतरे, नीबू, गन्ने तथा एक अँगूठी भेजी। वे सारी चीज़ें बादशाह के दो आदमी लेकर आए थे। वे गोरे रंग के थे। उन्होंने अपने बादशाह की ओर से वास्को द गामा को सुरक्षा और सहायता का भी आश्वासन दिया। बाद में चार और प्रतिष्ठित व्यक्ति उससे मिलने के लिए आए।

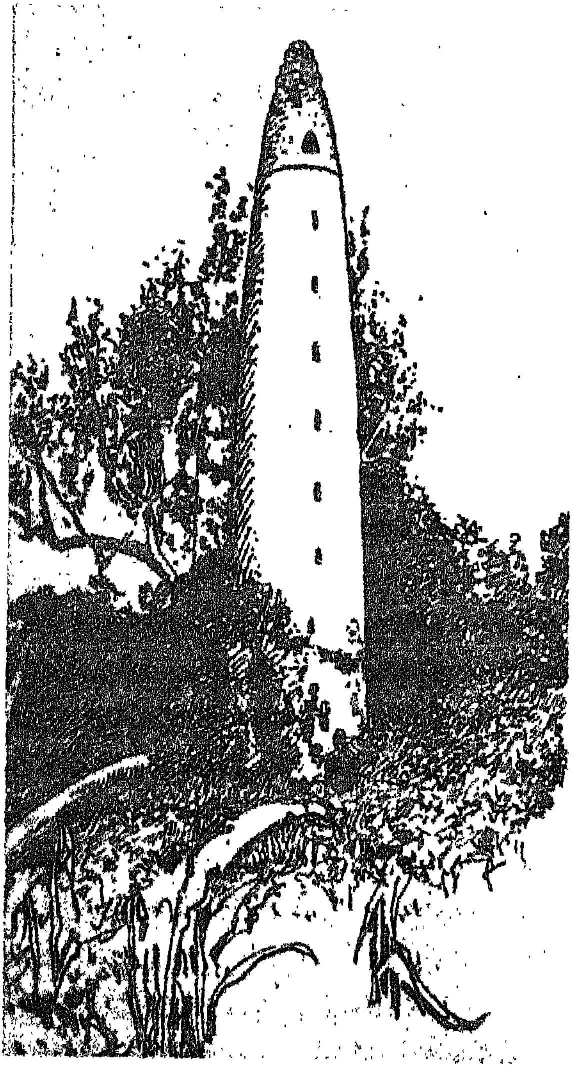
बदले में वास्को द गामा ने बादशाह के लिए एक मूँगों का हार भेजा। उसने अपने दो आदमी भी बादशाह के पास भेजे। जब वे समुद्र-तट पर पहुँचे तो वहाँ के निवासियों का एक समूह उन्हें देखने के लिए इकट्ठा हो गया। वे लोग उनके साथ-साथ बादशाह के महल के दरवाजे तक गए। बादशाह तक पहुँचने से पहले उन्हें चार दरवाज़े पार करने पड़े। प्रत्येक दरवाज़े पर खुली तलवार लिए एक-एक संतरी खड़ा था।

बादशाह ने वास्को द गामा के प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उसके आदेशानुसार उन्हें सारा नगर दिखाया गया। नगर में भ्रमण करते समय वे दो व्यापारियों के घरों में रुके। वहाँ उन्होंने एक चित्र देखा। वह हिंदुओं के

मान्य देव कपोतेश्वर का चित्र था। वे व्यापारी उस चित्र की पूजा करते थे। नगर-दर्शन के बाद बादशाह ने उन्हें लौंग, काली मिर्च और मक्का के नमूने देकर वापस भेज दिया। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे चाहें तो वे अन्य वस्तुओं को अपने जहाज़ों में भर सकते हैं।

मंगलवार, 10 अप्रैल को वास्को द गामा ने मोंबासा के बंदरगाह में प्रवेश करने का प्रयत्न किया। परंतु उसका एक जहाज़ दूसरे जहाज़ से अचानक टकरा गया। इस कारण वह उस समय वहाँ नहीं जा सका। इसके कुछ ही देर बाद उसके जहाज़ के पिछले हिस्से से जुड़े हुए एक छोटे पोत में बैठे हुए क़ैदियों में झगड़ा शुरू हो गया। क़ैदी मोज़ंबीक के निवासी थे। वास्को द गामा के साथियों ने उन्हें क़ैदी बनाया था ताकि वे उनसे आगे की यात्रा में सहायता ले सकें। उसी समय उसके दो पायलट समुद्र में कूद गए। उनमें से एक तो मोज़ंबीक के सुल्तान ने वास्को द गामा को दिया था। वास्को द गामा के आदमियों ने उन दोनों को डूबने से बचा लिया।

रात होने पर वास्को द गामा ने मोज़ंबीक से लाए दो क़ैदियों के बदन पर खौलता हुआ तेल डलवाया तथा उनसे पूछा कि उक्त घटना का क्या कारण था। उन क़ैदियों ने उत्तर दिया कि उन्होंने यह सब बदला लेने के लिए किया था। उन्हें आदेश दिया गया था कि जैसे ही वास्को द गामा के आदमी उनका पीछा करते हुए बंदरगाह में प्रवेश करें वैसे ही उन्हें क़ैदी बना लिया जाए। वास्को द गामा ने एक बार फिर उनके ऊपर खौलता हुआ तेल डलवाया। उससे इतनी अधिक यातना हुई कि उनमें से एक क़ैदी हाथ बँधे होने पर भी समुद्र में कूद गया। सुबह होते-होते दूसरे ने भी इसी प्रकार समुद्र में कूद कर आत्म हत्या कर ली। उसी रात को कुछ स्थानीय लोगों ने समुद्र के पानी में डुबकी लगाकर राफेल और बैरिओ जहाज़ों की



मोंबासा के बंदरगाह पर बना एक स्तंभ

रस्सियाँ काटने का असफल प्रयत्न किया। जैसे ही उन्हें पता लगा कि वास्को द गामा के आदमियों ने उन्हें देख लिया वे भाग गए।

मोंबासा एक बड़ा नगर था। वह काफी ऊँचाई पर बसा हुआ था। उसके बंदरगाह में प्रतिदिन बहुत सारे जहाज़ आते थे। इसके प्रवेश द्वार के निकट एक स्तंभ बना हुआ था तथा समुद्रतट पर एक छोटा सा किला बना था। वास्को द गामा के लोग मोंबासा में गए थे। उन्होंने वहाँ बहुत से लोगों को ज़ंजीरों में बँधा हुआ देखा था। वहाँ की जलवायु बहुत ही स्वास्थ्य-वर्धक थी। परिणामस्वरूप वास्को द गामा के वे सभी साथी जो बीमार थे स्वस्थ हो गए। मोंबासा में वास्को द गामा का दल बारह अप्रैल तक रुका। वहाँ रहकर वास्को द गामा इस बात की कोशिश करता रहा कि उसे एक ऐसा पायलट मिल जाए जो उसके दल का भारत तक मार्ग-दर्शन कर सके।

तेरह अप्रैल की सुबह वास्को द गामा के दल ने मोंबासा से प्रस्थान किया। किंतु हवा बहुत धीमी थी। अतः आठ लीग आगे चलकर तट के निकट ही उसने अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। इस बीच उन्होंने एक पायलट की ज़ोर-शोर से खोज की। चौदह अप्रैल को सूर्योदय के समय उन्होंने स्थानीय लोगों की दो नौकाएँ देखीं। सोचा शायद उनमें कोई पायलट हो। अतः उन्हें पकड़ने के इरादे से उन्होंने उनका पीछा किया। सारे दिन उनके पीछे भागते रहे। आख़िर शाम को उन्होंने उनमें से एक नौका को पकड़ लिया। दूसरी नौका उनके चंगुल में नहीं आई। पकड़ी हुई नौका में सत्रह आदमी और एक स्त्री थी जिसका पति मोंबासा का एक प्रतिष्ठित निवासी था। ज्योंही वास्को द गामा के लोग उनके पास पहुँचे त्योंही उन्होंने घबराकर समुद्र में छलाँग लगा दी। वास्को द गामा के नाविक उनके पीछे

कूद गए और उन्हें पानी में से निकालकर अपनी नावों में बैठा लिया। स्थानीय नौका में सोना-चाँदी, अनाज आदि प्रचुर मात्रा में भरा हुआ था। उस सबको उन्होंने ज़बरदस्ती अपने कब्ज़े में कर लिया।

इस घटना के बाद भी उन्होंने अपनी आगे की यात्रा जारी रखी। चौदह अप्रैल को सूर्यास्त के समय वे मालिंदी जा पहुँचे। मालिंदी मोंबासा से तीस लीग उत्तर की ओर था। वह नगर अफ्रीका के पूर्वी तट पर बसा हुआ था तथा वहाँ के प्रमुख नगरों में से एक था। उस समय वह एक समृद्ध नगर था। वहाँ के निवासियों के घर बड़े-बड़े बने हुए थे। उनमें हवा और रोशनी के लिए अनेक खिड़कियाँ बनी हुई थीं। घर की दीवारों पर अच्छी और सुंदर पुताई की गई थी। नगर के चारों ओर ताड़ों के कुंज थे तथा ज्वार और सब्ज़ियाँ अच्छी मात्रा में उगाई जाती थीं। मालिंदी पर एक राजा शासन करता था।

मालिंदी के पास एक अच्छा बंदरगाह था। उसमें बहुत से विदेशी जहाज़ व्यापार के लिए आते रहते थे। मालिंदी और भारतीय राज्यों के बीच व्यापारिक संबंध थे। मालिंदी में ही पहली बार वास्को द गामा की भारतीय व्यापारियों एवं नाविकों से भेंट हुई। वहाँ उस समय चार भारतीय जहाज़ खड़े थे। उन जहाज़ों पर सवार भारतीय कृष्ण के उपासक थे। वे कृष्ण की जय-जय कार करते थे। वास्को द गामा गलती से उन्हें क्राइस्ट का उपासक समझ बैठा और मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। वास्को द गामा की दृष्टि में वे भारतीय क्रिश्चियन थे। उनका रंग साँवला था। वे दाढ़ी रखते थे। उनके सर पर लंबे-लंबे बाल थे। वे कपड़े कम पहनते थे। वे लोग थोड़ी-थोड़ी अरबी भाषा समझ लेते थे क्योंकि अरबी व्यापारियों से उनके पुराने संबंध थे। उन्होंने वास्को द गामा को तट पर न जाने की सलाह दी थी।

मालिंदी के पास समुद्र में वास्को द गामा का दल पंद्रह से तेईस अप्रैल तक रुका रहा। सोमवार, 16 अप्रैल को उसने मालिंदी के राजा के पास अपने प्रतिनिधि द्वारा मित्रता का संदेश भेजा। राजा ने उसका स्वागत किया तथा मैत्री संबंध स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। उसने यह भी आश्वासन दिया कि वह वास्को द गामा को उसकी मनचाही चीज़ें देने को तैयार है। अतः वास्को द गामा और राजा के बीच भेंटों का आदान-प्रदान हुआ। वास्को द गामा ने राजा को मूँगे की दो मालाएँ, एक हैट, छोटी-छोटी घंटियाँ, कुछ विशेष प्रकार के सूती कपड़े तथा एक चिलमची भेजी। बदले में मंगलवार, 17 अप्रैल को राजा ने उसके लिए छः भेड़ें, काली मिर्च, लौंग, सौंफ, सोंठ तथा जायफल भिजवाए। बुधवार, 18 अप्रैल को राजा अपनी नाव में बैठकर वास्को द गामा के पास भी आया। दोनों में सद्‌भावनापूर्ण वातावरण में बातें हुईं। राजा ने कई बार उसे अपने घर आने का निमंत्रण दिया। परंतु उसने कुछ न कुछ बहाना बनाकर टाल दिया। वास्को द गामा ने मोंबासा से लाए स्थानीय बंदियों को रिहा कर दिया। उससे राजा और उसके साथियों को बड़ी खुशी हुई।

खुशी के मारे राजा ने अपनी नाव में बैठकर वास्को द गामा के जहाज़ों के आस-पास चक्कर लगाए। वास्को द गामा ने तोप दगवाकर उसे सलामी दिलवाई। जाते समय राजा उसके दो आदमियों को अपना महल दिखाने के लिए साथ ले गया और दूसरे दिन सुबह वापस आने का वायदा कर गया। अपने एक बेटे और एक शैरिफ को वास्को द गामा के जहाज़ पर छोड़ गया। वास्को द गामा के आदमियों को महल दिखाने के बाद वह फिर वापस आया। उसने वास्को द गामा को पुनः अपने साथ चलने के लिए आमंत्रित किया पर वह इस बार भी उसके साथ नहीं गया।



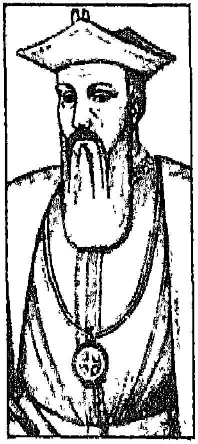
मालिंदी का सीवा वादक

ज़ब राजा वास्को द गामा से मिलने आया तब वह अपनी पालकी में बैठकर आया। पालकी में उसके बैठने के लिए दो ताँबे की कुर्सियाँ बनी हुई थीं। उनमें गद्दियाँ लगी थीं। राजा को धूप से बचाने के लिए एक छाता भी लगाा था। उसकी छाया कुर्सियों पर पड़ती थी। राजा के साथ एक अंगरक्षक था। अंगरक्षक के पास एक छोटी सी तलवार थी जो कि म्यान में रखी थी। राजा के साथ कई बाजे बजानेवाले थे। उनके पास कई तरह के वाद्ययंत्र थे। उनमें दो हाथी के दाँत के सीवा नामक बाजे थे। उन पर बारीक कारीगरी की गई थी। वे आदमियों के बराबर लंबे थे। उन्हें बजाने से सुरीली धुन निकलती थी।

राजा और वास्को द गामा के इस मेल-मिलाप की लोगों में काफी चर्चा हुई। अतः अनेक लोग उन्हें देखने की उत्सुकता से तट पर इकट्ठे हो गए। सबने एक दूसरे को देखा। राज़ा के घुड़सवारों ने घोड़ों के करतब दिखाए। इससे सबका मनोरंजन हुआ।

नौ दिन तक मालिंदी में रहकर वास्को द गामा निरंतर एक ऐसे पायलट की खोज करता रहा जो उसके दल को भारत तक पहुँचने में सहायता कर सके। मालिंदी के राजा से भी उसने पायलट प्राप्त करने का प्रयत्न किया। राजा ने पायलट देने का वायदा तो किया परंतु उसने स्वेच्छा से कोई भी पायलट वास्को द गामा के पास नहीं भेजा। एक दिन वास्को द गामा ने राजा के एक विश्वासपात्र सेवक को एक नाव से पकड़वाकर अपने पास बंदी बना लिया और उसे तब छोड़ा जब राजा ने उसे एक पायलट दे दिया। उसका नाम मालिम काना था। वह गुजरात का निवासी था। वह एक अनुभवी नाविक था। वास्को द गामा के साथियों ने उसे भी गलती से भारतीय क्रिश्चियन समझ लिया। उसे पाकर वे बहुत प्रसन्न हुए।

9
काली मिर्च के देश भारत में



वास्को द गामा ने मालिम काना से आगे की यात्रा के बारे में काफी पूछताछ की थी। उससे उसे पता लग गया था कि मालिंदी से काली मिर्च का देश भारत कितनी दूर है। मालिम काना ने उसे बता दिया था कि अब उसे भारत पहुँचने के लिए केवल अरब सागर पार करना होगा। इससे उसे अपना लक्ष्य निकट ही दिखाई दे रहा था। परंतु अरब सागर पार करना भी तो कोई सरल काम नहीं था। अतः वास्को द गामा निरंतर भगवान से प्रार्थना कर रहा था कि वे उसकी आगे की यात्रा सफल करें। मंगलवार, 24 अप्रैल को उसने अपने साथियों के साथ मालिंदी से प्रस्थान किया। उसने मालिम काना को मार्ग-निर्देशन का आदेश दिया। मालिम ने वैसा ही किया। तेईस दिन तक वास्को द गामा के जहाज़ अरब सागर में यात्रा करते रहे। वायु का प्रवाह उनके अनुकूल था। अतः सागर पार करने में उन्हें कोई

विशेष कठिनाई नहीं हुई। भारत पहुँचने से पहले उन्होंने छः सौ लीग से भी अधिक यात्रा की। भारत में वे कालीकट जाना चाहते थे क्योंकि उन्हें मालूम था कि कालीकट काली मिर्च एवं अन्य भारतीय तथा विदेशी वस्तुओं के व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र था।

शुक्रवार, 18 मई को वे भारतीय समुद्र-तट से केवल आठ लीग दूर थे कि उन्हें एली पर्वत दिखाई पड़ा जिस पर इलाइची बहुलता से उगती थी। यह पर्वत कनानोर से सोलह मील उत्तर में था। उस रात उन्होंने दक्षिण की ओर अपने जहाज़ चलाए। 20 मई को जब वे समुद्र पर यात्रा कर ही रहे थे कि तभी बड़े जोर का तूफान आया, बिजली कड़की और घोर वर्षा हुई। अतः तट के निकट होते हुए भी उनका भारतीय पायलट यह निश्चय नहीं कर सका कि वह कौन सा स्थान है। रविवार, 20 मई को उन्हें केप कडालूर पर्वत शृंखलाएँ दिखाई पड़ीं जिन्हें भारतीय पोतवाहक मालिम काना ने पहचान लिया और उन्हें बताया कि अब वे कालीकट से कुछ ही दूर उत्तर में है। उसी दिन रात को उन्होंने कपुआ के पास अपने जहाज़ों के लंगर डाल दिए। वास्तव में वे कपुआ को कालीकट समझ बैठे थे। अभी कपुआ से कालीकट सात मील दक्षिण में था। कपुआ से कुछ दूरी पर उन्होंने पंडारनी अथवा क्विलोन देखा। कपुआ में कुछ भारतीय नाविक उनके पास आए। उनसे उनकी राष्ट्रीयता पूछी तथा उन्होंने उन्हें कालीकट का रास्ता बताया। उन्हें क्या पता था कि उनकी इस भलाई के बदले में वास्को द गामा और उसके देशवासी एक दिन इस देश की संपदा और स्वंतत्रता की लूट मार करेंगे ?

21 मई को वही भारतीय नाविक वास्को द गामा के जहाज़ों के निकट फिर से गए। वास्को द गामा ने उनके साथ जोओ नुनेज को कालीकट

भेजा। नुनेज एक पुर्तगाली अपराधी था। वास्को द गामा उसे अपने साथ लाया था। भारतीय पोतवाहक नुनेज को ट्यूनिस से आए दो व्यापारियों के पास ले गए। वे व्यापारी पुर्तगाली भाषाएँ बोल सकते थे। उन्होंने नुनेज के कालीकट आने का कारण पूछा। उसने उन्हें बताया कि वह और उसके साथी कालीकट में ईसाइयों और मसालों की खोज में आए हैं। उनमें कुछ और बातें भी हुईं।

वे व्यापारी नुनेज को अपने निवास स्थान पर ले गए। वहाँ उन्होंने उसे भोजन कराया। उसे गेहूँ की रोटी और शहद खाने को दिया। भोजन के बाद नुनेज अपने जहाज़ पर वापस गया। उसके साथ उनमें से एक व्यापारी भी गया था। जहाज़ पर पहुँच कर उसने पुर्तगाली भाषा में नुनेज के साथियों से कहा— "तुम्हारा अभियान मंगलकारी है। यह देश तो माणिक्य और पन्नों से भरा है। तुम्हें तो भगवान को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने तुम्हें इस संमृद्ध देश में पहुँचा दिया।" अपनी भाषा में इन शब्दों को सुनकर वे लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कालीकट में उन्हें कोई पुर्तगाली बोलने वाला मिलेगा।

कालीकट पहुँचकर वास्को द गामा ने अपने दो साथियों फरनाओ मार्तिंस तथा मौंसेद को वहाँ के राजा के पास भेजा। उन्होंने राजा को बताया कि पुर्तगाल के राजा का एक दूत कालीकट आया है और वह राजा से मिलना चाहता है। यह जानकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने संदेशवाहक को सुंदर-सुंदर वस्त्र दिए और वास्को द गामा के पास यह संदेश भेजा कि वह उससे कालीकट में मिल सकता है। वास्को द गामा के जहाज़ कालीकट शहर के सामने समुद्र में रुके हुए थे। वहाँ पर समुद्र में अनेक चट्टानें थीं जिनसे जहाज़ों को किसी भी समय क्षति हो सकती थी। अतः राजा ने उन्हें

इस क्षति से बचाने के लिए अपना एक मार्गदर्शक वास्को द गामा के संदेशवाहकों के साथ भेजा और उसे आदेश दिया कि वह उन्हें पंडारनी ले जाए क्योंकि वहाँ के निकटवर्ती समुद्र में जहाज़ सुरक्षापूर्वक खड़े किए जा सकते थे। परिणामस्वरूप वास्को द गामा अपने जहाज़ों को पंडारनी ले गया और वहाँ उसने उन्हें खड़ा कर दिया।

27 मई 1498 को राजा ने अपना एक वजीर वास्को द गामा को लेने के लिए पंडारनी भेजा। वजीर के साथ कई और महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। उनके साथ दो सौ रक्षक थे जिनके पास ढाल और तलवारें थीं। वजीर ने वास्को द गामा को अपने साथ आने का संदेश भेजा। उस समय तक काफी देर हो चुकी थी। अतः वास्को द गामा ने उस दिन उसके साथ जाना उचित नहीं समझा। दूसरे दिन वह राजा से मिलने के लिए गया। उसके साथ उसके तेरह चुने हुए साथी थे। वे सब सुंदर-सुंदर वस्त्र पहने हुए थे। कुछ बाजे लिए हुए थे और कुछ पुर्तगाली झंडे। उनकी नावों में बंदूकें थीं।

जब वे अपनी नावों से तट पर उतरे तो राजा के वजीर और अन्य बहुत सारे लोगों ने उनका स्वागत किया। वास्को द गामा को पालकी में बिठाया गया। उस पालकी को छः आदमी बारी-बारी से ले गए।

कालीकट के रास्ते में वे लोग कपुआ नामक कस्बे में रुके। वहाँ वास्को द गामा को वहाँ के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के यहाँ ठहराया गया। वहाँ वास्को द गामा ने कुछ भी नहीं खाया। उसके साथियों को बहुत ही स्वादिष्ट भोजन कराया गया। उसमें चावल, मक्खन और उबली मछली शामिल थी। कपुआ से आगे एक लीग दूर तक वास्को द गामा के दल को दो नावों में बिठाकर ऐलातूर नदी में ले जाया गया। उनके साथ बहुत सारी नौकाएँ थीं। असंख्य लोग उन्हें देखने के लिए नदी के किनारों पर आए हुए

थे। नदी में बहुत से जहाज़ खड़े थे। नदी पार करने के बाद वास्को द गामा को फिर से पालकी में बिठाया गया। रास्ते के दोनों ओर लोगों की भीड़ उन्हें देखने के लिए आतुर खड़ी थी। उनमें बहुत सी स्त्रियाँ भी थीं। वे अपनी गोद में अपने बच्चों को लिए हुए थीं।

कालीकट पहुँचने पर वास्को द गामा के दल को एक मंदिर में ले जाया गया जिसे वे चर्च समझ बैठे। उसके प्रवेशद्वार पर एक ऊँचा स्तंभ था जिस पर काँसे का पत्र मढ़ा था। उसके ऊपर गरुड़ की मूर्ति थी।

प्रमुख द्वार पर छोटी-छोटी सात घंटियाँ टंगी हुई थीं जिन्हें भक्तजन प्रवेश करते समय बजाया करते थे। उसके आगे एक दीप-स्तंभ था जिस पर नारियल के तेल के अनेक दीपक जलाए जाते थे। मंदिर के अंदर देवी की प्रतिमा प्रतिष्ठित थी। वह प्रतिमा पत्थर की बनी हुई थी। उसकी पूजा के लिए पूजा-गृह में केवल चार पुजारी ही जा सकते थे। पूजा-गृह का द्वार ताँबे और चाँदी का बना था। उस द्वार में एक बार में केवल एक ही व्यक्ति प्रवेश कर सकता था। वास्को द गामा और उसके साथी उस देवी को मेरी समझ बैठे। वे उसके सामने घुटनों के बल झुके और प्रार्थना की। वास्को द गामा और कुछ लोग उस पूजा-गृह के बाहर ही रहे। पुजारियों ने उन पर पवित्र जल छिड़का और उन्हें भभूति दी। मंदिर के बाहर उन्होंने एक बड़ा तालाब देखा।

कालीकट नगर में प्रवेश करने पर उन्हें इसी प्रकार का एक और मंदिर दिखलाया गया। वहाँ पहुँचते-पहुँचते दर्शकों की भीड़ इतनी अधिक बढ़ गई थी कि गलियों में आगे बढ़ना असंभव हो गया। अतः वास्को द गामा और उसके साथियों को एक घर में ठहरा दिया गया।

उसी समय राजा ने वजीर के भाई को वास्को द गामा को लेने के

लिए भेजा। वह उस प्रदेश का नायक था। उसके साथ बहुत सारे लोग थे। वे पिपिहरी, नगाड़े आदि बजा रहे थे तथा पटाखे छोड़ रहे थे। असंख्य दर्शक गलियों में, घरों में और छतों के ऊपर खड़े थे। उनमें लगभग दो हजार सशस्त्र सैनिक भी थे। उन सबने वास्को द गामा के दल का इतना भव्य स्वागत किया जितना कि पुर्तगाल में वहाँ के राजा का भी नहीं होता था।

जैसे-जैसे वास्को द गामा की सवारी राजमहल के निकट पहुँचती गई वैसे-वैसे दर्शकों की भीड़ और बढ़ती गई। जब वे वहाँ पहुँचे तो बड़े-बड़े लोग उनसे मिलने के लिए आए। उस समय सूर्यास्त में एक घंटा बाकी था। वास्को द गामा के दल ने महल के प्रथम द्वार को पारकर एक विशाल अहाते में प्रवेश किया। राजा तक पहुँचने के लिए उन्हें चार द्वारों में से जाना पड़ा। हर जगह भीड़ इतनी अधिक थी कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए काफी परिश्रम करना पड़ा। जब वे मुख्य द्वार के निकट पहुँचे तो वयोवृद्ध राज पुरोजित ने वास्को द गामा का स्वागत किया तथा उसे अपने गले लगा लिया।

10

ज़मोरिन के दरबार में



कालीकट नगर और राजमहल के प्रवेश द्वारों को पार करता हुआ वास्को द गामा और उसका दल ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जा रहा था त्यों-त्यों वे राजा ज़मोरिन से मिलने के लिए आतुर हो रहे थे। सोमवार, 28 मई को उन्हें राजा के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उन्होंने देखा कि राजा एक छोटे से दरबार में विराजमान थे। वे एक सिंहासन पर विश्राम कर रहे थे। सिंहासन पर मखमल का हरा कपड़ा बिछा हुआ था। उसके ऊपर एक अच्छा गद्दा पड़ा था। उस गद्दे पर एक बढ़िया सफ़ेद सूती चद्दर बिछी थी। गद्दे पर बढ़िया मसनद लगे थे। राजा के बाएँ हाथ में एक बड़ा सोने का पीकदान था। उसका मुँह लगभग सोलह इंच चौड़ा था। उस पीकदान में राजा सुपाड़ी और पान की पीक थूकता जाता था। राजा की दाईं ओर एक बड़ा सोने का प्याला रखा था। उसमें राजा के खाने के पान रखे थे। इसी तरह वहाँ

बहुत सी चाँदी की सुराहियाँ भी रखी थीं। सिंहासन के ऊपर एक छत्र था जिस पर सोने का बढ़िया काम किया गया था।

राजा के समक्ष उपस्थित होने पर वास्को द गामा ने भारतीय परंपरा के अनुसार हाथ जोड़कर नमस्कार किया और फिर ईसाई ढंग से अपने हाथों को ऊपर की ओर उठाया। उसके तुरंत बाद उसने अपने हाथ नीचे किए और मुट्ठियाँ बाँध लीं। राजा ने अपने दाएँ हाथ से वास्को द गामा को अपने निकट आने का संकेत किया। लेकिन वह राजा के निकट नहीं गया क्योंकि भारतीय शिष्टाचार के अनुसार सामान्यतः लोग राजा के निकट नहीं जाते; केवल जड़ी-बूटी देनेवाला सेवक ही उसके पास जा सकता था। राजा ने वास्को द गामा के अन्य साथियों को अपने निकट रखे एक पत्थर के आसन पर बैठने को कहा। उन्हें हाथ धोने के लिए पानी तथा खाने के लिए कुछ फल देने का आदेश दिया। राजा के सेवकों ने उन्हें केले और संतरे दिए। जब वे उन्हें खाने लगे तो राजा उन्हें देखकर मुस्कराया और अपने सेवक से कुछ बात की।

इसके बाद राजा ने वास्को द गामा को अपने सभासदों को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया। राजा ने उससे कहा कि वह जो भी बात कहना चाहे कहे। परंतु वास्को द गामा ने राजा से निवेदन किया कि वह पुर्तगाल के राजा का राजदूत है और वह एक ऐसा संदेश लेकर आया है जिसे वह केवल राजा को ही दे सकता है। राजा ने कहा यह तो अच्छी बात है और तुरंत आदेश दिया कि उसे एक कमरे में ले जाया जाय। ज्यों ही वास्को द गामा ने कमरे में प्रवेश किया त्योंही राजा भी अपने दरबार से उठ गया और वास्को द गामा वाले कमरे में पहुँच गया। वास्को द गामा के साथ उसका दुभाषिया फरनाओ मार्तिंस था। राजा के साथ उसके विश्वासपात्र



वास्को द गामा ज़मोरिन के दरबार में
(सालगारो के 1498 के चित्र पर आधारित)

मुख्य पुरोहित, पानवाला तथा कारिंदा था। उस समय सूर्यास्त हो रहा था। राजा एक सोफे पर बैठ गया। उस सोफे पर सोने की कढ़ाई वाली अनेक वस्तुएँ बिछी हुई थीं। राजा ने वास्को द गामा को अपनी बात कहने को कहा।

वास्को द गामा ने राजा को बताया कि वह पुर्तगाल के राजा दौम मैनुअल का राजदूत है। दौम मैनुअल अनेक देशों का स्वामी था। उसके पास अनेक प्रकार की संपत्ति थी। उस समय किसी अन्य राजा के पास इतनी अधिक संपत्ति नहीं थी। दौम मैनुअल के पूर्वजों का अनुमान था कि भारत में ईसाई राजा राज करते हैं। अतः , भारतीय राजाओं से संपर्क स्थापित करने के लिए बहुत इच्छुक थे। उन्हें भारत के सोने और चाँदी का

कोई लालच नहीं था क्योंकि ये तो उनके देश में भी काफी मात्रा में उपलब्ध थीं। पिछले साठ वर्षों में उन्होंने भारत की खोज के लिए प्रति वर्ष अपने जहाज़ भेजे। उन जहाज़ों ने साल-दो साल यात्रा की और जब खाने-पीने की सामग्री समाप्त हो गई तो विफल होकर पुर्तगाल वापस लौट गए। परंतु दौम मैनुअल ने इस बार वास्को द गामा को यह आदेश देकर भेजा था कि वह और उसके साथी भारत की खोज किए बिना स्वदेश वापस नहीं लौटेंगे और यदि बिना खोज के लौटे तो वह उनका सिर कटवा देगा। भारत के राजा के लिए उसने दो पत्र भी भेजे थे। वास्को द गामा ने ज़मोरिन से निवेदन किया कि पत्रों को वह अगले दिन प्रस्तुत करेगा। अंत में उसने कहा कि उसका राजा ज़मोरिन का मित्र और भाई बनने का इच्छुक है।

उत्तर में ज़मोरिन ने कहा कि वह अपनी ओर से पुर्तगाल के राजा को अपना मित्र और भाई ही मानता है। वह वास्को द गामा के साथ अपने राजदूतों को पुर्तगाल भेजने के लिए तैयार हो गया। वास्तव में वास्को द गामा ने ज़मोरिन से कालीकट के कुछ लोगों को अपने साथ ले जाने की स्वीकृति भी माँगी थी। अपने कालीकट पहुँचने के प्रमाण के रूप में वह उन्हें अपने राजा के समक्ष प्रस्तुत करना चाहता था।

इस बातचीत में काफी रात बीत गई थी। अतः राज़ा ने वास्को द गामा से पूछा कि वह किनके साथ रहना पसंद करेगा— ईसाइयों के साथ या मूरों के साथ। वास्को द गामा ने अपने साथियों के साथ रहने की इच्छा व्यक्त की। राजा ने उसकी इच्छा के अनुसार ही उसके रहने की व्यवस्था का आदेश दिया। उस समय रात के लगभग दस बजे थे।

राजमहल से निकलकर वास्को द गामा अपने साथियों के साथ अपने

निवास-स्थान की खोज में निकल पड़ा। रास्ते में उनके साथ अनेक स्थानीय लोगों की भीड़ लग गई। उसी समय भारी वर्षा भी होने लगी। रास्ते में पानी भर गया। वास्को द गामा को एक पालकी में बिठा दिया गया। उस पालकी को छः आदमी अपने कंधों पर ले जा रहे थे। फिर भी नगर पार करने में इतना अधिक समय लगा कि वास्को द गामा को थकान होने लगी। अतः उसने राजा के एक सेवक से शिकायत की। वह सेवक मूर था। वह उसे अपने घर ले गया जिससे कि वर्षा बंद होने तक वह वहाँ विश्राम कर सके। वहाँ वास्को द गामा और उसके साथियों को घर के अंदर ले जाया गया। वहाँ एक बरामदा था। उसकी छत पर टायलें लगी थी। उसमें बहुत सारी दरियाँ बिछाई गईं। वहाँ दो बड़े दीप-स्तंभ थे। उन स्तंभों के ऊपर लोहे के दीप थे। उनमें तेल या घी भरा हुआ था। प्रत्येक दीप में चार-चार बत्तियाँ थीं। उनसे काफी प्रकाश होता था। ऐसे ही दीप राजमहल में भी थे।

वर्षा रुकने पर मूर ने वास्को द गामा को ले जाने के लिए एक घोड़ा मँगाया। उसकी पीठ पर काठी नहीं थी; कालीकट में बिना काठी के ही घोड़ों पर सवारी की जाती थी। परंतु वास्को द गामा ने उस घोड़े पर चढ़ने से इनकार कर दिया। अतः वास्को द गामा और उसके साथी बिना घोड़ों के ही अपने निवास-स्थान की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचने पर उन्हें अपने कुछ और साथी भी मिले जो जहाज़ों से आए थे। वे वास्को द गामा के लिए बिस्तर लाए थे और अन्य अनेक वस्तुएँ भी जिन्हें वास्को द गामा पुर्तगाल से राजा के लिए भेंटस्वरूप लाया था।

मंगलवार, 29 मई को वास्को द गामा ने राजा की भेंट के लिए अनेक वस्तुएँ तैयार करवाईं। उनमें बारह धारीदार सूती कपड़े थे, सिर ढकने के

लिए चार लाल वस्त्र, छः टोप, चार मूँगों की लड़ें, छः हाथ धोने की चिलमचियाँ, एक चीनी से भरा डब्बा, दो तेल के पीपे, और दो शहद के पीपे।

परंपरा के अनुसार राजा को भेंट देने से पहले यह आवश्यक था कि राजा का कारिंदा उसका निरीक्षण करे। अतः राजा का कारिंदा और उसका सहायक वास्को द गामा की वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए आए। उन वस्तुओं को देखकर वे हँसे और बोले कि वे राजा को देने योग्य नहीं हैं। मक्का या भारत के किसी भाग का गरीब से गरीब व्यापारी भी राजा को कहीं अधिक मूल्यवान वस्तुएँ भेंट में दे देता था। राजा वास्को द गामा की वस्तुओं को स्वीकार नहीं करेंगे। यदि वह भेंट देना ही चाहे तो सोना दे। यह सब सुनकर वास्को द गामा बड़ा उदास हुआ। उसने कारिंदे को बताया कि वह अपने साथ सोना नहीं लाया था। वह व्यापारी तो था नहीं; वह तो एक राजदूत था। उसके राजा ने कोई भेंट नहीं भेजी थी। जो कुछ वस्तुएँ निजी रूप में उसके पास थीं उन्हीं में से वह राजा को भेंट देना चाहता था। भविष्य में यदि पुर्तगाल के राजा ने उसे पुनः भारत भेजा तो वह अधिक मूल्यवान वस्तुएँ राजा की भेंट के लिए लायेगा। कारिंदा ने वास्को द गामा की वस्तुओं को ज़मोरिन के पास भेजने की स्वीकृति नहीं दी।

ऐसी स्थिति में वास्को द गामा ने बिना भेंट के ही ज़मोरिन से मिलकर अपने जहाज़ों पर वापस लौटने का निर्णय किया। ज़मोरिन का कारिंदा इसके लिए सहमत हो गया। उसने वास्को द गामा को बताया कि कुछ देर बाद वह वापस आयेगा और उसे राजमहल पहुँचा देगा। वास्को द गामा उसकी प्रतीक्षा करता रहा। परंतु वह लौटा ही नहीं। वास्को द गामा को बड़ा बुरा लगा। वह कुढ़ता रहा। परंतु उसके साथियों ने गा बजाकर अपना समय बिताया।

बुधवार, 30 मई को प्रातः ज़मोरिन का कारिंदा वापस आया और वास्को द गामा तथा उसके साथियों को राजमहल ले गया। राजमहल सशस्त्र सैनिकों से भरा था। वास्को द गामा, उसके साथियों तथा कारिंदे को चार घंटे तक दरवाज़े के बाहर ही रखा गया। दरवाज़ा बंद था। उसके पास दो रक्षक खड़े थे।

जब वास्को द गामा दरवाज़े के अंदर गया तो राजा ने उससे पूछा कि वह तो मंगलवार को ही आने वाला था। वास्को द गामा ने उत्तर दिया कि लंबी यात्रा के कारण वह बहुत थक गया था और उसी थकान के कारण वह उस दिन नहीं आ सका। फिर राजा ने उससे पूछा कि उसका देश कैसा समृद्ध था कि वह उसके लिए कुछ भी भेंट नहीं लाया। वास्को द गामा ने उत्तर दिया कि उसके भेंट न लाने का कारण यह था कि इस बार वह केवल खोज करने के लिए आया था। भविष्य में जब और जहाज़ आएँगे तब वे उसके लिए भेंट अवश्य लाएँगे। उसके बाद ज़मोरिन ने पुर्तगाल के राजा के पत्र के बारे में पूछा। वास्को द गामा ने कहा कि वह एक पत्र लाया था जिसे वह तुरंत देने को तैयार था।

वास्को द गामा द्वारा कोई भेंट न दिए जाने से राजा ज़मोरिन को अच्छा नहीं लगा। उसके मन में वास्को द गामा की प्रतिष्ठा एकदम गिर गई। वह झुँझलाकर बोला– 'तुम क्या खोजने को आए हो– पत्थर या आदमी ? यदि तुम आदमियों की खोज करने के लिए आए हो, तो तुम उनके लिए कोई भेंट क्यों नहीं लाए ? हमें मालूम हुआ है कि तुम अपने साथ साँता मारिया की सोने की प्रतिमा लाए हो।' उत्तर में वास्को द गामा ने कहा कि पहले तो साँता मारिया सोने की है ही नहीं, और यदि होती भी तो वह उससे किसी भी स्थिति में अलग नहीं होता। वास्को द गामा का

विश्वास था कि साँता मारिया ने ही समुद्र पार करने में उसकी सहायता की थी और वही उसे स्वदेश लौटने में भी सहायक होगी।

इसके बाद राजा ने वास्को द गामा को पत्र देने के लिए कहा। वास्को द गामा ने दो पत्र निकालकर दिए। एक पत्र पुर्तगाली में था और दूसरा अरबी भाषा में। दोनों पत्र पढ़े गए। उनकी विषय सामग्री से राजा को संतोष हुआ।

फिर राजा ने उससे पूछा कि उसके देश में किस तरह की चीजें मिलती हैं। वास्को द गामा ने बताया कि उसके देश में अनाज, कपड़ा, लोहा, काँसा और अन्य बहुत सी वस्तुएँ पाई जाती हैं। उनके थोड़े-थोड़े नमूने वह अपने साथ लाया था। वे चीज़ें उसके जहाज़ पर थीं। राजाज्ञा मिलने पर वह वहाँ जाकर उन्हें लाने को तैयार था। इसके लिए राजा ने आज्ञा नहीं दी। उसे केवल वापस चले जाने को कहा। उसके साथियों को उसके साथ जाने की तथा अपना सामान बेचने की अनुमति दे दी। इसके बाद वास्को द गामा और उसके साथी अपने निवास स्थान पर वापस लौट गए।

11

राजदरबार से वापसी और व्यापार



बृहस्पतिवार, 31 मई की सुबह वास्को द गामा को वापस जाने के लिए एक बिना काठी का घोड़ा दिया गया। परंतु उस पर सवारी करने से उसने मना कर दिया। वह चाहता था कि उसे पालकी में ले जाया जाय। अतः राजा के लोग उसे एक धनी गुजराती के घर ले गए। उसने एक पालकी तैयार कराई। उस पालकी में बैठकर वास्को द गामा तुरंत पंडारनी के लिए रवाना हो गया। वहाँ उसके जहाज़ खड़े थे। बहुत से लोग पालकी के साथ-साथ पंडारनी तक गए। पालकी इतनी तेज चल रही थी कि वास्को द गामा के साथी पीछे रह गए। वे रास्ते में भटक गए। परंतु उनके पीछे राजा के सेवक आ गए। उन्होंने उन्हें सही रास्ता बता दिया। पंडारनी में वास्को द गामा को एक विश्रामगृह में ठहराया गया। राजमहल और पंडारनी के बीच रास्ते के साथ-साथ अनेक विश्रामगृह बने हुए थे। उनमें कोई भी यात्री कभी भी ठहर सकता था।

पंडारनी में वास्को द गामा ने राजा के सेवक से एक छोटी नाव के लिए कहा। वह उसमें बैठकर अपने जहाज़ तक जाना चाहता था। सूर्यास्त हो चुका था। अतः उस सेवक ने उस समय जहाज़ पर न जाने की सलाह दी। वास्को द गामा जाने की जिद कर रहा था। सेवक ने कहा—'ठीक है, चले जाओ।' वह उसे समुद्र-तट पर ले गया। वास्को द गामा ने अपने तीन साथियों का अग्रिम दल अपने जहाज़ की ओर भेज दिया। प्रयत्न करने पर भी उन्हें जहाज़ नहीं मिले और वे वापस तट पर लौट आए।

इसी बीच राजा के सेवक वास्को द गामा और उसके साथियों को एक मूर के घर में ले गए। पहले ही काफी रात बीत चुकी थी। उन लोगों को वहाँ छोड़कर राजा के सेवक वास्को द गामा के अग्रिम दल की खोज में निकल गए। उनके बारे में तब तक उन्हें कोई समाचार नहीं मिला था। उनके चले जाने के बाद वास्को द गामा ने मुर्गे और चावल बनवाए। वे सब बहुत भूखे थे। अतः उसने और उसके साथियों ने पेट भर खाना खाया और सो गए। बाद में 1 जून को जब राजा के सेवक वापस लौटकर आए तो वास्को द गामा ने पुनः अपने जहाज़ पर जाने के लिए उनसे नावें माँगीं। इस बार उन्होंने कहा कि वे नाव तब देंगे जब वास्को द गामा अपने जहाज़ों को तट के निकट आने का आदेश देगा। वह इसके लिए तैयार नहीं था। अतः उन्होंने उसके निवास स्थान के सभी दरवाज़े तुरंत बंद करवा दिए और उसके चारों ओर सशस्त्र रक्षक नियुक्त करवा दिए। उन्हें आदेश दिया कि वे वास्को द गामा और उसके साथियों में से किसी को भी बिना रक्षकों के बाहर न जाने दें। उन्होंने वास्को द गामा से कहा कि वह अपने पाल और पतवार उन्हें दे दें। इसके लिए उसने साफ मना कर दिया।

काफी तनावपूर्ण वातावरण था। वास्को द गामा और उसके साथी बड़े

भयभीत हो रहे थे। उसी समय वास्को द गामा द्वारा भेजे गए अग्रिम दल का एक व्यक्ति वापस आ गया। उसने वास्को द गामा को सूचना दी कि पिछली रात से निकोलो कोयल्हो अपनी नावें लेकर उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। शीघ्र ही वास्को द गामा ने अपने एक साथी को चुपके से निकोलो कोयल्हो के पास भेज दिया। उसने निकोलो को अपने जहाज़ों पर तुरंत वापस लौट जाने का तथा जहाज़ों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का आदेश दिया। संदेश पाते ही निकोलो कोयल्हो वापस चला गया।

ज्यों ही रक्षकों को इस चाल का पता लगा त्योंही उन्होंने अनेक नौकाओं को उसके पीछे दौड़ा दिया। उन्होंने निकोलो कोयल्हो का थोड़ी दूर तक तो पीछा किया परंतु जब उसे नहीं पकड़ पाए तब वे वास्को द गामा के पास लौट आए। इस बार उन्होंने उससे अपने भाई को पत्र लिखने को कहा जिससे कि वह अपने जहाज़ों को तट के निकट लाकर बंदरगाह के अंदर ले जाए। वास्को द गामा ने उत्तर दिया कि वह पत्र तो लिख देगा; परंतु उसका भाई फिर भी जहाज़ को तट के निकट नहीं लाएगा। राजा के सेवकों ने उसकी इस बात का विश्वास नहीं किया। उसका भाई तो उसके सारे आदेशों को मानता था फिर वह इस आदेश को क्यों नहीं मानेगा ? वास्को द गामा को डर था कि तट के निकट आने पर उसके जहाज़ पकड़ लिए जायेंगे। इस कारण वह चाहता नहीं था कि उसके जहाज़ निकट आवें।

वह रात बड़ी परेशानी से बीती। उस रात बहुत सारे स्थानीय लोग वास्को द गामा और उसके साथियों के आस-पास इकट्ठे हो गए। उसे और उसके साथियों को अहाते में घूमने की मनाही कर दी गई। उन्हें एक छोटे से आँगन में ले जाया गया। चारों ओर लोगों की भीड़ लगी थी। वास्को द गामा और उसके साथी बहुत चिंतित थे। न जाने उनका क्या होगा ? भूख

लगी थी। अतः उन्होंने अपना भोजन पकाया और खाया। रात भर सौ से भी अधिक रक्षक उनके चारों ओर पहरा देते रहे। उनके पास तलवारें, दुधारी कुल्हाड़ियाँ, ढालें, और तीर-कमान थे। उनमें से जब कुछ लोग सोते थे तो अन्य जगते रहते थे।

शनिवार, 2 जून को सुबह राजा के सेवक एवं अन्य लोग वहाँ आए। वे प्रसन्नचित थे। उन्होंने वास्को द गामा से कहा कि वह अपने सामान को जहाज़ों से उतरवा ले तथा बिकवा दे। वास्को द गामा ने अपने भाई के पास इसके लिए संदेश भिजवा दिया। सामान तट पर उतार दिया गया। उसके तुरंत बाद राजा के आदमियों ने वास्को द गामा को अपने जहाज़ पर जाने की अनुमति दे दी। उसके दो आदमी सामान के साथ तट पर ही रह गए। पंडारनी से वापस जाकर वास्को द गामा और उसके साथियों ने खूब खुशियाँ मनाईं। उन्हें लगा वे मौत के मुँह में से निकल गए। जहाज़ पर पहुँचकर वास्को द गामा ने आदेश दिया कि जो सामान भेज दिया सो भेज दिया, और आगे न भेजा जाए।

पाँच दिन बाद 7 जून को वास्को द गामा ने राजा के पास संदेश भिजवाया कि यद्यपि आपने मुझ को सीधे अपने जहाज़ों पर वापस लौट जाने का आदेश दिया था, फिर भी आपके आदमियों ने रास्ते में मुझे एक दिन और एक रात बंदी बनाकर रखा। हमने अपना सामान पंडारनी में भेज दिया था। परंतु मूरों को वह बिलकुल पसंद नहीं आया। ऐसी स्थिति में हम क्या करें ? वास्को द गामा ने राजा को आश्वासन दिया कि वह और उसके जहाज़ राजा की सेवा के लिए तैयार हैं।

संदेश पाते ही राजा ने संदेशवाहक से कहा कि जिन लोगों ने वास्को द गामा के साथ दुर्व्यवहार किया है उन्हें वह दंड देगा। उसी समय उसने

सात या आठ व्यापारियों को वास्को द गामा के सामान के निरीक्षण के लिए भेजा। पसंद आने पर वे उसे खरीद भी सकते थे। साथ ही राजा ने अपना एक और आदमी वहाँ भेजा। उसे अधिकार दिया कि यदि कोई मूर बिना पूर्व स्वीकृति के उस सामान के पास जाने की कोशिश करे तो वह उसे जान से मार दे।

राजा द्वारा भेजे व्यापारी आठ दिन तक पंडारनी में रहे। उन्होंने वस्तुओं का निरीक्षण किया। वे उन्हें पसंद नहीं आईं उनके विचार में वे वस्तुएँ घटिया किस्म की थीं। राजा के आदेश के भय से मूर व्यापारियों ने उन वस्तुओं के पास जाना बंद कर दिया। वे पुर्तगालियों से घृणा करने लगे। जब भी वे वास्को द गामा के किसी साथी को देखते थे तो जमीन पर थूकने लगते थे और कहते थे—'पुर्तगाली, पुर्तगाली'। सच तो यह है कि पुर्तगालियों का आना उन्हें शुरू से ही अच्छा नहीं लगा।

इस तरह पंडारनी में वास्को द गामा का सामान बिका ही नहीं। यह देखकर उसने राजा ज़मोरिन से निवेदन किया कि उसे अपना सामान कालीकट ले जाने की स्वीकृति दी जाए। राजा इतना भला था कि उसने तुरंत अपने एक अधिकारी को आदेश दिया कि वह अपने ही लोगों की सहायता से उस सामान को कालीकट पहुँचा दे। राजा ने इसका खर्चा भी स्वयं देने का निश्चय किया।

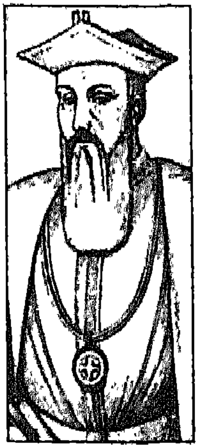
रविवार, 24 जून को सारा सामान कालीकट के लिए भेज दिया गया। फिर भी वास्को द गामा ने अपने लोगों को आदेश दिया कि प्रत्येक जहाज़ से एक बार में एक व्यक्ति तट पर जायेगा और अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ वहाँ से खरीदेगा। जब कभी कोई व्यक्ति तट पर जाता था तो वहाँ के लोग उसका बड़ा स्वागत करते थे। उसे अपने घरों से भोजन देते थे

और आवश्यकता पड़ने पर सोने के लिए स्थान भी देते थे।

धीमे-धीमे बहुत से स्थानीय लोग भी पुर्तगाली जहाजों पर जाने लगे। वे पुर्तगालियों को मछली देते थे और उसके बदले में उनसे ब्रैड ले लेते थे। पुर्तगाली उन्हें देखकर प्रसन्न होते थे। वे लोग अपने लड़कों और छोटे बच्चों को भी जहाज़ों पर ले जाने लगे। वास्को द गामा ने उनके साथ अच्छे संबंध स्थापित करने की इच्छा से अपने लोगों को आदेश दिया कि वे उन्हें खाने की चीज़ें दें। परिणाम यह हुआ कि आगंतुकों की संख्या बढ़ती चली गई। कभी-कभी तो रात होने तक वे लोग जाते-आते रहते थे। पुर्तगालियों से बिस्कुट एवं ब्रैड लेकर खाना उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

वास्को द गामा के साथी अपने जहाज़ों से तट पर दो-दो, तीन-तीन के समूहों में आने लगे। वे अपने साथ बाजूबंद, कपड़े, नई कमीज़ें और अन्य वस्तुएँ बेचने के लिए ले जाते थे। ये चीजें अच्छे दामों पर नहीं बिकती थीं। अच्छी कमीज़ें भी कालीकट में पुर्तगाल की अपेक्षा दस गुने कम दामों पर बिकती थीं। लेकिन उन दामों का कालीकट में बहुत महत्व था। पुर्तगालियों ने कालीकट से लौंग, दालचीनी, और कीमती पत्थर खरीदे। उन चीज़ों को वे अपने जहाज़ों पर ले जाते थे। रास्ते में उन्हें कोई किसी प्रकार से तंग नहीं करता था। वास्को द गामा ने देखा लोग बहुत अच्छे हैं, व्यापार आसानी से हो सकता है। अतः वास्को द गामा ने अपने कुछ आदमियों और सामान को कालीकट में रख दिया। वे लोग सरलता से सामान का क्रय-विक्रय करने लगे।

12
ज़मोरिन से संघर्ष



कुछ महीने कालीकट में बिताने के बाद वास्को द गामा ने एक दिन स्वदेश लौटने का निश्चय किया। उसने राजा ज़मोरिन के लिए एक भेंट भेजी। उसमें मणियाँ, मूँगे तथा अन्य बहुत-सी वस्तुएँ थीं। वास्को द गामा ने अपने स्वदेश लौटने का संदेश भी राजा को दिया। उसने यह भी निवेदन किया कि यदि राजा अपने कुछ आदमी उसके साथ पुर्तगाल के राजा के पास भेज दें तो वह अपना एक अधिकारी, एक क्लर्क तथा अन्य लोगों को अपने सामान के साथ कालीकट में ही छोड़ जायेगा। उसने अपने राजा के लिए भेंट के रूप में एक बहार (208.16 किलोग्राम) दालचीनी, एक बहार लौंग तथा कुछ अन्य मसालों के नमूने माँगे। यदि राजा चाहें तो वह उस सामान की कीमत भी देने को तैयार था। वास्को द गामा के संदेश वाहक का नाम दियोगो दियास था। जब उसे राजा के सामने पेश किया गया तो

राजा ने उससे पूछा—'तुम क्या चाहते हो ?' उसने राजा को वास्को द गामा का संदेश दिया और उसकी भेंट की ओर संकेत किया। राजा बोला उस भेंट को तो वह देखना भी नहीं चाहता। साथ ही उसने आदेश दिया कि कालीकट छोड़ने से पहले वास्को द गामा राजा को छः सौ अशर्फियाँ दे क्योंकि यह उसके राज्य की परंपरा थी, दियोगो दियास ने वास्को द गामा तक राजा का संदेश पहुँचाने का वचन दिया राजा से विदा ली और राजमहल छोड़कर चल दिया। रास्ते में कुछ लोगों ने उसका पीछा किया। कालीकट में दियोगो दियास उस घर में गया जहाँ पहले ही से पुर्तगाली सामान रखा था। उस घर को चारों ओर से घेर लिया गया। कुछ लोगों को घर के अंदर नियुक्त कर दिया गया ताकि पुर्तगाली अपना कोई सामान वहाँ से न हटा सकें। इसके साथ-साथ नगर में यह मुनादी करादी गई कि वहाँ का कोई भी निवासी अपनी नावें पुर्तगाली जहाज़ों के निकट न ले जाए।

पुर्तगालियों ने देखा कि उन्हें तो कैदी बना दिया गया। वहाँ से उनका निकलना बहुत कठिन था। अतः उन्होंने अपनी स्थिति का समाचार वास्को द गामा तक पहुँचाने का संकल्प किया। उनके साथ एक नीग्रो नवयुवक था। चुपके से उन्होंने उसी को यह काम सौंप दिया। वह नगर के बाहर जाने में सफल हो गया। वहाँ उसने एक मछुआरे से बात की। उसे कुछ धन देने का प्रलोभन दिया। वह लालच में आ गया। अँधेरा हो चुका था। उसने देखा अँधेरे में उसे कोई देखेगा नहीं। अतः जल्दी से वह उस नीग्रो को अपनी नाव में बिठाकर जहाज़ तक ले गया।

वास्को द गामा और उसके साथियों को जब यह संदेश मिला तब वे बड़े चिंतित हुए। उन्होंने सोचा राजा तो ऐसा कर नहीं सकता। यह काम तो मूरों का हो सकता है। कहते हैं ट्यूनीशिया के एक मूर ने वास्को द

गामा को बताया था कि उक्त काम राजा ने मूरों के कहने पर ही किया था। मूरों ने राजा से कहा था कि पुर्तगाली चोर हैं और धमकी दी थी कि यदि राजा ने उन्हें व्यापार करने की अनुमति दी तो मक्का, खंबात, उर्मज एवं अन्य किसी स्थान से कोई भी मूर कालीकट व्यापार के लिए नहीं आयेगा। पुर्तगालियों के पास देने को तो कुछ था नहीं, वे तो कालीकट की संपदा ही ले जा सकते थे। उनके आने से राज्य को विकट हानि हो सकती थी। मूरों ने राजा को काफी धन भी दिया था। वे चाहते थे कि राजा पुर्तगालियों को वापस न जाने दे।

उधर ट्यूनीशिया के एक मूर ने वास्को द गामा को सलाह दी कि वह या उसका कोई और साथी तट तक न जाय। यदि कोई वहाँ गया तो उसके हाथ कटवा दिए जायेंगे क्योंकि प्रायः जो भी विदेशी राजा ज़मोरिन के देश में बिना सोना लिए आता था राजा उसके हाथ कटवा देता था।

दूसरे दिन 14 अगस्त को कोई नाव जहाज़ तक नहीं गई। तीसरे दिन एक छोटी नाव उनके पास गई। उसमें चार नवयुवक थे। वे लोग अपने साथ क़ीमती पत्थर बेचने के लिए ले गए थे। वास्को द गामा को लगा कि शायद मूरों ने उन्हें भेद लेने के लिए भेजा है। उसने उनका स्वागत करवाया। जब वे वापस जाने लगे तो उनको अपने बंदियों के नाम एक पत्र भी दे दिया। वे उस पत्र को अपने साथ लेकर चले आए। यह देखकर कि वास्को द गामा ने उनके साथ कोई अभद्र व्यवहार नहीं किया अनेक व्यापारी तथा अन्य लोग कालीकट से नावों में बैठकर नित्य पुर्तगाली जहाज़ों तक जाने लगे। उन सबके साथ वास्को द गामा के साथियों ने अच्छा व्यवहार किया और उन्हें बहुत सी चीज़ें खाने को दीं।

रविवार, 19 अगस्त को लगभग पच्चीस आदमी जहाज़ों पर गए। उनमें

से छः व्यक्ति भद्र परिवारों के थे। वास्को द गामा की दृष्टि उन पर गई। उसने सोचा कि उनके द्वारा वह अपने आदमियों को कैद से छुड़ा सकेगा। इन लोगों को मिलाकर कुल अठारह व्यक्तियों को वास्को द गामा ने अपने जहाज़ों पर बंदी बना लिया। शेष को उसने अपनी नाव में बिठाकर तट पर वापस भेज दिया। उनके साथ राजा के मूर अधिकारी के नाम एक पत्र भी भेज दिया। उसमें लिखा था कि यदि वह उसके साथियों को मुक्त कर देगा तो वह भी अठारह बंदियों को मुक्त कर देगा।

उक्त समाचार से कालीकट में खलबली मच गई। वास्को द गामा को डर लगा कि राजा के जहाज़ कहीं उस पर आक्रमण न कर दें। वह अपने जहाज़ों को तट से दूर ले गया ताकि उन्हें राजा के लोग देख न सकें। परंतु समाचार पाते ही राजा ने अपने आदमियों को उसकी खोज में भेज दिया। रविवार, 26 अगस्त को उन्होंने वास्को द गामा के जहाज़ों का पता लगा लिया। वे एक नाव में बैठकर उसके पास पहुँचे। उसे उन्होंने संदेश दिया कि दियोगो दियास राजा के महल में था। वास्को द गामा को उनकी इस बात का विश्वास नहीं हुआ। उसका विचार था कि दियोगो दियास का तो वध कर दिया होगा। यह संदेश तो शायद उसे धोखा देने के लिए राजा ने भेजा होगा। इस बीच राजा उस पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा होगा। अतः वास्को द गामा ने राजा के लोगों को वापस चले जाने का आदेश दिया। साथ ही यह भी कहा कि जब वे लौटकर आएँ तो वे दियोगो दियास और उसके साथियों को अपने साथ लेकर आएँ या कम से कम उसका पत्र लाएँ। तभी वह उनसे बात करेगा। उसने धमकी भी दी कि यदि उन्होंने ऐसा न किया तो वह उनके साथियों के सिर कटवा कर फिंकवा देगा।

इस घटना का समाचार पाकर राजा ज़मोरिन चिंतित हुआ। उसने

दियोगो दियास को अपने यहाँ बुलवाया और उससे पूछा कि वास्को द गामा ने उसके देशवासियों को क्यों बंदी बना लिया। दियोगो दियास ने उत्तर दिया कि उसके कप्तान ने बदला लेने के लिए यह सब कार्यवाही की। राजा बोला उसे तो इस बात का पता नहीं था। उसने अपने उस अधिकारी को बुलाया जिसने वास्को द गामा के आदमियों को बंदी बनाया था। दियोगो दियास के सामने उसको डाँट लगाई। राजा ने दियोगो दियास और उसके साथियों को मुक्त कर दिया। उन्हें अपने जहाज़ों पर जाने की अनुमति दे दी। राजा ने वास्को द गामा के लिए संदेश भी दिया कि वह राजा के आदमियों को वापस भेज दे। वह चाहे तो तट पर अपने देश से लाए स्तंभ को स्थापित कर ले तथा स्वदेश जाने पर अपने सामान को अपने प्रतिनिधि के साथ कालीकट में निश्चिंत होकर छोड़ दे।

राजा ज़मोरिन ने पुर्तगाल के राजा के नाम दियोगो दियास से एक पत्र लिखवाया और उसे सौंप दिया। उसमें उसने वास्को द गामा के आगमन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। साथ ही यह भी लिखा कि उसके प्रदेश में दालचीनी, लौंग, अदरक, कालीमिर्च और कीमती पत्थर बहुतायत से पाए जाते हैं। वह चाहे तो उन वस्तुओं को मँगवा सकता है। उनके बदले में ज़मोरिन सोना, चाँदी, मूँगे और लाल वस्त्र लेना चाहेगा।

सोमवार, 27 अगस्त को दियोगी दियास और अन्य पुर्तगालियों को राजा ने अपनी नावों में बिठाकर वास्को द गामा के जहाज़ों पर भिजवा दिया। उन्हें पाकर वास्को द गामा और उसके साथी बड़े प्रसन्न हुए। उसने ज़मोरिन के लोगों को छोड़ दिया। अपना एक स्तंभ उन्हें दे दिया। वह अपने सामान को कालीकट में नहीं छोड़ना चाहता था; उसे वापस मँगाना चाहता था। उसके मन में डर था कि सब बंदियों को मुक्त कर देने पर

राजा ज़मोरिन उसके सामान को वापस दे या न दे। अतः उसने राजा के छः सामान्य लोगों को तब तक बंदी बनाए रखने का निश्चय किया जब तक कि उसे अपना सामान वापस न मिल जाए।

दूसरे दिन सुबह राजा ने उसका बचा हुआ सामान नावों में भरकर वापस भिजवा दिया। परंतु वास्को द गामा ने न तो बंदियों को मुक्त किया और न ही अपना सामान वापस लिया। सच तो यह है कि उसके इरादे ठीक नहीं थे। वह उन लोगों को छोड़ना ही नहीं चाहता था। ज़मोरिन के पास इतनी शक्ति नहीं थी कि वह उन्हें छुड़वा लेता। न तो उसके पास पर्याप्त जहाज़ थे और न तोपें। वास्को द गामा के समान उसमें चालाकी और कूटनीति भी नहीं थी। ज़मोरिन को वास्को द गामा के सारे व्यक्तियों को एक साथ छोड़ना ही नहीं चाहिए था। वह चूक गया। वास्को द गामा ने ज़मोरिन के छः लोगों को आखिर तक नहीं छोड़ा। वह उन्हें अपने साथ लिस्बन ले गया।

यह सूचना मिलने पर कि वास्को द गामा ने छः लोगों को छोड़ने से मना कर दिया बहुत से लोग सात नावों में बैठकर उसके जहाज़ों की ओर गए। तीन नावों ने उनके पास जाने की कोशिश की। वे उन छः बंदियों को उसके चंगुल से छुड़वाना चाहते थे। वास्को द गामा उन्हें देखकर तुरंत सावधान हो गया। उन्होंने वास्को द गामा से कहा कि यदि वह बंदियों को छोड़ दे तो वे उसका सारा सामान वापस कर देंगे। इस पर उसने उत्तर दिया कि उसे अपने सामान की तनिक भी चिंता नहीं है; वह तो उन बंदियों को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ेगा। अतः उसने उन्हें आदेश दिया कि वे उसके जहाज़ों के निकट आने की कोशिश न करें।

बृहस्पतिवार, 30 अगस्त को लगभग सत्तर नावों में सवार ज़मोरिन के

सशस्त्र नाविकों ने वास्को द गामा के जहाज़ों को घेरने की कोशिश की। उन्हें भगाने के लिए वास्को द गामा ने अपनी तोपें दगवायीं। उनसे वे डर गए। उनके पास उन तोपों का कोई जवाब नहीं था। विवश होकर उन्हें वापस लौटना पड़ा। यह घटना आगे चलकर भारत के लिए घातक सिद्ध हुई। भविष्य में विदेशी तोपों ने साम्राज्यवादियों और भारत के बीच हुए संघर्ष में निर्णायक भूमिका निभाई।

उन दिनों जहाज़ों को हवाओं की सहायता से चलना पड़ता था। भाप या अणु की शक्ति का तब तक आविष्कार नहीं हुआ था। वास्को द गामा शीघ्र ही स्वदेश के लिए रवाना होना चाहता था। परंतु हवाओं का रुख अनुकूल नहीं था। अतः कुछ दिन और उसे कालीकट से थोड़ी दूर समुद्र में ही बिताने पड़े।

स्वदेश लौटने से पहले वास्को द गामा ने एक और कैदी को मुक्त कर उसे कैनानूर के निकट तट पर पहुँचा दिया। वह स्थान ज़मोरिन के विरोधी राजा के अधीन था। मुक्त कैदी के हाथ वास्को द गामा ने ज़मोरिन को एक पत्र भिजवाया। उसमें उसने ज़मोरिन से क्षमा माँगी। उसके आदमियों को कैदी बनाने का कारण लिखा। वास्को द गामा ने उन आदमियों को द्वेष भाव से कैदी नहीं बनाया था बल्कि वह उन्हें अपने भारत पहुँचने के प्रमाण के रूप में अपने देश के राजा के पास ले जा रहा था। उसने यह भी स्पष्ट किया कि उसने अपने व्यापारी कालीकट में इस डर से नहीं छोड़े कि मूर उन्हें मार डालेंगे। साथ ही उसने आशा व्यक्त की कि एक दिन दोनों देशों में मैत्री संबंध स्थापित होंगे और उससे दोनों को लाभ होगा।

कहते हैं कि जब वह पत्र ज़मोरिन को मिला और उसके सामने पढ़ा

गया तब उसे शांति मिली। उसे बहुत प्रसन्नता हुई। उसने वह पत्र बंदियों के घरवालों और रिश्तेदारों को भी पढ़वाया।

शनिवार, 15 सितंबर को वास्को द गामा का दल नेत्रानी या पिजन द्वीपों के निकट पहुँचा। वहाँ एक द्वीप पर उन्होंने साँता मारिया नामक स्तंभ को प्रस्थापित किया। उसे वे पुर्तगाल से अपने साथ लाए थे। उसी के नाम पर उन्होंने उस द्वीप का नाम साँता मारिया रख दिया।

बृहस्पतिवार 20 सितंबर को वे लोग एक सुंदर पहाड़ी प्रदेश के निकट पहुँचे। उसके समीप छः छोटे-छोटे द्वीप थे। उनका नाम अंज द्वीप था। उनके पास वास्को द गामा ने अपने जहाज़ रुकवा दिए। वहाँ एक बहुत ही सुंदर झरने से उन्होंने पीने का पानी इकट्ठा किया और दालचीनी के पौधों की कुछ डालें लीं। वास्को द गामा के मुख्य जहाज़ बैरिओ को तट के निकट ठहराया। उसकी कुछ मरम्मत की। वहीं पर एक चालीस वर्षीय व्यक्ति वास्को द गामा से मिला। वह गोआ के सूबेदार के अधीन काम करता था। उसके पास 40,000 घुड़सवार थे। उसने वास्को द गामा को संदेश दिया कि यदि उसे आवश्यकता हो तो वह जहाज़, खाने की वस्तुएँ तथा और जो कुछ उसे चाहिए बिना किसी संकोच के देने को तैयार था। वास्को द गामा चाहे तो उस प्रदेश में स्थायीरूप से रह सकता था। वास्को द गामा ने इस सबके लिए उसे धन्यवाद दिया। परंतु बाद में वास्को द गामा को पता लगा कि वह आदमी भेद लेने के लिए आया था। उसके साथी उसके जहाज़ों को लूटने की योजना बना रहे थे। पाओलो द गामा ने उसकी ठुकाई की। तब उसने यह बात स्वीकार की।

अंज द्वीप में वास्को द गामा और उसके साथी बारह दिन तक रहे। वहाँ रहकर उन्होंने मछुआरों से खूब मछली, कद्दू और खीरे खरीद कर खाए। अपने जहाज़ों में उन्होंने आवश्यकतानुकूल पीने का पानी भी भरा।

13
कालीकट का वर्णन



वास्को द गामा और उसके साथी कई महीनों तक कालीकट में रहे। उन्होंने उसे निकट से देखा। वहाँ की समृद्धि, व्यापार, रहन-सहन आदि का उन्होंने अपने यात्रा-वृत्तांतों में वर्णन किया है। उससे पता चलता है कि कालीकट शताब्दियों से मसालों के व्यापार का प्रमुख केंद्र था। वह राजा ज़मोरिन के राज्य मलाबार या केरल की राजधानी थी। ज़मोरिन एक बलवान शासक था। उसकी वंशानुगत उपाधि थी 'पर्वत एवं समुद्राधिपति'। मलाबार मैंगलौर से केप कमोरन तक फैला हुआ है। उस प्रदेश में काली मिर्च की बहुत अच्छी पैदावार होती है। वहाँ से वह मिर्च पिछले लगभग दो हजार वर्षों से लाल सागर और फारस की खाड़ी की ओर ले जाई जाती थी। मानसूनी हवाओं की सहायता से समुद्री जहाज़ भारत से अरब और वहाँ से भारत की ओर सरलता से जा आ सकते थे। कालीकट के

व्यापारियों के काहिरा, सिकंदरिया तथा फैज़ जैसे दूरस्थ स्थानों पर मालगोदाम थे।

वास्को द गामा के आगमन के समय कालीकट एक समृद्ध नगर था। वह लिस्बन से बड़ा था। लगता था संसार की सारी संपदा वहाँ इकट्ठी हो गई थी। हाथियों के दाँत, कपास, चीनी और विविध प्रकार की मिठाइयाँ दुकानों में भरी पड़ी थीं। हर तरह के मसाले, जैसे दालचीनी, काली मिर्च, और सोंठ बहुतायत से मिलती थी। वहाँ के जंगल लाख और कीमती लकड़ी से संपन्न थे। अनाज और चावल के बड़े-बड़े भंडार थे। गाएँ और बैल छोटे क़द के होते थे। गाएँ दूध खूब देती थीं। उसमें मक्खन काफी निकलता था। अनेक प्रकार के फलों की भरमार थी, जैसे नींबू, संतरे, मोसम्मी, स्वादिष्ट ख़रबूज़े, सूखे और ताजे खजूर आदि। रेशम की बनी अनेक वस्तुएँ कालीकट में बिकती थीं। रंग-बिरंगी मखमल, साटन, सुनहरी ज़री के कपड़े, पीतल और टिन की बनी वस्तुएँ बहुलता से मिलती थीं। वेशक़ीमती हीरे, नीलम एवं माणिक्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। राजा, सामंत और अन्य उच्च वर्ग के लोगों को वे बेहद पसंद थे।

व्यापार में उच्च कोटि के सोने की बनी अशर्फियाँ अधिक चलती थीं। चाँदी के सिक्के भी प्रचलित थे। वेनिस और जिनोआ में बने विदेशी सिक्के भी कालीकट में मिल जाते थे। कालीकट से सामान खरीदने के लिए पुर्तगालियों को अपना सोना और चाँदी देनी पड़ती थी। कपड़े की कमीज़ों के बदले में भी उन्हें मसाले मिल जाते थे। अपने सीमित सोने और चाँदी के बदले में वास्को द गामा और उसके साथी केवल थोड़े से ही हीरे जवाहरात खरीद सके।

कालीकट उस समय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का इतना अधिक लोकप्रिय

केंद्र था कि वहाँ विदेशी वस्तुएँ भी बिकती थीं। ग्रीस की अंगूरी शराब वहाँ के बाज़ार में मिल जाती थी। अनेक विदेशी व्यापारी व्यापार करने के लिए कालीकट आते थे। उनमें चीनी व्यापारी भी थे। वे दो साल में एक बार बीस-पच्चीस जहाज़ लेकर कालीकट आते थे। वे अपने साथ बेहतरीन कपड़ा तथा पीतल का सामान लाते थे। लौटते समय कालीकट से वे मसाले खरीद्रकर ले जाते थे। चीनियों के सिर के बाल लंबे और दाढ़ी छोटी होती थी। वे सिर पर टोप पहनते थे। अपनी रक्षा के लिए वे अपने पास तलवार और भाले रखते थे। उनके जहाज़ पुर्तगालियों के जहाज़ों से छोटे होते थे। वे अपने जहाज़ों में गोला-बारूद भी रखते थे।

कालीकट में जहाज़ों का आवागमन बड़े पैमाने पर होता रहता था। वास्को द गामा के साथियों ने कालीकट में अपने तीन महीने के निवास में 1500 जहाज़ देखे थे। उनमें से अधिकतर जहाज़ अरब की ओर से मसालों की खोज में आते थे। वे हवा की सहायता से चलते थे। हवा प्रतिकूल होने पर कभी-कभी उन्हें कालीकट में चार से छः महीनों तक रुकना पड़ता था। पुर्तगाली जहाज़ों की तुलना में उनकी बनावट कमज़ोर थी। उनमें न तो कीलें लगती थीं और न ही किसी तरह के लोहे का प्रयोग होता था। उनमें कोई हथियार व तोपें भी नहीं होती थीं। यह उनकी बहुत बड़ी कमी थी। उसी कमी के कारण वे पुर्तगालियों को पराजित नहीं कर सके।

कालीकट के निवासियों में ब्राह्मणों का स्थान सर्वोपरि था। उनके बाद समाज में नायर लोगों का दूसरा स्थान था। वे भी ब्राह्मणों की भाँति जनेऊ धारण करते थे और उनकी गणना द्विजवर्ण में होती थी। उनमें बहुपत्नी-प्रथा प्रचलित थी। वे लोग पहली बार देखने में अज्ञानी दिखाई

पड़ते थे। परंतु वास्तव में वे स्वभाव से सरल और व्यवहार में अच्छे थे। कालीकट में मोपला भी थे। उनके पिता अरब के निवासी थे तथा उनकी माताएँ स्थानीय ही थीं। वे स्वभाव के बहुत तेज होते थे।

राजा ज़मोरिन और उसके सभासद शाकाहारी थे। राजा चावल, दूध, मक्खन, फल और सब्जी खाता था। वह ताड़ की शराब भी पीता था। उसके लिए चाँदी के बर्तनों का प्रयोग होता था। राजा और उसके सभासद गोश्त या मछली नहीं खाते थे। साधारण लोग गोश्त और मछली खूब खाते थे। बैल या गाय का गोश्त खाना वे बुरा मानते थे। गाय-बैल मिलने पर वे उन्हें बड़े प्यार से सहलाते थे और उनके साथ अच्छा व्यवहार करते थे।

वहाँ के निवासी साँवले रंग के थे। उनमें से कुछ लोग बड़ी-बड़ी दाढ़ी और सिर पर लंबे बाल रखते थे। अन्य लोग या तो छोटे बाल रखते थे या सिर मुड़ाए रहते थे। उनके सिर पर लंबी चोटी रहती थी। वे लोग मूँछें भी रखते थे। उन्होंने अपने कान छिदवा रखे थे। उनमें वे सोने के आभूषण पहनते थे। सामान्यतः वहाँ की स्त्रियाँ छोटे कद की थीं। वे गले में सोने के आभूषण पहनती थीं। उनकी बाहों में बाजूबंद तथा उनकी उँगलियों में कीमती नगों से जड़ी सोने की अँगूठियाँ होती थीं।

अधिकांश लोगों की वेशभूषा एक सी थी। वे कमर के नीचे घुटनों तक सूती कपड़े पहनते थे। कमर के ऊपर वे कुछ भी नहीं पहनते थे। सामंतों का पहनावा भी उसी प्रकार का था। अंतर केवल इतना था कि वे रेशम के कपड़े पहनते थे। उनकी स्त्रियाँ कमर के ऊपर एकदम सफ़ेद कोमल वस्त्र पहनती थीं। किंतु साधारण स्त्रियाँ कमर के ऊपर कुछ भी नहीं पहनती थीं। अरब के व्यापारी कफ़्तान पहनते थे।

कालीकट में हाथी और घोड़े बड़ी संख्या में पाए जाते थे। हाथी वहाँ

का प्रमुख जानवर था। युद्ध के समय राजा और उसके सामंत हाथी या घोड़ों पर सवार होते थे। अन्य सैनिक पैदल चलते थे।

कानून की व्यवस्था बड़ी कड़ाई से की जाती थी। लुटेरों, हत्यारों और अन्य अपराधियों के साथ बहुत ही सख्ती बरती जाती थी। कालीकट में एक सीमा-शुल्क कार्यालय था। व्यापारियों को पाँच प्रतिशत सीमा-शुल्क देना पड़ता था। जो भी व्यापारी सीमा-शुल्क बचाने की कोशिश करता था या देने से इनकार करता था दंड के रूप में उसका सारा सामान ज़ब्त कर लिया जाता था। कड़ी दंड व्यवस्था के कारण अपराधी आतंकित रहते थे। अपराध कम था।

14
पुर्तगाल के लिए प्रस्थान



वास्को द गामा और उसके साथियों को बहुत खुशी हुई कि वे भारत के लिए समुद्री मार्ग खोजने में सफल हो गए। वे ज़मोरिन के साथ मित्रता करके व्यापार की सुविधा चाहते थे। उस समय वे विफल रहे। कालीकट में पुनः प्रवेश कठिन था। घर से बाहर निकले उन्हें बहुत दिन बीत गए थे। अपने देश और संबंधियों की याद उन्हें तड़पाने लगी थी। अतः उन्होंने स्वदेश लौटने का निश्चय किया। यहाँ काली मिर्च और अन्य मसाले उन्होंने जी भर के अपने जहाज़ों में लाद लिए। उन्हीं जहाज़ों में बैठकर नवंबर 1498 को उन्होंने पुर्तगाल के लिए वापसी यात्रा आरंभ की।

प्रस्थान के समय हवाएँ वास्को द गामा के विपरीत थीं। कभी वे एकदम शांत हो जाती थीं तो कभी बहुत ही भयंकर। उन दिनों जहाज़ हवा की सहायता से ही चलते थे। वास्को द गामा के जहाज़ों को अरब सागर

पार करने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लेकिन तीन महीने तीन दिन में वे सागर पार करने में सफल हो गए।

उसी बीच वास्को द गामा के साथी काफी संख्या में बीमार पड़ गए। उनके मसूड़े सूज गए जिससे खाना खाना उनके लिए दूभर हो गया। उनके शरीर के अन्य अंगों विशेष रूप से पैरों में सूजन आ गई। उस सूजन से लोग मरने लगे। उनमें से तीस लोगों की इस सूजन से मृत्यु हो गई। उतने ही लोग पहले भी मर चुके थे। उस बीमारी के कारण वास्को द गामा के पास बहुत कम साथी बचे। एक-एक ज़हाज़ को चलाने के लिए मुश्किल से सात-आठ आदमी थे। वे भी पूरी तरह स्वस्थ नहीं थे। औषधियाँ उनके पास थीं नहीं। भगवान से प्रार्थना के अतिरिक्त उनके पास और कोई चारा नहीं था। एक बार तो वे इतने घबरा गए कि उन्होंने पुनः भारत लौटने का विचार किया।

उस संकट की घड़ी में हवा अचानक उनके अनुकूल चलने लगी। उसका सहारा लेकर वे छः दिन तक लगातार अपने जहाज़ों को अरब सागर में चलाते रहे। 2 जनवरी 1499 को उन्हें भूमि दिखाई दी। उनकी खुशियों का ठिकाना न रहा। रात हो चुकी थी। अतः तट के निकट ही समुद्र में उन्होंने अपने जहाज़ रोक दिए। 3 जनवरी को वे तट के निकट गए। उन्होंने उसका निरीक्षण किया। मार्गदर्शकों का अभाव था। इसलिए उन्होंने स्वयं उस स्थान का पता लगाने की कोशिश की।

खोजते-खोजते वास्को द गामा को पता लगा कि वह एक बड़े नगर के पास जा पहुँचा था। उसके वर्णन के अनुसार उस नगर का नाम मगादोक्सो था। अरब निवासी उसे मुखदिशो और सोमाली लोग उसे मदीशा के नाम से पुकारते थे। उस नगर को अरबी लोगों ने बसाया था।

दिन में अनुकूल हवा चलने पर वास्को द गामा के साथी अपने जहाज़ों को तट के साथ-साथ आगे ले जाने की कोशिश करते थे। रात होने पर वे जहाज़ों को किसी एक स्थान पर रोक लेते थे। उनका लक्ष्य जल्दी से जल्दी मालिंदी पहुँचने का था।

शनिवार, 5 जनवरी को वास्को द गामा के साथी एक तूफान में फँस गए। उसके कारण राफेल जहाज़ की गाँठें टूट गईं। कुछ समय के लिए उन्होंने अपनी यात्रा स्थगित कर दी। वे राफेल की मरम्मत में जुट गए। उस बीच कुछ स्थानीय लोगों ने उनके निकट आने की कोशिश की। वास्को द गामा के दल को लगा कि वे उन पर आक्रमण करेंगे। अतः उन्होंने अपनी बंदूकें दागनी शुरू कर दीं। उनसे घबरा कर स्थानीय लोग भाग गए।

सोमवार, 7 जनवरी को वास्को द गामा के जहाज़ मालिंदी के पास पहुँच गए। ज्योंही वहाँ के राजा को उनके आगमन की सूचना मिली त्योंही उसने एक लंबी नौका में अपने अनेक आदमी वास्को द गामा के पास भेजे। उसने वास्को द गामा और उसके साथियों के खाने के लिए भेड़ें भेजीं। अपने संदेशवाहकों द्वारा उसने अपनी प्रसन्नता भी व्यक्त की। जब वे लोग वापस जाने लगे तब वास्को द गामा ने उनके साथ अपना एक आदमी संतरे लाने के लिए तट पर भेजा। उसके बीमार साथियों के लिए संतरों की अत्यंत आवश्यकता थी। लेकिन संतरों से भी बीमारों को कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। अनेक स्थानीय लोग उनके लिए अंडे और चिड़ियाँ लाए पर कोई फरक नहीं पड़ा। मालिंदी में वास्को द गामा के कई और साथी स्वर्गवासी हो गए।

अपनी ओर से वास्को द गामा ने भी राजा के लिए उपहार भेजा। साथ ही उसने निवेदन किया कि राजा उसे एक हाथी-दाँत दिलवा दे।

वास्को द गामा उस दाँत को अपने राजा के लिए ले जाना चाहता था। मालिंदी में एक स्तंभ बनवाने के लिए भी उसने राजा से निवेदन किया। राजा इतना भला था कि उसने वास्को द गामा के सभी निवेदनों को स्वीकार कर लिया। वह जो चाहता था वह उसे दिलवा दिया। साथ ही उसने अपने देश के एक नवयुवक को वास्को द गामा के पास भेजा। वह चाहता था कि वास्को द गामा उस नवयुवक को उसकी मित्रता के प्रतीक के रूप में अपने साथ पुर्तगाल ले जाए। मालिंदी में वास्को द गामा पाँच दिन रुका। वहाँ उसने अपने साथियों के साथ खूब आराम किया।

शुक्रवार, 11 जनवरी को प्रातः उसने आगे की यात्रा आरंभ की। शनिवार, 12 जनवरी को उसके जहाज़ मोंबासा पहुँचे। 13 जनवरी को उन्होंने बैक्सोस द साँता राफेल के निकट अपने जहाज़ रोके। वहीं पर उन्होंने राफेल नामक जहाज़ को जला दिया। उस जहाज़ का सामान उन्होंने अपने दो अन्य जहाज़ों पर चढ़ा लिया। राफेल को जलाने का कारण पोतवाहकों की कमी थी। उस स्थान पर वे पंद्रह दिन ठहरे। वहाँ के लोगों को कमीज़ें और बाजूबंद देकर उनसे अपने खाने के लिए चिड़ियाँ खरीदीं।

रविवार, 27 जनवरी को वास्को द गामा अपने जहाज़ों के साथ आगे बढ़ा। दूसरे दिन वह जंजीबार द्वीप के पास पहुँचा। 1 फरवरी को वह मोज़ंबीक के निकट साओ जार्ज द्वीप पहुँचा। वहाँ उसने एक स्तंभ प्रस्थापित किया। स्तंभ की स्थापना के समय बड़ी विकट वर्षा हुई।

3 मार्च को वास्को द गामा आँग्रा द साओ ब्राज़ पहुँचा। वहाँ उसके साथियों ने बहुत सी सील मछलियाँ और पैंग्विनें पकड़ीं। उनमें नमक लगाकर उन्हें आगे की यात्रा के लिए अपने साथ रख लिया। 12 मार्च को उन्होंने अपनी यात्रा फिर शुरू की। हवाओं का रुख अनुकूल था। अतः वे

सुगमता से आगे बढ़ गए। 20 मार्च को उन्होंने आशा अंतरीप पार किया। इससे उन्हें बड़ी खुशी हुई। उनकी हिम्मत बढ़ी।

उस समय वे घर पहुँचने के लिए उतावले हो रहे थे। अगले सत्ताइस दिनों तक हवाओं ने उनका साथ दिया। परिणामस्वरूप 16 अप्रैल को वे साओ थियागो द्वीप के निकट पहुँच गए। वहाँ एक भयंकर तूफान आया। बृहस्पतिवार, 25 अप्रैल को वे लोग रियो ग्रांदे खाड़ी में पहुँचे।

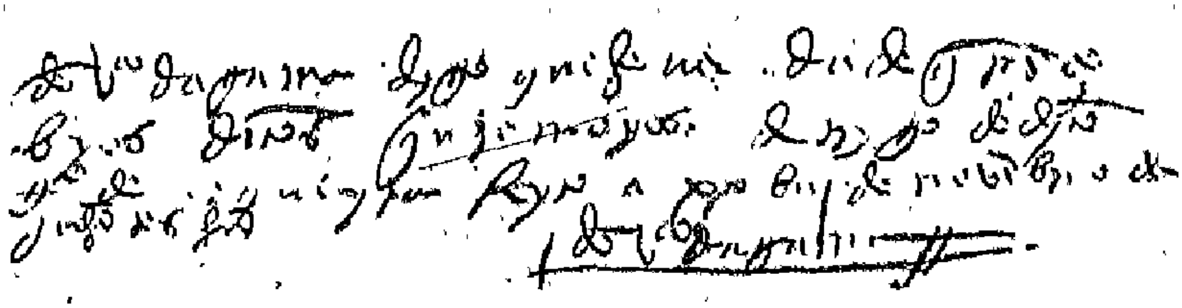
रास्ते में फिर एक तेज़ तूफान आया। उसके कारण वास्को द गामा और निकोलो कोयल्हो के जहाज़ एक दूसरे से अलग हो गए। निकोलो कोयल्हो ने अपनी यात्रा जारी रखी। वह 10 जुलाई 1499 को कास्केस पहुँच गया। यह स्थान लिस्बन के दक्षिण में था। वास्को द गामा ने उसकी एक दिन प्रतीक्षा की। रास्ते में उसके भाई पाओलो द गामा की तबियत बहुत अधिक खराब हो गई। उसे वह तर्सीरा द्वीप ले गया। वहाँ एक दिन बाद उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह वास्को द गामा के प्रिय साथी एक-एक करके उससे हमेशा के लिए बिछुड़ते गए। उसे बड़ा दुःख हुआ। परंतु उसने अपना धैर्य नहीं छोड़ा।

वास्को द गामा के पुर्तगाल वापस पहुँचने की तिथि के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद है। परंतु प्रायः यह माना जाता है कि अपनी इस प्रथम ऐतिहासिक रोमांचकारी यात्रा को पूरा करने के बाद वह तर्सीरा 29 अगस्त 1499 को तथा लिस्बन 9 सितम्बर 1499 को पहुँचा। लिस्बन नगर में उसने 14 सितंबर 1499 को प्रवेश किया। उसकी अपूर्व उपलब्धि की रोमांचक गाथा से चमत्कृत पुर्तगालियों की अपार भीड़ ने आगे बढ़कर उसका और उसके साथियों का भव्य स्वागत किया।

वास्को द गामा का लिस्बन में प्रवेश उसके तथा पुर्तगालवासियों के

लिए महान गौरव का प्रतीक था। वास्को द गामा की सफलता ने उनमें सनसनी पैदा कर दी। वे अपने पोतवाहकों पर गर्व करने लगे। वे यह भी सोचने लगे कि अब वे भारत की जगद्विख्यात संपदा का उपभोग कर सकेंगे। इस विचार से तो उनकी खुशियों का ठिकाना न रहा।

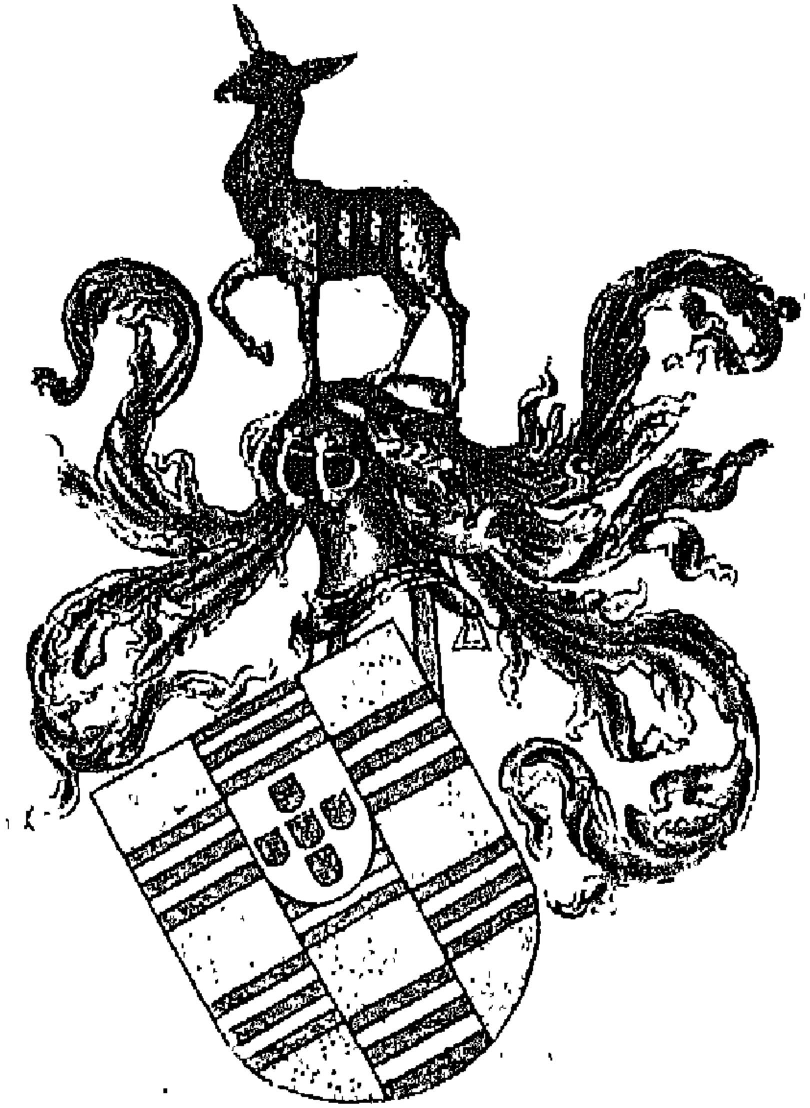
दौम मैनुअल भी वास्को द गामा की सफलता से बहुत खुश हुआ। उसने स्वयं को 'ईथियोपिया,अरब, फारस और भारत का विजेता और उनकी जहाज़रानी तथा व्यापार का स्वामी' घोषित कर दिया। उसने वास्को द गामा को अनेक उपाधियों से सम्मानित किया। 22 फरवरी 1501 को उसे 'दौम' उपाधि प्रदान की। यह उपाधि शाही सामंतों को दी जाती थी और वंशानुगत थी। बाद में उसे 'एडमिरल ऑफ इंडिया' की उपाधि से विभूषित किया। इसके अंतर्गत वास्को द गामा को प्रति वर्ष भारत से 200 क्रूज़ेदोस के मूल्य का सामान मँगाने का अधिकार दिया गया। उस पर उसे राज्य को कर न देने की छूट भी दी गयी।



एक रसीद पर वास्को द गामा के हस्ताक्षर

7 नवंबर 1519 को राजा ने वास्को द गामा और उसके उत्तराधिकारियों को विदीग्वेरा और विला द्र फ्रादेस नगर दान में दिए। वहाँ से होने वाली आय के वे अधिकारी बन गए। उस समय से पूर्व ये नगर ड्यूक ऑफ ब्रागेंजा के अधिकार में थे। 29 दिसंबर 1519 को राजा ने वास्को द गामा

को 'कोंदे द विदीग्वेरा' की उपाधि देकर उसके जीवन के सबसे बड़े स्वप्न को पूरा कर दिया। इसके अतिरिक्त राजा ने वास्को द गामा को पैंशन, धनऔर सोना तो इतना अधिक दिया कि उस समय पुर्तगाल में केवल छः कुलीन सामंत, दो आर्कबिशप और सात बिशप ऐसे थे जिनकी आय वास्को द गामा से अधिक थी।



वास्को द गामा का कुलचिह्न

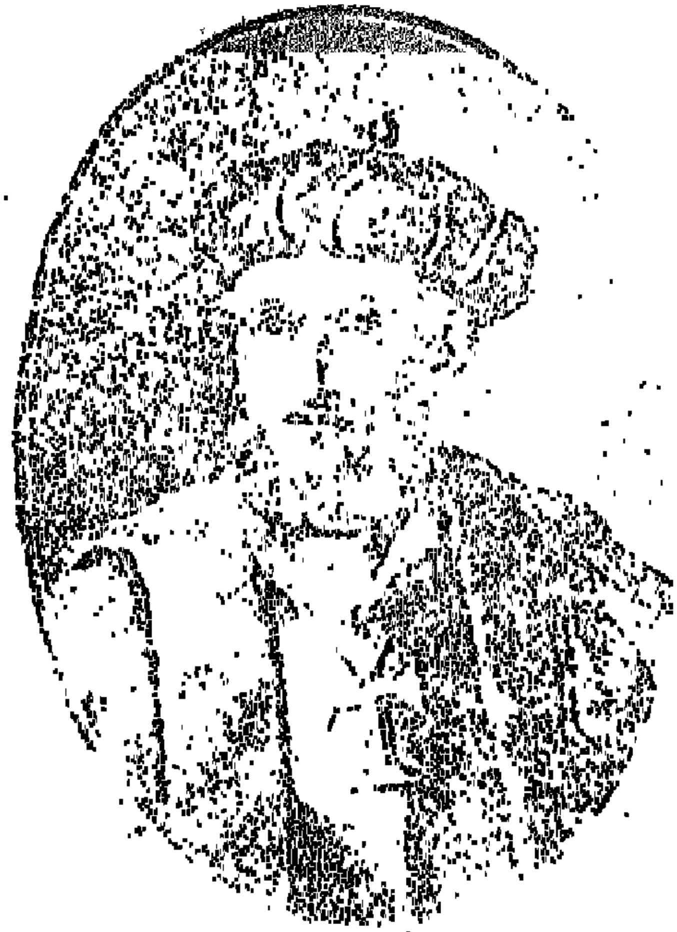
स्वदेश लौटकर वास्को द गामा ने राजा दौम मैनुअल को अपनी सफलता का वृतांत सुनाया। उसे यह भी बताया कि कालीकट में मूर व्यापारियों की प्रधानता थी। उनकी प्रधानता को समाप्त करने के लिए राजा ने दूसरा अभियान दल भारत भेजने का निर्णय किया। वह दल मार्च 1500 में लिस्बन से विदा हुआ। उस बार उसमें 13 जहाज़ और पर्याप्त सैनिक सामग्री भेजी गई। उस सशक्त नाविक दल का नायक पैद्रालवारेज़ काब्रल था। वह एक प्रसिद्ध कुलीन परिवार का सदस्य था। उसके साथी अन्य जहाज़ों के अधिकारी भी कुलीन परिवारों में से चुने गए थे। काब्रल को दौम मैनुअल ने आदेश दिया था कि वह कालीकट पहुँचकर वहाँ के राजा को सूचित कर दे कि वह मूर व्यापारियों को अपने यहाँ न आने दे। उसके बाद भी यदि मूर व्यापारियों के जहाज़ पुर्तगालियों को वहाँ दिखाई पड़ गए तो वे उन जहाज़ों, उनमें भरे माल और उन्हें चलानेवाले मूरों को अपने क़ब्ज़े में ले लेंगे।

फिर तो एक के बाद एक सुदृढ़ नाविक बेड़ा भारत भेजा गया। हर तरह से भारत में पुर्तगाली सत्ता स्थापित करने का प्रयत्न किया गया। पुर्तगालियों ने कालीकट पर विजय पाने के लिए अनेक प्रयास किए। अपनी पूरी ताकत लगाई। परंतु ज़मोरिन के सैनिकों ने उन्हें विफल कर दिया। उसकी नौसेना भारतीय राज्यों में सबसे अच्छी थी। लगभग सौ वर्ष तक वह पुर्तगालियों से टक्कर लेता रहा। अंत में 1599 में पुर्तगालियों ने उससे संधि कर ली। पुर्तगालियों की असली लड़ाई मूर व्यापारियों से थी। कालीकट के शासकों को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उनके मसाले मूर ले जाएँ या पुर्तगाली।

कालीकट छोड़कर पुर्तगालियों ने गोआ पर अपना ध्यान केंद्रित किया।

वहाँ वे अपना राज्य स्थापित करने में सफल हो गए। इसका कारण यह था कि उस क्षेत्र का प्रमुख तुलाजी अपने पड़ोसी शासक आदिलशाही सुल्तान को पराजित करने के उद्‌देश्य से पुर्तगालियों से मिल गया। विदेशों से हथियार और अच्छी नसल के घोड़े प्राप्त करने की इच्छा से विजयनगर के शासकों ने पुर्तगालियों को गोआ पर अधिकार जमाए रखने में सहायता की थी। कालीकट मे पराजय के बाद पुर्तगालियों ने भारत मे बड़ा साम्राज्य स्थापित करने का संकल्प छोड़ दिया। अगले ढाई सौ वर्ष तक अन्य यूरोप के राज्यों ने भी भारत को जीतने की कोशिश नहीं की। पुर्तगाली तो गोआ, दमण, दीव और कोचीन पाकर ही संतुष्ट हो गए। वे व्यापार पर अधिक ध्यान देने लगे।

किंतु अपने व्यापार के विस्तार के उद्देश्य से उन्होंने न केवल भारतीय शासकों की जहाज़रानियों बल्कि अन्य एशियाई देशों की जहाज़रानियों पर भी अपना प्रभुत्व जमाने की नीति अपनाई। फ्रांसिसको द अल्मैदा ने दीव के निकट मिस्र के शासक मामलूक द्वारा भेजे जहाज़ी बेड़े को पराजित कर दिया। उसके दो वर्ष बाद पुर्तगालियों ने मलक्का को अपने काबू में कर लिया। इससे एशिया के सुदूरपूर्वी देशों का व्यापार उनके नियंत्रण में आ गया। फारस की खाड़ी में ओर्मुज़ पर भी उन्होंने अपना अधिकार कर लिया। आनेवाले वर्षों में उन्होंने कई और महत्वपूर्ण बंदरगाहों जैसे, भारत के कारोमंडल तट पर साओ तोमे द मेलियापुर, बंगाल में हुगली और चटगाँव, श्रीलंका में कोलबो और चीन में मकाओ को जीतकर वहाँ अपने किले बना लिए। उन किलों में सशस्त्र सेना भी रखनी शुरू कर दी। इस तरह उन्होंने एक विशाल व्यापारिक एवं नौसैनिक साम्राज्य स्थापित किया। वह सामाज्य 'ऐस्तादो द इंडिया' के नाम से जाना जाने लगा। पुर्तगाली



वास्को द गामा

अधिकारियों ने एशिया के निहत्थे व्यापारिक जहाज़ों को लूटा और उस लूट से अपने खज़ाने भरे। इससे एशियाई देशों के स्थानीय व्यापारियों को काफी नुकसान उठाना पड़ा।

अप्रैल 1524 में वास्को द गामा अंतिम बार भारत के लिए रवाना हुआ। उसे गोआ में पुर्तगाल का वायसराय नियुक्त किया गया। इस तरह सन् 1524 तक उसके जीवन की महानतम अभिलाषाएँ पूरी हो चुकी थीं।

उसी वर्ष 25 दिसंबर को कोचीन में उसकी मृत्यु हो गई। उस समय उसकी उम्र 65 वर्ष की थी। 1538 में उसके पार्थिव अवशेष पुर्तगाल ले जाए गए। वहाँ विदीग्वेरा में उन्हें सुरक्षित रख दिया गया। 1880 से वे बेलम के चर्च में रखे हुए हैं।



विदीग्वेरा का चर्च

पुर्तगाल यूरोप की पहली साम्राज्यवादी सत्ता थी जिसने भारत के एक हिस्से पर अपना अधिकार जमाया। बाद में उसकी देखा देखी यूरोप की

अन्य सत्ताएँ और व्यापारी यहाँ आए। यहाँ जहाँ-जहाँ उनका बस चला उन्होंने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। सन् 1600 में अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिए आए। लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने देखा कि यहाँ के शासक एक-दूसरे से लड़ते रहते थे। उनमें से अधिकतर विलासी जीवन बिताते थे। वे न तो अपने शासन को ठीक से चलाते थे और न ही अपनी सैनिक शक्ति को सबल बनाने का प्रयत्न करते थे। पुर्तगालियों की विजय के बाद भी उन्होंने अपनी शक्ति को मजबूत बनाने का कोई कारगर उपाय नहीं किया। उनकी कमजोरी का लाभ उठाकर अंग्रेजो ने भारत पर अपना कब्जा कर लिया। उन्होंने लगभग 200 वर्षों तक यहाँ राज किया। सन् 1947 में भारतवासियों ने उन्हें भारत से भगा दिया। लेकिन पुर्तगाली फिर भी जमे रहे। वे सबसे पहले भारत आए थे और सबसे बाद में यहाँ से गए। उनके चले जाने के बाद भी वास्को द गामा की स्मृति भारत से नहीं गई। अभी भी भारतीय रेल के एक स्टेशन का नाम उसी के नाम पर है शायद इस आशा में कि अब स्वतंत्र भारत और पुर्तगाल के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो सकेंगे और पुरानी दुःखद स्मृतियाँ भुलाई जा सकेंगी।